सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 44, नई दिल्ली । गुरुवार, 24 अप्रैल 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अगर भाग्य पर भरोसा है तो जो तकदीर में लिखा है वही पाओगे, और अगर खुद पर भरोसा है तो जो चाहोगे वही पाओगे।

03 सरकार मृतकों के परिजनों को जीवन फिर शुरू करने में हर सम्भव साथ देगी -
06 कक्षा 10 वीं के बाद आईएएस अधिकारी (युपीएसई) कैसे बनें
08 7 करोड़ की लागत से बन रहे तटीय सड़क निर्माण की गुणवत्ता घटिया बताई

आप भी "परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" के संचालन मंडल में हिस्सेदार बन सकते हैं

जनता को दुनिया में हो रही गतिविधियों के सच से अवगत करवाने और उसके तथ्यों को सही ढंग से पहुंचाने का मुख्य दायित्व संचार माध्यम का बनता है। **समाचार पत्र /टेलीविजन/इंटरनेट नेटवर्क प्रकाशन जो सरकार या कॉर्पोरेट हितों के प्रभाव से मुक्त हों।** किसी भी संचार माध्यम को स्वतंत्र रूप से सही/ सच और बिना तथ्यों को बदले बात पहुंचाने के लिए आवश्यकता है जनता/ संस्थाओ / सम्पन्न व्यवसायिक सहयोगियों / निर्माताओ एवम् जनता के सहयोग की जिससे संचार माध्यम के संचालक को सरकार और कॉरपोरेट के दबाव में ना आना पड़ें और वह बेखौफ/ निडर होकर आप तक सच पहुंचा सके। "**परिवहन विशेष**" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र संचालक और सम्पूर्ण टीम जुड़े सहयोगियों के प्रति नतमस्तक हैं, जिनके सहयोग के कारण हम अपने समाचार पत्र को छापने और चलाए रखने में कामयाब रहे और आपको सच सही तथ्यों और सबूतों के साथ प्रस्तुत करने में सफल रहे। संचालक मंडल "**परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र**" आप सभी का दिल से आभार प्रकट करता है जिन्होंने अपनी क्षमता के अनुसार किसी भी रूप में हमें अपना सहयोग प्रदान किया जिस के बल पर हम स्वतंत्रता से संचार माध्यम को चलाने मे कामयाब रहे।

आपको सूचित करते हुए हमें प्रसन्नता हो रही है की आप सभी के सहयोग और समाचार पत्र के प्रति विश्वसनीयता के कारण हम बिना किसी बंदिश और दबाव के सच छापने और आप तक सच पहुंचाने में सक्षम रहे और सच को बेखौफ सबके सामने प्रस्तुत कर आपकी और जनता की आवाज बन सके। आर .एन .आई . भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त करने के बाद आपके बीच सच को निष्पक्ष रूप से छापते/ पहुंचाते हुए हमने 2 साल पूरे कर लिए हैं। हम स्वतंत्र संचार माध्यम के 2 साल पूरे होने की खुशी को जो सिर्फ आपके द्वारा प्रदान सहयोग से संभव हुआ। आप सभी से इस खुशी को मिलकर बाटने के लिए हम अपना दूसरा वार्षिक सम्मान समारोह 17 मई 2025 को कंस्टीट्यूशन क्लब में आयोजित करने जा रहे हैं।

हम आप से पुन : अनुरोध करते हैं की "**परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र**" के द्वितीय वार्षिक सम्मान समारोह के आयोजन में आप
1. पार्टनरशिप
2. स्पॉन्सरशिप और
3. एडवरटाइजमेंट (विज्ञापन)
के रूप में स्वयं, जानकार संस्थाओ / सम्पन्न व्यवसायिक सहयोगियों / निर्माताओं एवं अन्य सभी से करवा कर हमें इसी प्रकार स्वतंत्रता से स्वतंत्र, निष्पक्ष संचार माध्यम को चलाने की शक्ति प्रदान करने और इस सम्मान समारोह में हिस्सेदार बन सकते हैं।

विज्ञापन एवं स्पॉन्सरशिप के प्रति आपके द्वारा प्रदान की जाने वाली राशि आप नीचे दिए गए बैंक खाते में सीधे जमा कर हमें ईमेल एवं व्हाट्सएप के माध्यम से रसीद भेज सकते हैं।

Transport News Vishesh
208602000008973
IOBA0002086
इसके अतिरिक्त आप 9811732095 पर phonepay के माध्यम से भी राशि जमा कर सकते हैं।

सूचना **विज्ञापन और स्पॉन्सरशिप के लिए आपके द्वारा प्रदान की गई राशि के प्रति हम आपको आनलाइन जीएसटी रसीद जारी करेंगे।**

संजय बाटला (मुख्य संपादक)

अभी और करना होगा दिल्ली में नई इलेक्ट्रिक बसों का इंतजार, इस कारण से टली लॉन्चिंग

हम जल्द ही इन बसों को सड़कों पर उतारेंगे : परिवहन मंत्री डॉ. पंकज कुमार सिंह

संजय बाटला

दिल्लीवासियों को नई इलेक्ट्रिक बसों के लिए अभी और इंतजार करना होगा। पोप फ्रांसिस के निधन पर राष्ट्रीय शोक के कारण मंगलवार को होने वाला 330 बसों का लोकार्पण कार्यक्रम स्थगित कर दिया गया है। इनमें 150 मिनी इलेक्ट्रिक बसें भी शामिल हैं, जिन्हें अब 'DEVI' योजना के तहत चलाया जाएगा।

> सरकार का लक्ष्य धीरे-धीरे सभी बसों को इलेक्ट्रिक बसों में बदलना है। यह योजना अभी शुरुआती चरण में है, लेकिन हर महीने या 15 दिन में अधिक से अधिक बसों को इलेक्ट्रिक बसों में बदला जाएगा। जैसे-जैसे CNG बसों का समय खत्म होगा, इलेक्ट्रिक बसें उनकी जगह लेती जाएंगी।

नई दिल्ली: लंबे समय से नई इलेक्ट्रिक बसों के सड़कों पर उतरने की बाट जोह रही दिल्ली की जनता का इंतजार और लंबा खिंच गया है। मंगलवार की सुबह कुशक नाला डिपो से 330 नई इलेक्ट्रिक बसें लॉन्च होने वाली थीं, लेकिन पोप फ्रांसिस के निधन के बाद भारत सरकार द्वारा की गई राष्ट्रीय शोक की घोषणा को देखते हुए दिल्ली सरकार ने इस कार्यक्रम समेत अपने सभी कार्यक्रमों को अगले आदेश तक स्थगित कर दिया। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने खुद बसों की लॉन्चिंग स्थगित किए जाने की जानकारी सोशल मीडिया पर साझा करते हुए कहा कि नई तारीख की घोषणा जल्द की जाएगी।

जिन 330 बसों को सड़कों पर उतारने की तैयारी थी, उनमें 9 मीटर आकार वाली 150 मिनी इलेक्ट्रिक बसें भी शामिल थीं, जिन्हें पहले मोहल्ला बस योजना के तहत दिल्ली की सड़कों पर चलाने के लिए खरीदा गया था। मगर अब बीजेपी की सरकार इन बसों को एक नए नाम और नई योजना DEVI (दिल्ली इलेक्ट्रिक वीकल इंटरचेंज) के तहत सड़कों पर उतारने वाली थी। ये बसें 6 महीने से भी अधिक समय से डिपो में खड़ी हुई हैं। इनके अलावा DTC की 100 और क्लस्टर स्कीम की 80 फुल साइज बसों को भी लॉन्च किया जाना था।

दिल्ली सरकार के परिवहन मंत्री डॉ. पंकज कुमार सिंह ने कहा कि हम जल्द ही इन बसों को सड़कों पर उतारेंगे। ये इलेक्ट्रिक बसें दिल्लीवासियों के लिए कई तरह से लाभकारी होंगी। मिनी इलेक्ट्रिक बसें उन इलाकों में भी पहुंचेंगी, जहां अभी बस सेवाएं उपलब्ध नहीं हैं। इससे कनेक्टिविटी बढ़ेगी। साथ ही प्रदूषण कम करने में भी ये बसें अहम भूमिका निभाएंगी। उन्होंने बताया कि वाहनों से होने वाला प्रदूषण एक बड़ी समस्या है और इलेक्ट्रिक बसें इस समस्या को कम करने में मदद करेंगी। सरकार का लक्ष्य धीरे-धीरे सभी बसों को इलेक्ट्रिक बसों में बदलना है। यह योजना अभी शुरुआती चरण में है, लेकिन हर महीने या 15 दिन में अधिक से अधिक बसों को इलेक्ट्रिक बसों में बदला जाएगा। जैसे-जैसे CNG बसों का समय खत्म होगा, इलेक्ट्रिक बसें उनकी जगह लेती जाएंगी।

एएनपीआर टोल कलेक्शन सिस्टम वाला पहला हाईवे होगा एनसीआर का यह एक्सप्रेसवे, बिना रुके अपने आप कटेगा टोल

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पूरे भारत में टोल संग्रहण के लिए एक मॉडल बनने के लिए तैयार है।। यहां जो नई तकनीक लागू की जा रही है, उसे जल्द ही देश के बाकी एक्सप्रेसवे और हाईवे पर भी अपनाया जाएगा।

नई दिल्ली। दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पूरे भारत में टोल संग्रहण के लिए एक मॉडल बनने के लिए तैयार है।। यहां जो नई तकनीक लागू की जा रही है, उसे जल्द ही देश के बाकी एक्सप्रेसवे और हाईवे पर भी अपनाया जाएगा। इस सिस्टम के जरिए अब गाड़ियां टोल प्लाजा पर बिना रुके सीधे निकल सकेंगी और टोल अपने आप कट जाएगा।

क्या है ANPR तकनीक ?

इस एक्सप्रेसवे पर ऑटोमैटिक नंबर प्लेट रिकग्निशन (ANPR) टेक्नोलॉजी लगाई गई है। हाईवे के एंट्री और एग्जिट प्वाइंट्स पर कैमरे लगाए गए हैं, जो गाड़ियों की नंबर प्लेट को स्कैन करते हैं। क्योंकि गाड़ियों के फास्टैग अकाउंट पहले से नंबर प्लेट से लिंक होते हैं, इसलिए जैसे ही गाड़ी गुजरेगी, टोल अपने आप कट जाएगा। ड्राइवर को अब रुकने या स्पीड धीमी करने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

जल्द ही सभी हाईवे पर लागू होगा ये सिस्टम

दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पर इस पायलट प्रोजेक्ट के सफल होने के बाद, सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय ने एलान किया है कि अब देश के सभी एक्सप्रेसवे और नेशनल हाईवे पर भी ऐसा ही सिस्टम लगाया जाएगा। मंत्रालय की कोशिश है कि टोल प्लाजा पर लगने वाली लंबी कतारों को खत्म किया जाए और यात्रियों का समय बचे।

जीपीएस से नहीं, सिर्फ नंबर प्लेट स्कैन से वसूला जाएगा टोल

हालांकि शुरुआत में इस नए सिस्टम के पूरी तरह सेट होने में थोड़ा वक्त लग सकता है, लेकिन मंत्रालय ने साफ कर दिया है कि टोल संग्रह जीपीएस टेक्नोलॉजी के जरिए नहीं होगा। जीपीएस पर आधारित सिस्टम में सुरक्षा और भरोसे को लेकर कई सवाल उठे थे। एक विशेषज्ञ समिति ने भी हाल ही में जीपीएस टोल कलेक्शन से जुड़ी संभावित समस्याओं के बारे में सवाल उठाए। जिसके बाद मंत्रालय ने वैकल्पिक समाधान तलाशने का फैसला किया।

टोल प्लाजा पर भीड़ होगी कम

कुल मिलाकर, इस नई तकनीक का मकसद हाईवे पर सफर को और आसान और तेज बनाना है। टोल प्लाजा पर जो भीड़ और जाम लगते हैं, वो अब काफी हद तक खत्म हो जाएंगे। दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पर इस सिस्टम के सफल ट्रायल के बाद उम्मीद है कि जल्द ही पूरे देश में ऐसा ही फ्री-फ्लो टोल कलेक्शन सिस्टम देखने को मिलेगा।

दिल्ली की नई इलेक्ट्रिक बसों में लगेंगे APC कैमरे, टिकट में हो रही घपलेबाजी पर लगेगी रोक

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली की बसों के संचालन में कई समय से घाटा हो रहा है, जिसके बाद टिकटों की घपलेबाजी को रोकने के लिए सरकार की तरफ से नई बसों में खास इंतजाम किए जा रहे हैं. दरअसल, दिल्ली की नई बसों में APC कैमरे लगाए जा रहे हैं, जिससे टिकटों में हो रही घपलेबाजी को रोका जा सके।

नई दिल्ली। दिल्ली में नई सरकार बनने के बाद दिल्ली में कई तरह के सुधार किए जा रहे हैं. इसमें परिवहन को सुधारने और बेहतर बनाने के लिए दिल्ली सरकार की तरफ से नई इलेक्ट्रिक बसें शुरू की जा रही हैं. दिल्ली की बसों के संचालन में कई समय से घाटा हो रहा है, जिसके बाद टिकटों की घपलेबाजी को रोकने के लिए सरकार की तरफ से नई बसों में खास इंतजाम किए जा रहे हैं. दरअसल, दिल्ली की नई बसों में APC कैमरे लगाए जा रहे हैं, जिससे टिकटों में हो रही घपलेबाजी को रोका जा सके. आइए जानते हैं APC कैमरे कैसे काम करते हैं.

दिल्ली की नई बसों में APC कैमरे

ऑटोमेटिक पैसेंजर काउंटिंग यानी APC कैमरे दिल्ली की बसों के गेटों पर लगाए जाएंगे. यह कैमरे बसों में यात्रा करने वाली यात्रियों की गिनती करेंगे और डेटा तैयार करेंगे. यात्रियों की संख्या का यह रिकॉर्ड सर्वर को भेजा जाएगा. इस डेटा को बस कंडक्टर द्वारा दिए गए टिकट के डेटा से मिलाया जाएगा, जिससे टिकटों की घपलेबाजी को रोका जा सके.

APC कैमरों को लगाने वाले कंपनी के अधिकारियों के अनुसार, सभी कैमरों को बसों का संचालन करने वाली संस्था डिम्ट्स और डीटीसी के सर्वर से जोड़ा जाएगा. इतना ही नहीं APC कैमरे का रिकॉर्ड बस में लगे डिवाइस में भी सेव हो जाएगा लेकिन यह डेटा केवल निर्धारित समय के लिए ही सेव किया जाएगा. वहीं सर्वर के पास डेटा, तब तक रहेगा जब तक कंपनी इसे डिलीट नहीं करती है.

फुटओवर ब्रिज से जुड़ेगा नया व पुराना मेट्रो स्टेशन; मिलेगी खास सुविधा

दिल्ली मेट्रो के फेज-4 में जनकपुरी पश्चिम-आरके आश्रम कॉरिडोर पर पीतमपुरा में एक नया मेट्रो स्टेशन बन रहा है। यह स्टेशन रेड लाइन के मौजूदा स्टेशन से 180 मीटर लंबे एफओबी (फुट ओवरब्रिज) से जुड़ेगा। इससे यात्रियों को इंटरचेंज की सुविधा मिलेगी। एफओबी में पांच पिलर होंगे। यह कॉरिडोर मजेंटा लाइन का विस्तार है।

नई दिल्ली। दिल्ली में फेज-4 में निर्माणाधीन जनकपुरी पश्चिम-आरके आश्रम एलिवेटेड कॉरिडोर ऊंचाई के मामले में कुछ खास होगा। अब दिल्ली मेट्रो रेल निगम (डीएमआरसी) ने इस कॉरिडोर पर पीतमपुरा मधुबन चौक के पास भारी भरकम स्टील के स्पैन से 50 मीटर लंबे एलिवेटेड कॉरिडोर का निर्माण पूरा कर लिया है, जो दिल्ली मेट्रो का चौथा और निर्माणाधीन जनकपुरी पश्चिम-आरके आश्रम कॉरिडोर का तीसरा सबसे ऊंचा प्वाइंट है।

इस कॉरिडोर पर पीतमपुरा में नया स्टेशन भी बनाया जा रहा है, जो मौजूदा रेड लाइन के स्टेशन के साथ इंटरचेंज स्टेशन होगा। ये दोनों स्टेशन 180 मीटर लंबे फुट ओवरब्रिज (एफओबी) से जुड़ेंगे।

एफओबी में पांच पिलर होंगे

पीतमपुरा में नया स्टेशन मौजूदा स्टेशन से दूसरी तरफ (रोहिणी की ओर) बनाया जा रहा है। जल्द ही एफओबी का निर्माण भी शुरू होगा। डीएमआरसी के अनुसार, यह एफओबी रेड लाइन के वर्तमान स्टेशन के प्लेटफार्म के तल और नए स्टेशन के कानकोर्स से जुड़ा होगा। नए स्टेशन का कानकोर्स सतह से 16.7 मीटर ऊंचा होगा। एफओबी में पांच पिलर होंगे।

मजेंटा लाइन का यह नया कॉरिडोर

निर्माणाधीन जनकपुरी पश्चिम-आरके आश्रम कॉरिडोर 27.452 किमी लंबा होगी और यह मजेंटा लाइन (बोटेनिकल गार्डन-जनकपुरी पश्चिम) की विस्तार परियोजना है। इसलिए मजेंटा लाइन का यह नया कॉरिडोर पीतमपुरा में वर्तमान रेड लाइन (रिठाला-शहीद स्थल न्यू बस अड्डा गाजियाबाद) के ऊपर से गुजर रहा है। इसे जमीन से 22.54 मीटर की ऊंचाई पर 340 मीट्रिक टन वजन के स्टील स्पैन से बनाया गया। इस स्टील स्पैन की चौड़ाई 12 मीटर है। इसे तीन हिस्सों में क्रेन की मदद से रेड लाइन पर मेट्रो का परिचालन बंद किए बगैर बनाया गया।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

यक्ष किसे कहते हैं?

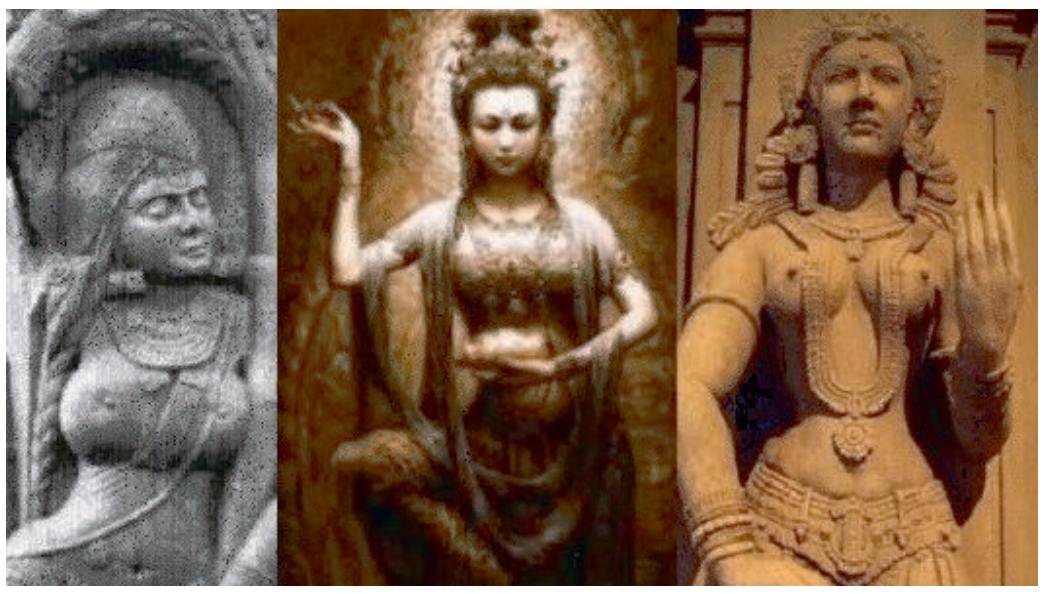

यक्ष देवताओ की तरह ही होते है। देवताओ के बाद जो शक्तिशाली योनि होती है वो होते है। यक्ष। यक्षो का भी देवो की तरह ही एक अलग से पूरा लोक बसा हुया है वहां भी सभी सुविधाये मौजूद है यक्षी के जो इस समय राजा है वो है यक्षराज श्री कुबेर जी महाराज जिने धन के देवता के रूप मे माना और जाना जाता है। कुबेर जी स्वंय यक्ष ही है देवता नहीं है। इस समस्त संसार का धन का हिसाब किताब कुबेर जी रखते है किसको कब देना है कितना देना है वो सब कुबेर जी ही करते है बिना इनकी नजरो मे आये, बिना इनकी कृपा के कोई भी व्यक्ति कभी भी करोड पति नही बन सकता है। हमारे काम के दो हिस्से होते है। एक काम का ना चलना दूसरा काम का चलना मगर पैसा नही आना तो यदि आपका पैसा फंसता है तो वो लक्ष्मी जी के कारण रूकता अटकता है तब आप लक्ष्मी जी पूजा पाठ करो। आपका पैसा अटकना बंद हो जायेगा मगर आपका काम ही नहीं चल रहा तो वो कुबेर जी कारण रूकता अटकता है तब आप कुबेर जी की पूजा अर्चना करो आपका काम रूकना अटकना बन्द हो जायेगा देवताओ के धन का हिसाब भी कुबेर जी ही रखते है इन्हें आप विश्व बैंक समझ सकते है। जैसे यहां सभी देष अपना अपना पैसा विश्व बैंक मे रखते है और देशों का हिसाब किताब विश्व बैंको में होता है। जरूरत पडती है तो विश्व बैंक से देश कर्जा लेकर अपना काम चलाता है। उसी तरह से कुबेर जी का रहता है, यक्ष लोक में यक्ष रहते हैं जिन्हें यदि कोई मनुष्य साधना के द्वारा सिद्ध करता है तो यक्ष उस साधक की मदद करते हैं। यक्षो का शरीर सुन्दर, गठीला, कसा हुया पहलवानो की तरह लम्बा चौडा होता है। इनके गले मे हार, हाथो मे बाजूबंद होते है। जो सोने के होते है। यक्ष को आप पिता, भाई, दोस्त, बेटा, दास किसी भी रूप मे सिद्ध कर सकते है सभी रूपो मे यक्ष साधक को विपुल धन सम्पदा प्रदान करते है कई यक्ष तो अपने साधक को रातो रात करोड पति बना देते है ये ज्यादातर जमीन से धन निकलावाते है क्योकि जमीन के गढे हुये धन पर यक्षो का ही अधिकार होता है। यक्ष पानी के भी अधिकारिक देव माने जाते हैं इनकी साधना किसी पानी के किनारे पर बैठकर की जाये तो जल्दी सफल होती है। यक्ष पृथ्वी पर जलाषय के निकट, किसी शिवमन्दिर मे, बरगद या पीपल के पेड पर पाये जाते यही इनके निवास स्थान होते है। चूकिं यक्ष देवताओ के बाद दूसरे नम्बर पर आते है तो इनसे भी किसी तरह का डर और भय नहीं होता साधना के समय ये साधकको कुछ डरावनी अनुबती करवा सकते है लेकिन इनके सिद्ध करने के बाद कोई खतरा नही होता यक्ष सिद्ध करके लाभ ही लाभ है। यक्ष बहुत तरह के चमत्कार कर सकते है वो चमत्कार लोगो को दिखा सकते है जमीन के धन के कामो को यक्ष बहुत बडिया करते है यक्ष सट्टे, लाटरी से भी धन दिलवा देते है लेकिन वो कुछ खास यक्ष होते है। सभी यक्ष ये नही करते यक्ष कई प्रकार के होते है। कुछ सामान्य सात्विक यक्ष होते है। जो किसी तरह का डर नही पेदा करते कुछ यक्ष तेज उग्र तामसिक होते है। वही यक्ष साधना मे डर बनाते है। सात्विक साधना मे कोई डर नही होता इनकी साधना आप बिना सुरक्षा घेरे के कर सकते है। मगर तामसिक साधना करने पर हमेशा सुरक्षा घेरे को लगाकर ही साधना करनी चाहिये। यक्ष भी मनुष्यों की सभी तरह के कार्यों में मदद करते हैं। हर यक्ष अपने काम मे उस्ताद होते हैं। यक्ष वैसे तो अकारण किसी मनुष्य को तंग नही करते लेकिन यदि इन्हें छेडा जाय तो ये परेशान करने लगते है पीडित व्यक्ति पाक साफ रहना सुरू कर देता है सुबह नहाता है। भगवान का भजन करता है सारे दिन शांत रहता है शरीर मे बल बहुत बढ जाता है। पानी की केयर करने लगता है या किसी जलाशय, तालाब, नदी के पास जाता है। या जाने की जिद करता है तो समझ लेना चाहिये कि इसे यक्ष लगा हुया यक्ष धन हानि कम करते है और इनसे जन हानि भी नही होती बस पीडित परेशान रहता है संसारिक कार्यो मे रूचि नही लेता बस यही #परेशानी होती है यक्ष का उतारा नदी तालाब मे किया है गलती छमा मांगने से ये पीडित को छोडकर चले जाते हैं सपने मे पहलवान की तरह का व्यक्तिम दिखता है और साथ मे उपरोक्त लक्षण हो तो समझ ले कि यक्ष लगा हुया है।

राजनीति दो शब्दों का समूह है राज+नीति। राज यानि शासन को चलाने की उचित नीति/कला।

उचित स्थान पर, उचित समय पर, उचित कार्य करने की कला को नीति कहते हैं। नीति विशेष के द्वारा शासन करना या विशेष उद्देश्य को प्राप्त करना राजनीति कहलाती है। दूसरे शब्दों में कहें तो जनता के लिए सामाजिक और आर्थिक स्तर को ऊंचा करना राजनीति है। शासन की बागडोर मिलने पर, उपलब्ध संसाधनों को उन्नत बनाना और उसका समुचित उपयोग करके जनसाधारण का उन्नयन करना, कुशल राजनीति कहलाता है। इसके विपरीत, उपलब्ध साधनों का अपने और अपने संबंधियों के लाभ हेतु उपयोग करना, नागरिकों का शोषण करना माना जाता है। कुशल शासक केवल वही हो सकता है जो जनसाधारण को ही अपना परिवार समझें और उनके उचित उन्नयन हेतु नीति-निर्धारण करे। अन्यथा तो वह व्यावसायिक/बिजनेसमैन ही बनकर राजकोष को लूट ले जायेगा। इसलिए लोकतंत्र में जनसाधारण को यह मौलिक अधिकार दिया गया है कि हम जातिवाद/क्षेत्रवाद/भाषावाद/रिश्तेदारी को भुलाकर, अपना कीमती मत/वोट देकर, उपयुक्त कुशल राजनेता को चुनें, न कि शोषक को।

खीरे के लाभ जानें

1 खीरा का परिचय
2 खीरा क्या है
3 अनेक भाषाओं में खीरा के नाम
4 खीरा के फायदे
4.1 आंखों की बीमारी में खीरे से फायदा
4.2 गले के रोग में फायदेमंद खीरा का उपयोग
4.3 पेशाब की समस्या का इलाज खीरा
4.4 खीरा के सेवन से पथरी की बीमारी का उपचार
4.5 मुँहासे दूर करता है खीरा
4.6 घाव सुखाने और सूजन के लिए करें खीरा का प्रयोग
4.7 फ्लू में लाभदायक खीरा
4.8 नींद ना आने की परेशानी में करें खीरे का प्रयोग
5 खीरा के सेवन की मात्रा
6 खीरा के सेवन का तरीका
7 खीरा से नुकसान
8 खीरा कहां पाया या उगाया जाता है

खीरा का परिचय

आपने खीरा खाया होगा। सभी लोग खीरा खाते हैं। प्रायः खीरा का सेवन सलाद के रूप में किया जाता है लेकिन इसके अलावा भी खीरा का इस्तेमाल कई तरह के व्यंजन बनाने के लिए किया जाता है। आमतौर पर लोग यह जानते हैं कि खीरा पेट के लिए ठंडा होता है और इससे शरीर को फायदा होता है। लोग यह नहीं जानते होंगे कि कई बीमारियों को ठीक करने के लिए एक औषधि के रूप में भी खीरा का उपयोग किया जाता है।

खीरा पचने में भारी, पित्त को शांत करने वाला, कफ और वात को बढ़ाने वाला, मूत्र रोग में फायदेमंद होता है। यह मोटापा कम करने और पीलिया रोग को ठीक करने का काम आता है। पथरी को गलाता है। उलटी को रोकता है। इसके बीज समान गुण वाले ही होते हैं।

खीरा क्या है

आकार तथा रंग-रूप के आधार पर खीरा की कई प्रजातियां होती हैं। इसकी फैलने वाली और पेड़ों पर चढ़ने वाली लता होती है। खीरे का ही एक और प्रकार अफ्रीका मूल का है जिसका नाम है बालम खीरा जो दिखने में और गुणों भी खीरे के जैसा ही होता है।

अनेक भाषाओं में खीरा के नाम

खीरा का लैटिन नाम कुकुमिस सैटाइवस (Cucumis sativus Linn., Syn-Cucumis muricatus Willd.) है और यह कुकुरबिटेसी (Cucurbitaceae) का है। खीरा को देश और विदेश में इन नामों से भी जाना जाता है, जो ये हैः-

इंग्लिश – घिरकिन (Gherkin), Cucumber (क्यूकॅम्बर)

मराठी – काकड़ी (Kaakadi)

हिंदी – खीरा

सँस्कृत – त्रपुष, कण्टकुल, सुधावास, सुशीतल

ओड़िया – ककनाई (Kaknai)

Konkani – कान्करी(Kankri)

कन्नड़ – सन्तेकाई (Santekyi), सन्तेक (Santek)

गुजराती – काकरी (Kakri), कंकडी (Kankdi)

तमिल – पिपिंगके (Pipingkay), वेलारीकायी (Vellarikkai)

तेलगु – डोसाकाय(Dosakaya)

बंगाली – खीरा (Kheera), ससा (Sasa)

नेपाली – काक्रो (Kakro)

पंजाबी – खीयार(Khiyar), खीरा (Kheera);, खीरा (Khira)

मलयालम – वेल्लारी (Vellari)

अरबिक – खेयार (Kheyaar)

पर्सियन – शियारे खुर्द (Shiyarekhurd)

खीरा के फायदे

खीरा का औषधीय प्रयोग, प्रयोग के तरीके और विधियां ये हैः-

आंखों की बीमारी में खीरे से फायदा

खीरे को पीसकर आंखों के बाहर चारों तरफ लेप लगाने से आंखों के बाहर होने वाले काले धब्बे मिटते हैं।

खीरे के टुकड़ों को भी आँख पर रखने से आँखों को ठंडक मिलती है।

गले के रोग में फायदेमंद खीरा का उपयोग

खीरे के पत्तों का काढ़ा बनायें। 10-20 मि.ली. काढ़े में आधा ग्राम जीरा चूर्ण मिलाकर सेवन करने से गले के रोगों में लाभ होता है।

पेशाब की समस्या का इलाज खीरा

पेशाब करने में तकलीफ होने पर रोगी भोजन में खीरे का सेवन करें। इससे लाभ होता है।

खीरे के बीज का 2-4 ग्राम काढ़े को दूध के साथ नियमित पीने से कुछ दिनों में पेशाब की जलन और पेशाब में चीनी आने में लाभ होता है।

तिल तथा खीरे में बीजों को समान मात्रा में लेकर दूध के साथ पीस लें। 2-4 ग्राम काढ़े में घी मिलाकर पीने से पेशाब संबंधी परेशानी ठीक होती है। इससे रुक-रुक कर पेशाब आने की समस्या ठीक होती है।

खीरे का तेल पेशाब करने संबंधी विकार में लाभकारी होता है।

यदि पेशाब न बन रहा हो तो खीरे के बीज के 2-4 ग्राम काढ़े को खट्टी कांजी तथा लवण के साथ मिला लें। इसका सेवन करने से पेशाब बनने लगता है।

खीरे के पत्तों को पीस-छान लें। इसमें मिश्री मिलाकर 10-15 मि.ली. मात्रा में पिलाने से पेशाब खुल कर आता है और मूत्र विकारों में लाभ होता है।

खीरा के सेवन से पथरी की बीमारी का उपचार

खीरे के 2-4 ग्राम बीजों को दही के साथ नियमित सेवन करने से पथरी घुल कर निकल जाती है।

मुँहासे दूर करता है खीरा

खीरे को पीसकर पूरे चेहरे, आँख तथा गले पर लगाएं। इसे लगभग 30 मिनट तक इसी स्थिति में छोड़ दें। इससे यह मुँहासों तथा रुखी त्वचा की परेशानी ठीक होती है।

घाव सुखाने और सूजन के लिए करें खीरा का प्रयोग

खीरा को पीसकर उसमें थोड़ा नमक मिलाकर घाव की सूजन पर ऊपर से लेप करने से सूजन को कम करता है। इसे

अगर आप इसे मवाद वाले स्थान पर लगाएंगे तो यह निश्चित स्थान पर मवाद को जमा करने में सहायता करता है।

फ्लू में लाभदायक खीरा

फ्लू होने पर यदि वायु एवं कफ बहुत बढ़े हुए हों तो खीरा खाकर बाद में मट्ठा पीना चाहिए। मट्ठे में बनाया खीरे का रायता भी ले सकते हैं। इसके साथ ही भांप से स्नान करना चाहिए मतलब पूरे बदल में भांप लगाना चाहिए।

नींद ना आने की परेशानी में करें खीरे का प्रयोग

खीरे के गूदे को पीसकर पैर के तलवों पर मालिश करने से नींद ना आने की परेशानी और आँखों की जलन में लाभ होता है।

खीरा के सेवन की मात्रा

खीरा का औषधीय प्रयोग करने के लिए सेवन चिकित्सक के परामर्शानुसार करें।

खीरा के सेवन का तरीका

खीरा का इस्तेमाल इस तरह से किया जा सकता हैः-

फल

बीज

पत्ते

बीज की तेल

खीरा से नुकसान

खीरा के अधिक प्रयोग से ये नुकसान हो सकता हैः-

गैस यानी वायुविकार

अपच की समस्या

एसिडिटी की परेशानी

खट्टी डकार

इसको ठीक करने के लिए मट्ठा पीना चाहिए।

खीरा की कुछ प्रजातियां कड़वी भी होती हैं। उनका सेवन नहीं करना चाहिए।

खीरा कहां पाया या उगाया जाता है

खीरा भारत में बहुतायत मात्रा में पाया जाता है। उत्तर भारत में नदियों के किनारे इसकी खेती की जाती है। खीरे को कभी भी रात के समय नहीं खाना चाहिए। खीरे को लेकर आपने एक स्थानीय कहावत भी सुनी होगी जो इस प्रकार है, "सुबह को हीरा, दिन में खीरा और रात में पीड़ा"। इसका मतलब है कि सुबह के समय खीरा खाना शरीर के लिए सबसे अधिक लाभकारी होता है, दिन में इसका सेवन करने के सामान्य फायदे हैं, जबकि रात में इसका सेवन हानिकारक और पीड़ादायी है।

दूध और बादाम को एक साथ लेने से क्या होता है?

सामग्री :1 लीटर देसी गाय का दूध,25 भीगे हुए बादाम,100 ग्राम देसी खांड या शक्कर,1/2 चम्मच इलायची पाउडर,केसर के लच्छे ।बनाने की विधि :सबसे पहले सोने से पूर्व रात्रि में बादाम भिगो दें। सुबह भिगोए हुए बादाम का छिलका निकाल कर मिक्सी में महीन पीस लें। अब 1 कटोरी में थोड़ा सा दूध लेकर केसर को भिगो दें। दूध को अच्छी तरह उबालें और फिर उसमें बादाम का पेस्ट मिला दें। अब दूध को धीरे धीरे निरंतर चलाते रहें ताकि वो तले पर चिपके नहीं। इस तरह बादामयुक्त दूध को 20 से 25 मिनट तक उबालने दें,फिर उसमें शकर डालकर थोडी देर तक और पकाएं। अब केसर को घोंट लें तथा उबलते दूध में मिलाएं, साथ ही इलायची डाल दें। जब दूध अच्छी तरह गाढ़ा हो जाए तो गरमा गरम दूध गिलास में भरें ।जानते हैं दूध और बादाम को एक साथ लेने से क्या फायदा होगा. ?(1). यह दूध शरीर के साथ-साथ दिमाग के लिए भी फायदेमंद है।(2). यह दूध प्रचुर मात्रा में आयरन और कैल्शियम वाला होने से आपके शरीर के लिए बेहद फायदेमंद है।(3). दूध बादाम का सेवन आपको स्ट्रेस, डिप्रेशन से बचाएगा तथा दिमागी क्षमता में भी बढ़ोतरी करेगा।(4). इस दूध में मौजूद कई पोषक तत्व, जैसे कैल्शियम, ओमेगा-3, प्रोटीन, फाइबर, मैंगनीज, थायमिन आदि आपको एकसाथ प्राप्त होंगे, जो शरीर के लिए लाभदायी होते हैं।(5). सर्दी में होने वाली कब्ज की समस्या के लिए दूध बादाम पीना एक बढ़िया उपाय है, इससे पाचन तंत्र बेहतर कार्य करता है।(6). बादाम का दूध ब्लड प्रेशर रोगियों के एक अच्छा विकल्प है, क्योंकि इसमें मौजूद पोटेशियम ब्लडप्रेशर कंट्रोन करने में मददगार है।

वरूथिनी एकादशी व्रत आज

एकादशी तिथि पर भगवान विष्णु और मां लक्ष्मी की विधिपूर्वक पूजा-अर्चन करने का विधान है। साथ ही प्रभु की कृपा प्राप्त करने के लिए व्रत भी किया जाता जाता है। वैदिक पंचांग के अनुसार, वैशाख माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि पर वरूथिनी एकादशी व्रत किया जाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार, इस व्रत को करने से सुख-समृद्धि में वृद्धि होती है और जीवन में खुशियों का आगमन होता है।

वरूथिनी एकादशी की तिथि और शुभ मुहूर्त

वैदिक पंचांग के अनुसार, वैशाख माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि 23 अप्रैल को शाम 04 बजकर 43 मिनट से शुरू होगी और अगले दिन यानी 24 अप्रैल को दोपहर 02 बजकर 32 मिनट पर तिथि खत्म होगी। सनातन धर्म में सूर्योदय तिथि का अधिक महत्व है। इस प्रकार से 24 अप्रैल को वरूथिनी एकादशी मनाई जाएगी।

वरूथिनी एकादशी का पारण टाइम

एकादशी व्रत का पारण द्वादशी तिथि पर किया जाता है। वरूथिनी एकादशी का व्रत का पारण 25 अप्रैल को किया जाएगा। इस दिन व्रत पारण का टाइम सुबह 05 बजकर 46 मिनट से लेकर सुबह 08 बजकर 23 मिनट तक है। व्रत का पारण करने के बाद विशेष चीजों का दान भी जरूर करना चाहिए। धार्मिक मान्यता के अनुसार, द्वादशी तिथि दान करने से एकादशी व्रत का पूरा फल मिलता है।

वरूथिनी एकादशी की पूजा विधि

इस दिन सुबह जल्दी उठकर स्नान करें।

सूर्य देव को अर्घ्य दें।

एक चौकी पर साफ कपड़ा बिछाकर भगवान विष्णु और मां लक्ष्मी की मूर्ति को स्थापित करें।

अब गंगाजल व पंचामृत से अभिषेक करें।

तिलक लगाएं और पीले फूल अर्पित करें।

देसी घी का दीपक जलाकर आरती करें।

मंत्रों का जप और विष्णु चालीसा का पाठ करें।

एकादशी व्रत कथा का पाठ करें।

फल और मिठाई का चीजों का भोग लगाएं। आखिर में लोगों को प्रसाद बाटें।

वरूथिनी एकादशी शुभ योग इस बार वरूथिनी एकादशी पर ब्रह्म और इन्द्र योग का संयोग बन रहा है साथ ही, शिववास योग भी बन रहा है। इसके अलावा वरूथिनी एकादशी पर शतभिषा और पूर्व भाद्रपद नक्षत्र का संयोग है। माना जाता है इन योगों में भगवान लक्ष्मीनारायण की पूजा करने से सुख और सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

वरूथिनी एकादशी पर राशि अनुसार करें इन मंत्रों का जाप आप इस दिन राशि के अनुसार मंत्रों का जाप कर लेते हैं तो इस व्रत का फल दोगुना मिल सकता है

मेष - ॐ वासुदेवाय स्वाहा
वृषभ - ॐ देवाय स्वाहा
मिथुन - ॐ राधिकेशाय स्वाहा
कर्क - ॐ अजाय स्वाहा
सिंह - ॐ प्रशान्ताय स्वाहा
कन्या - ॐ सुखिने स्वाहा
तुला - ॐ प्रतापिने स्वाहा
वृश्चिक - ॐ यदवे स्वाहा
धनु - ॐ विष्णवे स्वाहा
मकर - ॐ शुभांगाय स्वाहा
कुंभ - ॐ दयालवे स्वाहा
मीन - ॐ गोपाय स्वाहा

गर्मियों में ए.सी का बिल कम करने के 5 आसान और असरदार तरीके

ए.सी की कार्यक्षमता बनाए रखने के लिए उसकी नियमित सर्विस और सफाई बेहद ज़रूरी है। जब AC के फिल्टर या वेंट गंदे हो जाते हैं, तो उसे कमरे को ठंडा करने में ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है, जिससे बिजली की खपत बढ़ जाती है।

गर्मियों के मौसम में तेज़ धूप और उमस से राहत पाने के लिए एयर कंडीशनर (AC) एक ज़रूरी उपकरण बन जाता है। लेकिन जैसे ही AC की ठंडी हवा मिलती है, वैसे ही बढ़ते बिजली बिल का डर भी सताने लगता है। खासतौर पर जब घर में दिनभर AC चलता है तो महीने के अंत में भारी बिल आपकी जेब पर बोझ डाल सकता है। हालांकि कुछ आसान उपाय अपनाकर आप न केवल AC का बेहतर उपयोग कर सकते हैं, बल्कि बिजली के खर्च में भी कमी ला सकते हैं। आइए जानते हैं कैसे।

1. AC का सही टेम्प्रेचर सेट करें: 24°C है सबसे उपयुक्त

बहुत से लोगों को लगता है कि अगर AC को 18°C या 20°C पर चलाया जाए तो कम समय में कमरे को ठंडा किया जा सकता है और बिजली की बचत होगी। लेकिन यह सोच पूरी तरह गलत है। Bureau of Energy Efficiency (BEE) के अनुसार, AC को 24 डिग्री सेल्सियस पर चलाना सबसे अधिक ऊर्जा-कुशल और स्वास्थ्य के लिए भी उपयुक्त माना गया है।

रिसर्च बताती है कि अगर आप AC का तापमान हर 1 डिग्री कम करते हैं, तो बिजली की खपत में लगभग 10 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी होती है। ऐसे में 24°C पर AC चलाकर आप अच्छा खासा बिजली बिल बचा सकते हैं।

2. टाइमर और स्लीप मोड का उपयोग करें: पूरी रात AC चलाना न बनाएं आदत

AC को पूरी रात बिना रुके चलाना न केवल बिजली की खपत बढ़ाता है, बल्कि आपके शरीर पर भी असर डाल सकता है। इसलिए, बेहतर यही है कि आप AC में टाइमर सेट करें या स्लीप मोड का उपयोग करें।

स्लीप मोड में AC धीरे-धीरे तापमान बढ़ाता है, जिससे रातभर एक आरामदायक वातावरण बना रहता है और AC की मोटर कम काम करती है। इससे बिजली की खपत अपने आप कम हो जाती है।

3. रेगुलर सर्विस और फिल्टर की सफाई है ज़रूरी

AC की कार्यक्षमता बनाए रखने के लिए उसकी नियमित सर्विस और सफाई बेहद ज़रूरी है। जब AC के फिल्टर या वेंट गंदे हो जाते हैं, तो उसे कमरे को ठंडा करने में ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है, जिससे बिजली की खपत बढ़ जाती है।

कम से कम हर 3 से 6 महीने में एक बार AC की सर्विस जरूर कराएं। अगर आपके पास समय नहीं है, तो खुद भी फिल्टर निकालकर साफ कर सकते हैं। यह छोटा सा प्रयास बिजली के बिल में बड़ी राहत दे सकता है।

4. इन्वर्टर टेक्नोलॉजी वाले AC का करें इस्तेमाल

आज के समय में बाजार में दो तरह के AC मिलते हैं – इन्वर्टर AC और नॉन-इन्वर्टर AC। जहां नॉन-इन्वर्टर AC बार-बार ऑन और ऑफ होता है, जिससे बिजली की खपत ज्यादा होती है, वहीं इन्वर्टर AC कमरे के तापमान के अनुसार खुद को एडजस्ट करता है।

इन्वर्टर टेक्नोलॉजी में कंप्रेसर की स्पीड खुद-ब-खुद कंट्रोल होती है, जिससे बिजली की खपत कम होती है। अगर आप नया AC खरीदने की सोच रहे हैं, तो इन्वर्टर AC एक स्मार्ट और लॉन्ग टर्म सेविंग विकल्प हो सकता है।

5. कमरे की सीलिंग और परदों पर भी दें ध्यान

AC की ठंडी हवा को बनाए रखने के लिए जरूरी है कि कमरे से गर्मी अंदर न आने पाए। इसके लिए कमरे की खिड़कियों पर मोटे परदे लगाएं और दरवाज़े ठीक से बंद रखें। यदि संभव हो तो कमरे की छत और दीवारों पर इंसुलेशन का प्रयोग करें।

यह छोटे कदम AC पर पड़ने वाले लोड को कम करते हैं और इसके चलते बिजली की खपत भी घटती है। गर्मी में AC का उपयोग भले ही ज़रूरी हो, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि बिजली का बिल बेहिसाब बढ़े। ऊपर बताए गए कुछ सरल लेकिन प्रभावी उपायों को अपनाकर आप AC की ठंडक का पूरा आनंद ले सकते हैं और साथ ही बिजली के खर्च को भी काफी हद तक नियंत्रित कर सकते हैं। सही टेम्प्रेचर सेटिंग, समय पर सर्विस, स्लीप मोड और इन्वर्टर तकनीक का समझदारी से उपयोग करके आप न केवल अपने घर को ठंडा रख सकते हैं, बल्कि अपने बजट को भी गर्मी में ठंडा बनाए रख सकते हैं।

भारत सरकार इस संकट की घड़ी में मृतकों के नरिजनों के साथ खड़ी है और सरकार मृतकों के परिजनों को जीवन फिर शुरू करने में हर सम्भव साथ देगी :रेखा गुप्ता

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

दिल्ली हवाई अड्डे पर पहलगाम में आतंकवादियों द्वारा मारे गये भारतीयों को भावपूर्ण श्रद्धांजली अर्पित की और उनके उपस्थित परिजनों के प्रति संवेदना प्रकट की।

दिल्ली की मुख्य मंत्री रेखा गुप्ता ने पहलगाम में मृत भारतियों के परिजनों को विश्वास दिलाया की भारत सरकार इस संकट की घड़ी में उनके साथ खड़ी है और सरकार मृतकों के परिजनों का जीवन फिर शुरू करने में हर सम्भव साथ देगी।

नई दिल्ली : जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकवादियों द्वारा 27 भारतीयों की निर्मम हत्या से सारे देश में दुख, शोक एवं रोष का माहौल है। दिल्ली में भी लोगों में भारी रोष है, लोग गमगीन हैं और दिल्ली भाजपा के नेता एवं कार्यकर्ता भी देशवासियों के साथ शोक में सम्मिलित हैं।

मृतक जनों के सम्मान में दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने आज 23 एवं कल 24 अप्रैल के दिल्ली भाजपा के सभी पूर्व निश्चित राजनीतिक कार्यक्रम रद्द करने की घोषणा की और कहा 27 निर्दोष लोगों की हत्या का बदला हर भारतीय लेने को संकल्पित है।

पहलगाम में जिन भारतीयों की हत्या की गई उनमे से कुछ के पार्थिव शरीर उनके गृह नगर ले जाने की यात्रा के बीच आज दिल्ली हवाई अड्डे पर पहुंचे जहां दिल्ली सरकार एवं दिल्ली भाजपा की ओर से श्रद्धांजली अर्पित की गई। दिल्ली की मुख्य मंत्री रेखा गुप्ता एवं दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने आज

"अभी तो मेंहदी सूखी भी न थी" पहलगाँव हमले पर एक कविता

अभी तो हाथों से उसका मेंहदी का रंग भी
नहीं छूटा था,
कलाईयों में छनकती चूड़ियाँ नई थीं,
सपनों की गठरी बाँध वो चल पड़ा था
वादियों में,
सोचा था – एक सफर होगा, यादों में बस
जाने वाला।

पर तुम आए –
नाम पूछा, धर्म देखा, गोली चलाई!
सर में...
जहाँ शायद अभी भी हँसी के कुछ अंश
बचे होंगे।

रे कायरों!
तुम क्या जानो मोहब्बत की बोली?
तुम्हें दो गज ज़मीन भी न मिले,
जो ज़िन्दगी के गीत को मातम में बदल
दो।

वो राजस्थान से आया था,
हिन्दू था, इंसान भी था –
पर तुम्हारी सोच इतनी छोटी थी,
कि नाम ही उसकी सज़ा बन गया।

वो तस्वीर...
जहाँ पत्नी पति के शव को निहार रही है
–
न आँसू बहे, न चीख निकली,
सिर्फ एक मौन जिसने पूरी मानवता को
जगा दिया।

क्या कोई कभी सोच सकता है –
कि हनीमून ट्रिप की तस्वीरें,
कफन के साथ आएंगी?

पहलगाँव की हवाएँ अब सर्द नहीं,
बल्कि सुबकती हैं
हर बर्फ की चादर में एक सवाल लिपटा है
–
"आख़िर क्यों?"

प्रियंका सौरभ

क़ुर्बानियाँ रंग लाएगी...!

वो चिंगारी अब ज्वाला बनकर छाएगी,
ये पहलगाम की क़ुर्बानियाँ रंग लाएगी।
कायरों ने फिर एक बार लाशें बिछा दी,
माँगों का सिंदूर उन काफिरों उजाड़ दी।
अब धरती माँ फिर से रक्तरंजित हुई है,
निर्दोषों पे कहर से गुस्से में लाल हुई है।

वो चिंगारी अब ज्वाला बनकर छाएगी,
ये पहलगाम की क़ुर्बानियाँ रंग लाएगी।
क्यों? सैलानियों की बदुआएं लेके गए,
अपना जीवन प्रमाण-पत्र छोड़कर गए।
जिसका अब कोई उपयोग हीं न होगा,
ये देश खंगालेगा रूह को काँपना होगा।

वो चिंगारी अब ज्वाला बनकर छाएगी,
ये पहलगाम की क़ुर्बानियाँ रंग लाएगी।
अब कैसा हश्र होगा? सोच ना पाओगे,
भाग-भागकर थककर चूर हो जाओगे।
आँकाओं की मांद भी इतनी बड़ी नहीं,
औकात तिनके के सामने भी खरी नहीं।

संजय एम तराणेकर

अब ऐसे नियंत्रित होगा यमुना प्रदूषण, 750 करोड़ रुपये आवंटित; मंत्री प्रवेश वर्मा ने दिए ये निर्देश

सरकार ने यमुना प्रदूषण को रोकने के लिए बड़ा कदम उठाया है। जल मंत्री प्रवेश वर्मा ने दिल्ली जल बोर्ड को सभी 37 सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट का थर्ड पार्टी ऑडिट कराने का निर्देश दिया है। वर्तमान में 37 में से केवल 12 एसटीपी ही जल गुणवत्ता मानकों पर खरे उतरे हैं। सरकार ने एसटीपी की मरम्मत और पुरानी सीवर लाइनों को बदलने के लिए 750 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं।

नई दिल्ली। यमुना में सीवेज और अपशिष्ट जल गिरने से रोकने के लिए सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (एसटीपी) बनाए गए हैं। लेकिन, इन एसटीपी द्वारा शोधित अधिकांश पानी मानक के अनुरूप नहीं है। यही वजह है कि यमुना पहले से अधिक प्रदूषित हो गई है।

प्रवेश वर्मा ने दिए निर्देश

दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (डीपीसीसी) द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार, केवल 12 एसटीपी ही जल गुणवत्ता मानकों पर खरे उतरे हैं। इस स्थिति को सुधारने के लिए जल मंत्री प्रवेश वर्मा ने सख्त कदम उठाते हुए दिल्ली जल बोर्ड को सभी 37 एसटीपी का थर्ड पार्टी ऑडिट कराने का निर्देश दिया है।

जल मंत्री ने कहा, हाल ही में दिल्ली जल बोर्ड के सीवेज प्रबंधन विभाग के साथ समीक्षा बैठक हुई। इसमें एसटीपी की क्षमता, गुणवत्ता और उन्नयन कार्य की समीक्षा की गई। थर्ड पार्टी ऑडिट से प्रत्येक एसटीपी की क्षमता और मौजूदा स्थिति का पता चलेगा।

फिलहाल 37 में से 18 एसटीपी में उन्नयन कार्य चल रहा है। सोनिया विहार, दिल्ली गेट और ओखला में तीन नए एसटीपी के निर्माण से करीब 47 मिलियन गैलन प्रतिदिन (एमजीटी) अतिरिक्त उपचार क्षमता बढ़ेगी।

भविष्य की कार्ययोजना तैयार

उन्होंने कहा, ₹इस समय यमुना में बड़ी मात्रा में बिना उपचारित सीवेज जा रहा है। इसे रोकने के लिए दिल्ली सरकार ठोस कदम उठा रही है। ऑडिट का फैसला इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इसकी रिपोर्ट के आधार पर भविष्य की कार्ययोजना तैयार की जाएगी।₹

दिल्ली सरकार ने 2025-26 के बजट में एसटीपी की मरम्मत के लिए 500 करोड़ रुपये और पुरानी सीवर लाइनों को बदलने के लिए 250 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं। सरकारी अधिकारियों के मुताबिक, 37 में से 30 एसटीपी का संचालन निजी कंपनियों को सौंप दिया गया है।

जल मंत्री ने इन सभी ऑपरेटरों को निर्धारित मानकों के अनुसार एसटीपी की कार्यक्षमता सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है।

वर्मा ने कुछ दिन पहले घोषणा की थी कि ओखला में 564 एमएलडी की क्षमता वाला एशिया का सबसे बड़ा अपशिष्ट जल उपचार संयंत्र पूरी तरह से चालू हो गया है। दिल्ली जल बोर्ड ने विकेंद्रीकृत सीवेज उपचार संयंत्र (डीएसटीपी) पर भी काम शुरू कर दिया है।

मुस्तफाबाद में बिल्डिंग ढहने के बाद निगम ने की कार्रवाई, इतने मकान गिराए जाएंगे; 3 दिन का अल्टीमेटम

मुस्तफाबाद के दयालपुर में इमारत ढहने के बाद निगम हरकत में आया। कमजोर इमारतों की पहचान के लिए सर्वे जारी है जिसमें अब तक 60 मकान चिह्नित किए गए हैं। 15 मकानों को नोटिस जारी किए गए हैं जिनमें मालिकों को खतरे से निपटने के लिए तीन दिन का समय दिया गया है। कुछ लोगों ने नोटिस मिलने के बाद मकान तोड़ना शुरू कर दिया है।

नोटिस में मकान मालिकों से कहा गया है कि उनके मकान दूसरों के लिए खतरा हैं। इन्हें गिराने या सुरक्षित बनाने के लिए कदम उठाने के लिए तीन दिन का समय दिया गया है। नोटिस मिलने के बाद दो लोगों ने अपने मकानों को तोड़ना भी शुरू कर दिया है। मुस्तफाबाद के दयालपुर शक्ति विहार की लेन नंबर एक में शुक्रवार देर रात तीन मंजिला मकान गिरने के बाद नगर निगम सर्वे कर रहा है। सर्वे में ढहे मकान के पास की पांच इमारतों को भी खतरनाक श्रेणी में डालकर नोटिस जारी कर दिया गया है।

दिल्ली। मुस्तफाबाद के दयालपुर में चार से छह मंजिला कमजोर मकानों की पहचान का काम चल रहा है। बुधवार को सर्वे में ऐसे 22 मकान चिह्नित किए गए। अब इनकी संख्या बढ़कर 60 हो गई है। इनमें से 15 मकानों पर नोटिस भी चिपका दिए गए हैं।

मकान मालिकों को मिला तीन दिन का अल्टीमेटम

नोटिस में मकान मालिकों से कहा गया है कि उनके मकान दूसरों के लिए खतरा हैं। इन्हें गिराने या सुरक्षित बनाने के लिए कदम उठाने के लिए तीन दिन का समय दिया गया है। नोटिस मिलने के बाद दो लोगों ने अपने मकानों को तोड़ना भी शुरू कर दिया है।

मुस्तफाबाद के दयालपुर शक्ति विहार की लेन नंबर एक में शुक्रवार देर रात तीन मंजिला मकान गिरने के बाद नगर निगम सर्वे कर रहा है। सर्वे में ढहे मकान के पास की पांच इमारतों को भी खतरनाक श्रेणी में डालकर नोटिस जारी कर दिया गया है।

नोटिस पाने वालों ने बताया कि निगम का एक व्यक्ति आया है और मकान का अस्थायी निरीक्षण कर रहा है। वह तकनीकी जांच नहीं कर रहा है। मोहम्मद अयूब ने नोटिस के बाद ढहे मकान के पीछे बने मकान को तोड़ना शुरू कर दिया है।

दूसरी मंजिल पर बने ढांचे को गिरा दिया गया है। पहली मंजिल और भूतल को एक-दो दिन में गिरा दिया जाएगा। लेन नंबर एक में सलीम, मुमताज और सिराज को भी नोटिस जारी किया गया है।

पांच में से तीन मंजिलों की दीवारों को तोड़ा

नगर निगम की टीम दयालपुर शक्ति विहार में ढहे मकान के पास बनी पांच मंजिला इमारत को दो दिन से गिरा रही है। बुधवार को इस इमारत की तीन मंजिलों की सभी दीवारें और लिंटल गिरा दिए गए हैं। इसकी पहली मंजिल, ग्राउंड फ्लोर और बेसमेंट को गिराना अभी बाकी है। इस निर्माण को गिराने के लिए रास्ते बंद कर दिए गए हैं। भारी पुलिस बल भी तैनात किया गया है।

दिल्ली में 22 हजार भिखारियों की बल्ले-बल्ले! भीख मांगने से रोकने के लिए सरकार करेगी ये काम

दिल्ली सरकार भिखारियों और ट्रांसजेंडरों के पुनर्वास के लिए केंद्र की स्माइल योजना के तहत काम कर रही है। इन लोगों को प्रशिक्षित कर काम पर लगाया जाएगा ताकि वे अपनी आजीविका चला सकें। दिल्ली में करीब 22 हजार भिखारी हैं। सरकार सामाजिक संगठनों के साथ मिलकर इन्हें आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास कर रही है। भाजपा सरकार इन्हें प्रशिक्षित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

नई दिल्ली। शहर में सालों से चली आ रही भिखारियों की समस्या से अब नए सिरे से निपटा जाएगा। सरकार इनके पुनर्वास की योजना बना रही है, जिसके तहत भिखारियों और ट्रांसजेंडरों को प्रशिक्षित कर उन्हें काम पर लगाया जाएगा, ताकि वे अपनी आजीविका चला सकें।

भिखाड़ियों और किन्नरों का किया जाएगा पनर्वास

केंद्र सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय की स्माइल योजना के तहत भिखारियों और ट्रांसजेंडरों का पुनर्वास किया जाएगा। इस योजना पर दिल्ली सरकार सामाजिक संगठनों के साथ मिलकर काम करने जा रही है। सरकार ने इस क्षेत्र में काम करने वाले संगठनों से आगे आने की अपील की है।

दिल्ली की भाजपा सरकार चाहती है कि जो भिखारी काम करने में सक्षम हैं, वे मुख्यधारा में आएं और काम-धंधा करें तथा अपने पैरों पर खड़े होकर सम्मान की जिंदगी जिएं। सरकार की नजर में भीख मांगने की प्रवृत्ति को रोकने का यही एकमात्र कारगर उपाय है।

दरअसल, दिल्ली हाईकोर्ट द्वारा वर्ष 2018 में दिए गए आदेश के अनुसार भीख मांगने को अपराध की श्रेणी से हटा दिया गया है। दिल्ली सरकार द्वारा कराए गए सर्वे के अनुसार राजधानी में करीब 22 हजार भिखारी हैं। जी-20 शिखर सम्मेलन व अन्य अवसरों पर इन्हें शेल्टर होम ले जाया जाता था, लेकिन बाद में ये फिर सड़कों व सार्वजनिक स्थानों पर भीख मांगने लगे।

वर्ष 2021 में इन्हें प्रशिक्षित करने की योजना शुरू की गई, केंद्र ने इसके लिए दिल्ली सरकार को बजट भी दिया था, लेकिन इस योजना पर दिल्ली सरकार की ओर से रुचि न दिखाए जाने के कारण योजना आगे नहीं बढ़ सकी। अब भाजपा सरकार ने इन्हें प्रशिक्षित कर आत्मनिर्भर बनाने का प्रस्ताव तैयार किया है।

दिल्ली में दो तरीके से मांगी जाती है भीख

भीख मांगने का एक तरीका यह है कि भिखारी

चौराहों और धार्मिक स्थलों के बाहर और आसपास खड़े होकर राहगीरों से पैसे, खाना, कपड़े या अन्य चीजें मांगते हैं। कई लोग उन्हें दे भी देते हैं।

कुछ जगहों पर यह भी देखा गया है कि महिलाएं भीख मांगती हैं और पुरुष अपनी गोद में बच्चे के पैर या सिर पर पट्टी बांधकर भीख मांगते हैं और कहते हैं कि वह बीमार है या फिर किसी गर्भवती महिला को आगे करके पैसे मांगते हैं और कहते हैं कि उनके पास उसे अस्पताल ले जाने के लिए पैसे नहीं हैं। भीख मांगने का दूसरा तरीका यह है कि चौराहों, धार्मिक स्थलों के आसपास कई ऐसे लोग सक्रिय रहते हैं जो सीधे भीख नहीं मांगते, बल्कि अपने हाथों में कुछ सामान लेकर बेचते हैं, लोगों से सामान खरीदने के लिए कहते हैं, कई बार लोग सामान खरीद लेते हैं, कई बार सामान न खरीदकर पैसे दे देते हैं। इस तरह बच्चे, बुजुर्ग, महिलाएं, सभी भिखारियों में शामिल हैं।

वहीं, खास तौर पर किन्नर चौराहों और चौराहों पर अपने तरीके से लोगों से पैसे लेते हैं, बदले में दुआएं देते हैं। भिखारियों में दूसरे शहरों से आए लोग भी शामिल हैं। 2024 में जी-20 शिखर सम्मेलन के दौरान सड़कों से भिखारियों को हटाया गया। दिल्ली पुलिस सड़कों से भिखारियों को हटा रही है। पिछले साल दिल्ली में जी-20 शिखर सम्मेलन के दौरान भिखारियों और बेघर लोगों को दिल्ली की सड़कों से हटाकर रैन बसेरों में पहुंचाया गया था। लेकिन यह प्रतिबंध ज्यादा दिनों तक नहीं चल सका, तब से ये लोग फिर से सड़कों पर आ गए हैं। आज भी चौक चौराहों पर ऐसे लोग देखे जा सकते हैं जो सामान भेज रहे हैं या भीख मांग रहे हैं।

क्या है स्माइल योजना ?

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय ने 12 फरवरी 2022 को एक व्यापक योजना ₹स्माइल - आजीविका एवं उद्यम के लिए हाशिए पर पड़े व्यक्तियों की सहायता₹ की शुरुआत की है, जिसमें ट्रांसजेंडरों और भिखारियों के कल्याण के लिए योजनाएं हैं। जिसमें स्वैच्छिक संगठनों आदि की मदद से उनके पुनर्वास, चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराने के साथ-साथ काउंसलिंग, शिक्षा, कौशल विकास, आर्थिक व्यवस्था आदि पर व्यापक फोकस है।

मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने वक्फ कानून के खिलाफ किया प्रदर्शन स्थगित, आतंकी हमले को लेकर कह दी बड़ी बात

जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले की मुस्लिम संगठनों ने कड़ी निंदा की है। जमीयत उलेमा-ए-हिंद और ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने हमले के खिलाफ एकजुटता दिखाते हुए सरकार से कार्रवाई की मांग की। बोर्ड ने वक्फ कानून के खिलाफ प्रदर्शन भी स्थगित कर दिया है। मुस्लिम नेताओं ने इस घटना को दुखद और निंदनीय बताया है।

नई दिल्ली। पहलगाम में हुए कायराना आतंकी हमले के खिलाफ देश के विभिन्न मुस्लिम संगठनों ने भी एकजुटता दिखाई है और हमले की निंदा करते हुए सरकार से ठोस कार्रवाई की मांग की है। जमीयत उलेमा-ए-हिंद के अध्यक्ष मौलाना अरशद मदनी ने कायराना आतंकी हमले की कड़ी निंदा करते हुए कहा कि बेगुनाह लोगों की हत्या करने वाले इंसान नहीं बल्कि हैवान हैं।

इस्लाम में आतंकवाद के लिए कोई जगह नहीं है। आतंकवाद एक नासूर है जो इस्लाम की शांतिप्रिय नीति के खिलाफ है। जारी बयान में उन्होंने कहा कि जमीयत धर्म के नाम पर किए जाने वाले आपराधिक कृत्यों को देश और समाज की शांति और स्थिरता के लिए बेहद खतरनाक मानती है।

मुस्लिमों ने दिखाई एकजुटता

इस बीच, ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड (एआईएमपीएलबी) ने आतंकी हमले के पीड़ित परिवारों के साथ एकजुटता दिखाते हुए नए वक्फ कानून के खिलाफ अपने चल रहे विरोध प्रदर्शन को तीन दिनों के लिए स्थगित करने का फैसला किया है।

एआईएमपीएलबी के तहत वक्फ की सुरक्षा के लिए मजलिस-ए-अमल के राष्ट्रीय संयोजक एसक्यूआर इलियास ने एक बयान में कहा कि पहलगाम में हुआ आतंकी हमला बेहद दुखद और निंदनीय है। इसलिए बोर्ड ने पीड़ित परिवारों के प्रति संवेदना और सहानुभूति व्यक्त करने के लिए वक्फ सुरक्षा अभियान के तहत अपने विरोध कार्यक्रमों को 23 अप्रैल से तीन दिनों के लिए स्थगित करने का फैसला किया है।

निर्दोष लोगों की मौत बेहद दुखद

मुस्लिम संगठन जमात-ए-इस्लामी हिंद के अध्यक्ष सैयद सआदतुल्लाह हुसैनी ने भी आतंकी हमले की कड़ी निंदा करते हुए कहा कि विदेशी पर्यटकों समेत निर्दोष लोगों की मौत बेहद दुखद है। इस तरह के बर्बर कृत्य को किसी भी तरह से उचित नहीं ठहराया जा सकता।

सिटीजन्स फॉर फ्रेटरनिटी की ओर से पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त डॉ. एसवाई कुरैशी, दिल्ली के पूर्व उपराज्यपाल डॉ. नजीब जंग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) जमीरुद्दीन शाह, उद्योगपति सैयद मुस्तफा शेरवानी और पूर्व सांसद शाहिद सिद्दीकी ने इस जघन्य आतंकवादी हमले में शामिल दोषियों के खिलाफ तत्काल और सख्त कार्रवाई की मांग की है।

घाटे में होने के बावजूद डीडीए ने कैसे कमाया सैकड़ों करोड़ का मुनाफा ?

दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) ने घाटे में होने के बावजूद वित्त वर्ष 2024-25 में रिकॉर्ड 8500 फ्लैट बेचकर 3100 करोड़ रुपये से अधिक का राजस्व अर्जित किया। उपराज्यपाल वीके सक्सेना द्वारा उठाए गए कदमों और आवासीय योजनाओं में बदलावों के कारण एक दशक बाद डीडीए ने लगातार दूसरे वित्त वर्ष में मुनाफा कमाया। इससे आवासीय योजनाओं में लोगों की रुचि बढ़ रही है।

नई दिल्ली। नरेला में नागरिकों को मूलभूत सुविधाएं मुहैया कराने पर जोर दिया जा रहा है। इस क्षेत्र को शिक्षा का केंद्र बनाने और अंतरराष्ट्रीय खेल परिसर बनाने का प्रस्ताव है। रिठाला-नरेला-कुंडली

मेट्रो कॉरिडोर का शिलान्यास हो चुका है।

इससे यहां स्थित दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) के आवासीय परिसर के प्रति लोगों की दिलचस्पी बढ़ी है। अन्य स्थानों पर बने डीडीए फ्लैटों को बेचने के लिए भी कई कदम उठाए गए हैं।

3100 करोड़ रुपये से अधिक का राजस्व अर्जित

इसके साथ ही डीडीए ने वित्त वर्ष 2024-25 में रिकॉर्ड 8500 फ्लैट बेचकर 3100 करोड़ रुपये से अधिक का राजस्व अर्जित किया है।

डीडीए अधिकारियों का कहना है कि उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने आवासीय इकाइयों की बिक्री को बढ़ावा देने के लिए कई उपाय किए। डीडीए आवासीय योजना के लिए आवेदन करने के लिए दिल्ली में संपत्ति का मालिक न होने की अनिवार्यता को समाप्त कर दिया गया।

वेबसाइट पर सिंगल विंडो पूछताछ, खरीदार को संपत्ति से संबंधित सभी दस्तावेज सौंपना, लॉटरी पहले आओ पहले पाओ/ई-नीलामी पद्धति को अपनाया गया। इससे आवासीय योजनाओं में लोगों की रुचि बढ़ रही है।

यही वजह है कि एक दशक से अधिक समय तक घाटे में रहने के बाद डीडीए ने लगातार दूसरे वित्त वर्ष लाभ हासिल किया है। इसने वित्त वर्ष 2023-24 में 511 करोड़ रुपये और वर्ष 2024-25 में 1371 करोड़ रुपये का अधिशेष दर्ज किया है।

'बार-बार हो सर्जिकल स्ट्राइक', पाकिस्तान को लेकर क्या बोले रिटायर्ड लेफ्टिनेंट जनरल?

परिवहन विशेष न्यूज

दैनिक जागरण की संयुक्त राष्ट्र में फोर्स कमांडर रहे लेफ्टिनेंट जनरल (रिटा.) राजेंद्र सिंह के साथ खास बातचीत हुई। बातचीत के दौरान लेफ्टिनेंट जनरल (रिटा.) ने कहा कि बार-बार कुछ समय के अंतराल पर सर्जिकल स्ट्राइक करनी होगी तभी पाकिस्तान शांत रहेगा। आगे विस्तार से पढ़िए आखिर उन्होंने और क्या-क्या कहा है।

गुरुग्राम। संयुक्त राष्ट्र में फोर्स कमांडर रहे लेफ्टिनेंट जनरल (रिटा.) राजेंद्र सिंह का मानना है कि कश्मीर में अशांति रहने पर ही पाकिस्तान एकजुट रह सकता है। पिछले कुछ वर्षों के दौरान कश्मीर में शांति से पाकिस्तान कई भागों में टूटने की कगार पर है।

कहा कि सत्ता के साथ ही सेना की पकड़ कमजोर होती जा रही है। लोग नियंत्रण से बाहर होते जा रहे हैं, क्योंकि आर्थिक तौर पर पाकिस्तान की कमर टूट चुकी है। लोग भूख से बेहाल हैं। कश्मीर का मसला उठाकर पाकिस्तान अपने लोगों का ध्यान दूसरी तरफ रखता है।

'बार-बार होनी चाहिए सर्जिकल स्ट्राइक'

पाकिस्तान को एकजुट रखने के लिए कश्मीर को वह अशांत रखना चाहता है। साफ लग रहा है कि इस बार हमला पाकिस्तान में जारी आंतरिक गतिरोध को शांत करने के लिए कराया गया है। कुछ दिन पहले पाकिस्तानी आर्मी का बयान भी यही दर्शा रहा है। इसका जवाब भारत को तत्काल प्रभाव से सर्जिकल स्ट्राइक के माध्यम से देना होगा। बार-बार कुछ समय के अंतराल पर सर्जिकल स्ट्राइक करनी होगी तभी पाकिस्तान शांत रहेगा।

जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में पर्यटकों पर आतंकी हमले को कायराना करार देते हुए लेफ्टिनेंट जनरल (रिटा.) राजेंद्र सिंह ने दैनिक जागरण से कहा कि यह हमला पाकिस्तान की जलन को दर्शाता है। पाकिस्तान को उम्मीद ही नहीं थी कि कश्मीर इतनी तेजी से तरक्की के रास्ते पर चल पड़ेगा।

बताया कि पिछले कुछ सालों में जम्मू-कश्मीर की तस्वीर बदल चुकी है। वहां के लोग विकास की मुख्यधारा में शामिल हो चुके हैं। कश्मीर की आर्थिक उन्नति का मुख्य आधार पर्यटन है। इसे ध्यान में रखकर आतंकियों ने पर्यटन स्थल का चुना है ताकि पर्यटकों में दहशत पैदा की जा सके।

इस बार पाकिस्तान ने कर दी बड़ी गलती

पर्यटक पीछे हट जाएंगे तो कश्मीर फिर से पुरानी स्थिति में चला जाएगा। फिर वे वहां के लोगों की गरीबी का फायदा उठाकर अपनी गतिविधियों को अंजाम देते रहेंगे। इस बार पाकिस्तान ने बड़ी गलती कर दी। उसका खामियाजा उसे भुगतना होगा। उसने सीधे आर्थिक ढांचे को ध्वस्त करने का प्रयास किया है।

यही वजह है कि पहली बार जम्मू-कश्मीर से संबंधित सभी राजनीतिक एवं अन्य संगठनों ने हमले की आलोचना की है। एक सुर में इससे पहले कभी आवाज नहीं बुलंद हुई। इससे साफ है कि सभी अवाम की तरक्की चाहते हैं। भारतीय सेना के सामने पाकिस्तान कुछ भी नहीं।

माहौल बेहतर होने के बाद भी कश्मीर में फौज की संख्या कम नहीं करनी चाहिए थी। पाकिस्तान का कोई भरोसा नहीं है। कश्मीर में अशांति की वजह से पाकिस्तान सांस ले रहा है। ऐसे में वह मौका मिलते ही हरकत करने से बाज नहीं आएगा।

अपने जीवन में स्वर्ग का अनुभव करो : प्रेम रावत

परिवहन विशेष न्यूज, नेपाल: भक्तपुर काठमांडू 23 अप्रैल 2025, अंतर्राष्ट्रीय वक्ता, लेखक एवं शांतिदूत प्रेम रावत जी ने आज भक्तपुर, काठमांडू, नेपाल में हज़ारों श्रोताओं को सम्बोधित किया। यह कार्यक्रम आत्मज्ञान प्रचार संघ नेपाल द्वारा आयोजित किया गया। सभी लोगों ने इस कार्यक्रम का भरपूर आनंद लिया। भक्तपुर काठमांडू नेपाल के कार्यक्रम में प्रेम रावत ने कहा ₹ आज एक बहुत ही सुंदर मौका है कुछ सुनने का और कुछ समझने का क्योंकि यह जीवन जो हमको मिला है यह बहुत ही दुर्लभ है। सच्चाई क्या है? तीन चीजें हैं जो सभी के लिए समान हैं, एक तुम्हारा जन्म हुआ, दूसरा तुम अभी जीवित हो, तुम्हारे अंदर श्वास आ रहा है और जा रहा है और तीसरा एक दिन तुमको इस संसार से जाना है। प्रेम रावत ने कहा ₹आप अपने जीवन में किसे प्राथमिकता देते हैं है? आपके जीवन के अंदर आनंद सर्वोपरि होना चाहिए। क्या तुम उस बनाने वाले को पहचानते हो? उसको पहचानने के लिए उसके अनुभव की जरूरत है, उसे महसूस करने की जरूरत है। जो हृदय में है उसको पहचानने की जरूरत है, ऐसा करने से ही तुम्हारे जीवन का उद्देश्य पूरा होगा। उन्होंने आगे कहा ₹आज संसार के अंदर क्या हो रहा है। क्या संसार के अंदर काम, क्रोध, मोह कम हुआ? ये सारी चीजें वही हैं जिसने रावण को रावण बनाया। इन सब से बचने के लिए एक मार्गदर्शक की जरूरत हैं। यही समझाने के लिए आज हम यहाँ आयें हैं। तुम्हारे अंदर शांति भी है तुम्हारे अंदर क्रांति भी है। जो तुम्हारे हृदय में विराजमान है उसे जानोगे तो शांति मिलेगी, आनंद मिलेगा, जीते जी उस स्वर्ग का अपने अंदर अनुभव कर सकोगे। अंत में प्रेम रावत ने कहा ₹इस जीवन का आनंद लो और इसे शांति से भरने दो, यह जीवन बार-बार नहीं मिलेगा। इस कार्यक्रम में नेपाल-भारत की सीमावर्ती क्षेत्रों से आए हज़ारों लोगों ने भी भाग लिया। अंत में प्रेम रावत ने कहा इस जीवन का आनंद लो और इसे शांति से भरने दो। जह जीवॅ बार-बार नहीं मिलेगा। इस कार्यक्रम में नेपाल-भारत की सीमावर्ती क्षेत्रों से आए हजारों लोंगो ने भाग लिया।

पहलगाम की चीख़ें

जब बर्फ़ीली घाटी में ख़ून बहा,
तब दिल्ली में सिर्फ़ ट्वीट हुआ।
गोलियाँ चलीं थी सरहद पार से,
पर बहस चली—
'गलती किसकी है सरकार से?'

जो लड़ रहे थे जान पे खेलकर,
उनकी कुर्बानी दब गई मेल में।
और जो बैठे थे एयरकंडीशन रूम में,
लिखने लगे बयान—
'मोदी है क़सूरवार इसमें।'

कब समझोगे, ये दुश्मन बाहर है,
जो मज़हब की आड़ में कत्लेआम करता है।
1400 सालों से जो आग सुलगा रहा,
उसका नाम लेने से भी डर लगता है क्या?

मोदी नहीं, वो किताबें दोषी हैं,
जो नफ़रत की जुबान बोलती हैं।
जो कहती हैं, 'काफ़िर को खत्म करो,'
और तुम कहते हो, 'सेक्युलर रहो।'

किसी ने कहा—'पहले जाति देखो,'
किसी ने कहा—'धर्म ना पूछो।'
पर जब आतंकी आया AK-47 लिए,
उसने सीधा सीने में गोली पूछी—
'हिन्दू हो या नहीं?'

क्या यही है तुम्हारी मानवता की परिभाषा?
क्या यही है तुम्हारी आज़ादी की भाषा?

जो देश के वीरों को शर्मिंदा करे,
और आतंकी सोच को गले लगाए,
वो बुद्धिजीवी नहीं, गद्दार कहे जाए।

मोदी को कोसने से पहले सोचो,
क्या तुमने भी देश के लिए कुछ किया है?
जिसने जवाब दिया बालाकोट से,
उसके इरादे पर शक करना भी गुनाह है।

पहलगाम रो रहा है, सुनो उसकी सिसकी,
ये कायरता नहीं, ये साजिश है जिसकी।
एकजुट होओ, मज़हब से ऊपर उठकर,
वरना अगली चीख़ तुम्हारे घर से उठेगी।

-प्रियंका सौरभ

बीजद ने राज्य में कानून व्यवस्था की स्थिति को लेकर सरकार पर हमला बोला

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: राज्य में नई सरकार आने के बाद से कानून व्यवस्था की स्थिति बिगड़ती जा रही है। अब नई सरकार को सत्ता में आए 11 महीने हो गए हैं और इन 11 महीनों में पूरे राज्य में बच्चों और आदिवासी छात्रों के अपहरण की घटनाएं सामने आ रही हैं। दुर्व्यवहार की खबरें उन क्षेत्रों से आ रही हैं जहां बच्चे और आदिवासी अधिक संख्या में हैं। कुचिंडा, राउरकेला, मयूरभंज से लेकर मल्कानगिरी तक बाल शोषण की खबरें आ रही हैं।और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि पुलिस के रवैये ने लोगों को चिंतित कर दिया है। यही कारण है कि बीजद आज सरकार पर हमला कर रही है।

वरिष्ठ बीजद नेता संजय दासबर्मा ने आज शंख भवन में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में कहा कि हर दिन हमें पूरे राज्य से यौन उत्पीड़न और हत्या की घटनाओं का सामना करना पड़ रहा है। जो केवल विफल कानून व्यवस्था की स्थिति के कारण हो रहा है। दोषियों को दंडित करने तथा जांच के स्थान पर अभियोजन चलाने का पुलिस का दृष्टिकोण चिंताजनक बना हुआ है। यह घटना कुचिंडा में लोगों के विरोध प्रदर्शन के बाद घटित हुई। हम राजधानी की नाक के नीचे देलांग रतनपुर गांव में हुई भयावह घटना की कड़ी निंदा करते हैं। पुरी एसपी ने 15 तारीख को बच्चे के लापता होने का विवरण दिया है। जब पुलिस थाने में गुमशुदा बच्चे की सूचना मिली तो 11 वर्षीय बच्चा 7 दिन तक नहीं मिला। पुलिस ने बच्चे के पिता से पूछताछ की, जिस पर उन्हें संदेह था, और उसे छोड़ दिया। इसके बाद ग्रामीणों ने पुलिस के रवैये के खिलाफ सड़क जाम कर दिया। इसके बाद अपराधी को पकड़ लिया गया। ग्रामीणों को पुलिस के रवैये और जांच में देरी के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करने पर गिरफ्तार किया गया है। जो बाल लोगों के विरुद्ध किये गये थे, उनका न्याय लोग ही करेंगे।

इससे पहले पिपिली में 7 साल की बच्ची के साथ बलात्कार हुआ था। यह अत्यंत निंदनीय है। यह देखना अभी बाकी है कि पुलिस किस तरह जांच कर रही है। पुरी जिला बीजद अध्यक्ष उमाकांत सामंतराय के नेतृत्व में बीजद रतनपुर जा रही है। टीम परिवारों और लोगों से मुलाकात करेगी। जांच में देरी क्यों हुई? 46 लोगों के खिलाफ मामला क्यों दर्ज किया गया? इस पर चर्चा की जाएगी। वरिष्ठ बीजद नेता संजय दासबर्मा ने कहा है कि यदि आवश्यक हुआ तो वह पुरी एसपी से मिलेंगे।

इसी तरह पिपिली के पूर्व विधायक और बीजद नेता रुद्र महारथी ने मांग की है कि एक टीम गठित कर इसकी जांच कराई जाए कि जांच में लापरवाही क्यों बरती गई। उन्होंने यह भी मांग की कि इस मामले की सुनवाई फास्ट ट्रैक कोर्ट में की जाए। क्योंकि भले ही आपराधिक जांच की मांग की गई थी, लेकिन गृह विभाग के प्रभारी मुख्यमंत्री ने इस बारे में कुछ नहीं कहा। प्रदर्शन के दौरान उन्होंने जिला कलेक्टर को बार-बार फोन किया, लेकिन उन्होंने अपना फोन बंद रखा। शव वापस लाए जाने के बाद भी वह नहीं आया। यह निंदनीय है. सरकार को बख्शी के परिवार को मुआवजे के तौर पर एक करोड़ रुपए देने चाहिए।

पहलगाम में आतंकियों द्वारा 26 हत्याओं से मोदी का आज कानपुर दौरा भी रद्द

- सऊदी अरब से लौट के बाद पीएम को आज कानपुर में करना था मेट्रो स्टेशन, पावर प्लांट का उद्घाटन और करोड़ों की परियोजनाओं का भी लोकार्पण
- पहलगाम आतंकी हमले में कानपुर के शुभम द्विवेदी ने भी गवाई है जान ,दो माह पहले ही हुई थी शिवम की शादी ,परिवार में मातम

सुनील बाजपेई

कानपुर। जम्मू कश्मीर में पहलगाम के आतंकी हमले में 26 लोगों की जान गवाने की घटना के बाद सऊदी अरब दौरा रद्द करके स्वदेश लौटे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज 24 अप्रैल को अपना कानपुर का दौरा भी रद्द कर दिया है। उन्हें आज ही कानपुर में मेट्रो के नए अंडरग्राउंड स्टेशनों नेवली और पनकी पावर प्लांट के उद्घाटन के साथ ही अरबों की योजनाओं का भी लोकार्पण करना था। साथ ही प्रधानमंत्री को यहां के सीएसए के विशाल मैदान में जनसभा को भी संबोधित करना था ,जिसके लिए सारी आवश्यक तैयारी को भी पुलिस प्रशासन द्वारा अंतिम रूप दिया जा चुका था। इसके लिए आसपास के कई जिलों का फोर्स भी कानपुर पहुंच चुका था, जिसकी अब वापसी भी सुनिश्चित की जा रही है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का कानपुर दौरा रदद होने की पुष्टि आतंकी हमले में मारे गए शुभम द्विवेदी के परिजनों को सांत्वना देने पहुंचे उत्तर प्रदेश विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने भी की है।

याद रहे की पहलगाम की आतंकी हमले में यहां महाराजपुर थाना क्षेत्र में रहने वाले शुभम द्विवेदी भी हत्या का शिकार हुए हैं ,जिससे उनके परिजनों का रो रो का बुरा हाल है। वह पहलगाम से शिवम के शव को अपने घर कानपुर लाने के लिए भी जम्मू कश्मीर गये हैं। वहीं सैकड़ों लोग परिवार को सांत्वना देने के लिए भी उनके घर पहुंच रहे हैं। सीमेंट का कारोबार करने वाले व्यवसाय शुभम द्विवेदी अपनी पत्नी के साथ छुट्टियां मनाने पहलगाम गए थे ,जहां हुए आतंकी हमले में मारे गए 26 लोगों में कानपुर के सीमेंट व्यवसाई महाराजपुर थाना क्षेत्र के हाथी गांव निवासी 31 साल के शिवम द्विवेदी का भी नाम शामिल है। उनकी शादी 2 मां पहले ही हुई थी और वह अपनी पत्नी और परिवार के 11 सदस्यों के साथ कश्मीर ट्रिप पर गए थे। आतंकवादियों ने पत्नी के सामने ही उनकी गोली मार कर हत्या कर दी।

इस घटना से कानपुर में भी जबरदस्त रोष है। और लोग इस घटना को अंजाम देने वाले आतंकियों का समूल नाश करने की मांग भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से की है।

7 करोड़ रुपये की लागत से बन रहे तटीय सड़क निर्माण की गुणवत्ता घटिया बताई गई

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

पुरी/भूबनेश्वर : पुरी शहर एक वैश्विक शहर होगा। शहर के चारों ओर एक रिंग रोड होगी। हालाँकि, आरोप हैं कि समुद्र तट से स्टालिनगिरी तक बनाई गई सड़क घटिया गुणवत्ता की है। कहीं पर पिच ऊपर उठ गई है, तो कहीं पर फ्लैट की ईंटें उखड़कर दरारें बन गई हैं। वॉकवे पर लगी ग्रेनाइट की प्लेटें बहुत घटिया गुणवत्ता की हैं तथा कुछ स्थानों पर टूटकर दो टुकड़ों में बंट गई हैं।हल्की बारिश के दौरान, प्लेट की फिसलन के कारण पर्यटक घायल हो जाते हैं। आरोप है कि करीब सात करोड़ रुपये की लागत से बनी इस सड़क की गुणवत्ता की जांच नहीं की जा रही है। अफवाह है कि पुलिस विभाग का एक पूर्व अधिकारी आंखों पर पट्टी बंधी बिल्ली का दूध पीकर घटनास्थल से भाग निकला। सुनने में आ रहा है कि निर्माण विभाग की गुणवत्ता नियंत्रण इकाई ने कार्य के दौरान गुणवत्ता की जांच किए बिना ही ठेकेदार को बिल का भुगतान कर दिया। आप के जिला अध्यक्ष संजीव कुमार मोहंती ने अभियंता को मांग पत्र सौंपकर कहा है कि जनता के टैक्स से बनी सड़क में भ्रष्टाचार की बू आ रही है। कार्यालय के अधिकारी ने आरोप लगाया कि वह पुरी में काम करता है लेकिन अधिकांश समय भुवनेश्वर में रहता है। उन्होंने सतर्कता विभाग, निर्माण विभाग के मुख्य अभियंता, निर्माण मंत्री,

निर्माण सचिव, सरकार के प्रधान सचिव और मुख्यमंत्री से इस बीच सड़क घोटाले के मामले की जांच करने का अनुरोध किया है।

"पहलगाम के आँसू"

वो बर्फ से ढकी चट्टानों की गोद में,
जहाँ हवा भी गुनगुनाती थी,
जहाँ नदियाँ लोरी सुनाती थीं,
आज बारूद की गंध बसी है।

वो हँसी जो बाइसारन की घाटियों में गूँजी,
आज चीखों में तब्दील हो गई।
टट्टू की टापों के संग जो चला था सपना,
खून में सना हुआ अब पथरीले रास्ते पर गिरा है।

एक लेफ्टिनेंट — विनय,
जिसने सात फेरे लिए थे पाँच दिन पहले,
अब शहीदों की गिनती में है —
उसकी सुहागन के चूड़े... बस बजने से रह गए।

आतंकी आए, बोले —
₹मोदी को सिर पे चढ़ाया है!₹
गोली चली — न किसी मज़हब की पहचान में,
न किसी उम्र की इज़्ज़त में।

पर्यटक थे —
कुछ दिल्ली से, कुछ चेन्नई से,
कोई विदेशी, कोई पहाड़ी।
पर सब इंसान थे,
और वो क्या थे जो उन्हें मिटा गए?

माँ की मन्नतें
बर्फ में लोटतीं लाशों में बिखर गईं।
बच्चों की छुट्टियाँ
अब यादों की कब्रगाह बन गईं।

जम्मू ने मोमबत्तियाँ जलाईं,
दिल्ली ने आँसू बहाए।
सरकार ने बैठक बुलाई,
पर पहलगाम अब हमेशा के लिए रोया।

कविता क्या लिखूं मैं?
जब वादियों में गूंजता हो मातम,
और चिड़ियाँ तक सहमी हों
गुलमर्ग की पगडंडियों में।

--- डॉ सत्यवान सौरभ

"पहलगाम हमला: कब सीखेंगे सही दुश्मन पहचानना?"
"पहलगाम का सच: दुश्मन बाहर है, लड़ाई घर के भीतर"

पहलगाम हमला जिहादी मानसिकता का परिणाम है। मोदी सरकार ने हमेशा आतंकवाद का मुँहतोड़ जवाब दिया है। राजनीतिक आलोचना आतंकवाद के असली स्रोत से ध्यान भटकाती है। जातियों में बंटा समाज आतंक से निपटने में अक्षम होगा। हमें आतंकवाद के विरुद्ध एकजुट होकर खड़ा होना चाहिए।

– प्रियंका सौरभ

एक ओर भारत जातियों, उपजातियों, विचारधाराओं और आस्थाओं के नाम पर खुद को खंड-खंड कर रहा है, दूसरी ओर हमारे दुश्मन संगठित होकर हमारी एकता पर प्रहार कर रहे हैं। अभी-अभी जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में जो आतंकवादी हमला हुआ, उसने फिर से हमें यह याद दिला दिया कि असली दुश्मन हमारे भीतर नहीं, सरहद पार बैठा है। यह हमला एक साजिश नहीं, बल्कि जिहादी विचारधारा की वह रक्तरंजित अभिव्यक्ति है, जो बीते कई दशकों से भारत को खून में डुबोने की फिराक में है।

इस हमले में निर्दोष नागरिक मारे गए, सुरक्षा बल घायल हुए, और एक बार फिर टीवी चैनलों पर वही पुराने दृश्य लौट आए—रोती हुई आंखें, खून से सना ज़मीन का टुकड़ा और राजनीतिक दलों की रस्मी प्रतिक्रियाएं। परंतु सबसे चिंताजनक बात यह है कि इस बार भी कई बुद्धिजीवी, पत्रकार और राजनीतिक विश्लेषक आतंकवाद की जड़ों पर प्रहार करने की बजाय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर आक्षेप लगाने में जुट गए।

यह कौन सी राजनीति है?

क्या हम उस मानसिक दिवालियापन की ओर बढ़ चुके हैं जहाँ दुश्मन की गोलियों पर चुप्पी और देश के नेतृत्व पर तीखी टिप्पणियाँ फैशन बन चुका है? एक सवाल पूछना आवश्यक है—क्या मोदी आतंकवादियों को न्योता देकर पहलगाम लाए थे? क्या प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने ऐसे हमलों को प्रोत्साहन दिया?

दरअसल, नरेंद्र मोदी वही प्रधानमंत्री हैं जिन्होंने पाकिस्तान की ज़मीन पर सर्जिकल और एयर स्ट्राइक कर भारत की नई सैन्य नीति की घोषणा की। यह वह प्रधानमंत्री हैं जिनकी सरकार ने सेना को खुली छूट दी—₹गोली का जवाब गोली से₹ सिर्फ नारा नहीं, रणनीति बन गई।

राजनीतिक इच्छाशक्ति और सुरक्षा दृष्टिकोण

2016 में उरी हमले के बाद भारत की सर्जिकल स्ट्राइक, और 2019 में पुलवामा हमले के बाद बालाकोट एयर स्ट्राइक ने यह सिद्ध किया कि भारत अब केवल माफ़ी मांगने वाला देश नहीं, जवाब देने वाला देश बन चुका है। ये कार्रवाइयाँ केवल सैन्य कौशल नहीं, राजनीतिक इच्छाशक्ति का प्रमाण थीं। इसके बाद अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी भारत की आतंकवाद के खिलाफ नीति को समर्थन मिला।

हाल ही में 26/11 हमले के मास्टरमाइंड तहव्वुर राणा को अमेरिका से प्रत्यर्पित करवाना भी इसी सरकार की कूटनीतिक जीत है। पाकिस्तान, जो पहले भारत को आंखें दिखाता था, आज आर्थिक दिवालियेपन के कगार पर खड़ा है और वैश्विक मंचों पर गिड़गिड़ा रहा है।

यह सब आकस्मिक नहीं हुआ। यह एक सुविचारित रणनीति, स्पष्ट लक्ष्य और कड़े फैसलों का परिणाम है।

लेकिन आलोचना फिर भी क्यों?

एक बड़ा वर्ग जो 'सेकुलरिज़्म' के नाम पर हर जिहादी हमले के बाद मौन साध लेता है, वह मोदी सरकार पर हमलावर हो जाता है। उसके लिए आतंकवादियों का मज़हब छिपाना जरूरी है, लेकिन सरकार को कठघरे में खड़ा करना भी ज़रूरी। इस विचारधारा को समझना होगा कि आतंकवाद का धर्म नहीं होता, लेकिन उसकी जड़ें किसी विचार में होती हैं। और उस विचार को नाम देने से डरना आत्महत्या के बराबर है।

1400 साल पुरानी एक किताब को हथियार बनाकर जो लोग काफ़िरों के ख़िलाफ़ युद्ध छेड़े हुए हैं, वे किसी भी धर्म का अपमान कर रहे हैं। यह जिहाद 'आस्था' नहीं, सत्ता की राजनीति है। और उसे केवल सेना नहीं, समाज को भी पहचानना और खारिज करना होगा।

जातियों में बंटा समाज, आतंक से अनजान देश

यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि एक ओर हमारे युवा सोशल मीडिया पर रील्स और जातिवाद के बहसों में व्यस्त हैं, दूसरी ओर सीमा पर हमारे जवान आतंक की गोली से जूझ रहे हैं। एक तरफ 'जाति पूछकर नौकरी', 'धर्म पूछकर रोटी' की बहसें हैं, तो दूसरी तरफ आतंकवादी धर्म पूछकर गोली चला रहे हैं। यह विडंबना नहीं, चेतावनी है।

आज हमें तय करना है कि हम किसके साथ खड़े हैं—उनके, जो इस देश को टुकड़े-टुकड़े करना चाहते हैं, या उनके जो हर हमले का जवाब देने का साहस रखते हैं?

मोदी नहीं, मानसिकता दोषी है

आतंकवादी हमले के लिए मोदी को कोसना वैसा ही है जैसे डॉक्टर की सर्जरी से पहले ही उसे मरीज की मौत का दोषी ठहरा देना। सच्चाई यह है कि इस हमले के लिए जिम्मेदार है वह जिहादी मानसिकता, वह पाकिस्तान जो आतंक को पालता है, और वह वैश्विक मौन जो इस विचारधारा पर चुप्पी साधे हुए है।

मोदी ने न सिर्फ जवाब दिया है, बल्कि आतंकियों और उनके आकाओं को पाताल से भी निकालने की शपथ ली है। उनकी सरकार का ट्रैक रिकॉर्ड यही कहता है। तो क्या अब हमें एकजुट होकर आतंक के खिलाफ खड़ा नहीं होना चाहिए?

एकजुट भारत ही समाधान है

पहलगाम का हमला हमें एक बार फिर झकझोर गया है। यह पहला हमला नहीं है, और शायद आखिरी भी नहीं। लेकिन अगर हम अब भी नहीं जागे, अगर हम अब भी आपस में लड़ते रहे, तो दुश्मन की जीत सुनिश्चित है। हमें एक ऐसे भारत की आवश्यकता है जो जातियों, धर्मों और मतभेदों से ऊपर उठकर आतंकवाद को पहचान सके और उसका सामना कर सके।

राजनीतिक मतभेद रखें, लेकिन राष्ट्रीय मुद्दों पर एकजुट रहें। आलोचना करें, पर लक्ष्य सही चुनें। आतंकवादी की गोलियों पर चुप्पी और प्रधानमंत्री पर शोर—यह आत्मघात है।

पहलगाम हमला हमारे लिए एक चेतावनी है—अगर अब भी हम नहीं जागे, तो अगला निशाना कोई और नहीं, हम स्वयं होंगे। और तब शायद हमें यह कहने का भी वक्त न मिले कि "काश हमने समय रहते सही दुश्मन पहचाना होता।"

वोक्सवैगन ने एक साथ पेश की तीन कॉन्सेप्ट इलेक्ट्रिक कार, कई प्रीमियम और एडवांस फीचर्स से होंगी लैस

परिवहन विशेष न्यूज

वोक्सवैगन ने चीन में चल रहे 2025 शंघाई मोटर शो में एक साथ तीन इलेक्ट्रिक कार को शोकेस किया है। यह तीन इलेक्ट्रिक कार D. Era ID. Evo और ID. Aura है। इनमें से दो इलेक्ट्रिक UV कॉन्सेप्ट ID. Era और ID. Evo है तो एक ID. Aura इलेक्ट्रिक कॉम्पैक्ट सेडान है। आइए जानते हैं कि इन तीनों में क्या फीचर्स मिलेंगे।

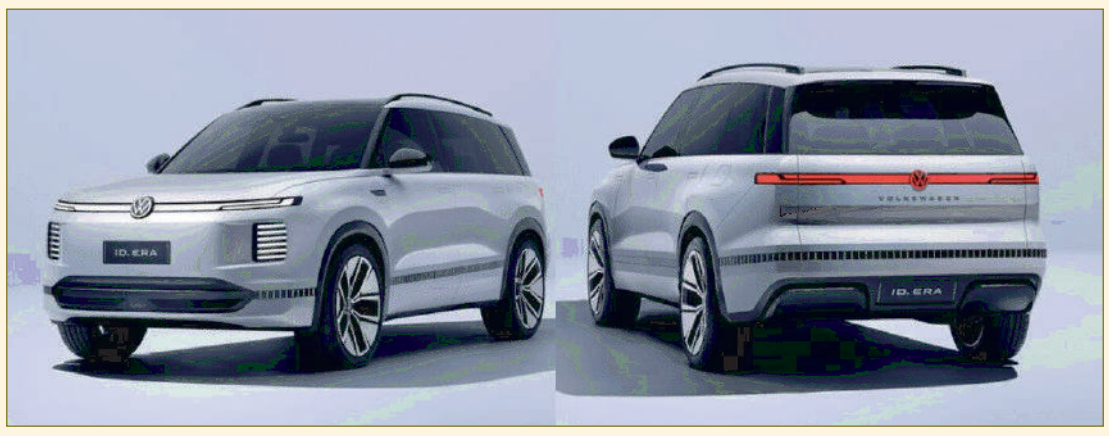

नई दिल्ली। वर्तमान में चीन में 2025 शंघाई मोटर शो चल रहा है। यहां पर दुनिया भर की कंपनियां अपनी नई कार से लेकर भविष्य में आने वाली गाड़ियों को पेश कर रही है। इस शो में Volkswagen ने अपनी तीन गाड़ियों को पेश किया है, वो भी इलेक्ट्रिक। कंपनी ने सभी के कॉन्सेप्ट मॉडल को पेश किया है, जिन्हें आने वाले वर्षों में सड़कों पर चलते हुए देखा जा सकता है। आइए इन तीन इलेक्ट्रिक कार ID. Era, ID. Evo और ID. Aura के बारे में जानते हैं और इनमें क्या कुछ मिलने वाला है।

तीन में दो इलेक्ट्रिक SUV कॉन्सेप्ट

Volkswagen ने 2025 शंघाई मोटर शो में दो इलेक्ट्रिक UV कॉन्सेप्ट ID. Era और ID. Evo को पेश किया है। वहीं, ID. Aura एक इलेक्ट्रिक कॉम्पैक्ट सेडान है। इन तीनों इलेक्ट्रिक कार को चीन बाजार में लॉन्च किया जाएगा। ID. Era को SAIC Volkswagen, ID Evo को Volkswagen Anhui और ID. Aura को FAW-Volkswagen ने डिजाइन किया है।

Volkswagen ID. Era

यह सात सीट वाली इलेक्ट्रिक SUV कॉन्सेप्ट है। इसमें बॉक्सी और टेक्स्टबुक SUV सिल्हूट दिया गया है, जिसमें स्प्लिट हेडलाइट डिजाइन के साथ फ्लैट फ्रंट फेशिया और ग्लास एरिया के लिए ब्लैक-आउट इफेक्ट दिया गया है। यह एक इलेक्ट्रिक SUV है, जिसकी बैटरी फुल चार्ज होने के बाद 300 किमी तक की रेंज देगी।

Volkswagen ID. Evo

यह भी एक बड़ी इलेक्ट्रिक SUV है, लेकिन इसे युवाओं को आकर्षित करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह एक स्पोर्टी कार होने वाली है। इसमें कम बॉक्सी अपील और बेहतरीन फेशिया दिया गया है, जिसमें LED DRL एलिमेंट दिए गए हैं। इसमें हेडलाइट्स स्लीक है। इस स्पोर्टी इलेक्ट्रिक एसयूवी को आकर्षक प्रदर्शन के लिए 800V आर्किटेक्चर के जरिए संचालित किया जाता है।

Volkswagen ID. Aura

यह एक कॉम्पैक्ट इलेक्ट्रिक सेडान है जिसका डिजाइन काफी बेहतरीन दिया गया है। इसमें बेहतरीन लाइटिंग सेटअप और शीट मेटल पर शार्प लाइन्स दी गई है। ID. Aura कंपनी के नए CMP स्केटबोर्ड (कॉम्पैक्ट मेन प्लेटफॉर्म, PSA के CMP स्केटबोर्ड से संबंधित नहीं) पर आधारित पहला वाहन है।

एडवांस फीचर्स से होगी लैस

Volkswagen की इन तीनों इलेक्ट्रिक कार में कई प्रीमियम और एडवांस फीचर्स देखने के लिए मिल सकते हैं। यह तीन इलेक्ट्रिक कारें उस 30 नई कारों की लिस्ट में शामिल है, जिन्हें साल 2027 के अंत तक चीन में लॉन्च की जाएगी। इन 30 से से 20 गाड़ियों को न्यू एनर्जी व्हीकल्स के रुप में वर्गीकृत किया गया है, जिनमें द्ध इलेक्ट्रिक वाहन, हाइब्रिड इलेक्ट्रिक वाहन और रेंज-विस्तारित इलेक्ट्रिक वाहन शामिल हैं।

टाटा नेक्सन ईवी फिर से मिली भारत एनसीएपी में 5-स्टार सेफ्टी स्कोर, फौलादी निकली टाटा मोटर्स की ये कार

परिवहन विशेष न्यूज

हाल ही में Tata Nexon EV को बड़ी बैटरी पैक 45 kWh के साथ अपडेट किया गया है। अब इस वर्जन का भारत NCAP क्रैश टेस्ट किया गया है। इस वर्जन ने भी कार क्रैश टेस्ट में 5-स्टार सेफ्टी रेटिंग हासिल की है। इसमें पैसेंजर्स की सेफ्टी के लिए छह एयरबैग इलेक्ट्रॉनिक स्थिरता नियंत्रण (ईएससी) और एक 360-डिग्री कैमरा ISOFIX चाइल्ड सीट एंकरेज जैसे फीचर्स मिलते हैं।

नई दिल्ली। Tata Nexon EV को हाल ही में बड़ी बैटरी के साथ अपडेट किया गया है। वहीं, इसको लेकर एक और अपडेट आ गई है। अब इसे 5-स्टार सेफ्टी रेटिंग मिली है। भारत NCAP ने घोषणा की है कि नई लॉन्ग रेंज को पिछले वर्जन की तरह ही पूरे सेफ्टी रेटिंग मिले हैं। वहीं, इसके स्कोर में भी किसी तरह का बदलाव नहीं हुआ है। आइए जानते हैं कि भारत NCAP के क्रैश टेस्ट में Tata Nexon EV को कितनी सुरक्षित निकली?

अडल्ट ऑक्यूपेंट प्रोटेक्शन

नई Tata Nexon EV को वयस्क यात्री सुरक्षा के लिए 32 में 29.86 पॉइंट मिले हैं। वहीं, फ्रंटल ऑफसेट डिफॉर्मेबल बैरियर टेस्ट में 16 में से 14.26 पॉइंट मिले हैं। साइड डिफॉर्मेबल बैरियर टेस्ट में 16 में से 15.60 पॉइंट मिले हैं।

नई Tata Nexon EV के फ्रंटल ऑफ़सेट डिफॉर्मेबल बैरियर टेस्ट में चालक के सिर, गर्दन, श्रोणि और जांघों और पैरों को अच्छी सेफ्टी मिली है। वहीं, चालक के छाती और टिबिया को 'पर्याप्त' रेटिंग मिली है। को-पैसेंजर के सिर, गर्दन, छाती, श्रोणि जांघों और बाएं टिबिया को अच्छी सुरक्षा मिली है। इसके साइड पोल इम्पैक्ट टेस्ट में ड्राइवर के सभी हिस्सों को अच्छी सुरक्षा दी है। वहीं, साइड मूवेबल डिफॉर्मेबल बैरियर टेस्ट में छाती क्षेत्र को पर्याप्त सुरक्षा मिली है। वहीं, शरीर के बाकी हिस्सों को अच्छा सुरक्षा रेटिंग मिली है।

चाइल्ड ऑक्यूपेंट प्रोटेक्शन

नई Tata Nexon EV को चाइल्ड ऑक्यूपेंट प्रोटेक्शन टेस्ट में 49 में 44.95 पॉइंट मिले हैं। वहीं, इसे डायनेमिक स्कोर में 24 में से 23.95 पॉइंट, चाइल्ड रेस्ट्रेंट सिस्टम (CRS) इंस्टॉलेशन स्कोर में 12 में से 12 पॉइंट और वाहन मूल्यांकन स्कोर में 13 में से 9 पॉइंट मिले हैं।

नए Nexon EV वेरिएंट ने चाइल्ड रेस्ट्रेंट सिस्टम का इस्तेमाल करके डायनेमिक टेस्ट में 24 में से 23.95 पॉइंट स्कोर हासिल किया है। 18 महीने के बच्चे और 3 साल के बच्चे की डमी की साइड प्रोटेक्शन के लिए, डायनेमिक स्कोर 4 में से 4 स्कोर मिला है। वहीं, 18 महीने के बच्चे की फ्रंट प्रोटेक्शन 8 में से 7.95 पॉइंट और 3 साल के बच्चे की डमी ने अपने टेस्ट में पूरे पॉइंट मिले हैं।

Tata Nexon EV के सेफ्टी फीचर्स

इसमें छह एयरबैग, इलेक्ट्रॉनिक स्थिरता नियंत्रण (ईएससी) और एक 360-डिग्री कैमरा, ISOFIX चाइल्ड सीट एंकरेज, फ्रंट और रियर पार्किंग सेंसर के साथ-साथ टायर प्रेशर मॉनिटरिंग सिस्टम (TPMS) जैसे बेहतरीन सेफ्टी फीचर्स पैसेंजर की सुरक्षा के लिए दिए जाते हैं।

बैटरी पैक और इलेक्ट्रिक मोटर स्पेसिफिकेशन

नई Tata Nexon EV को दो बैटरी पैक 30 kWh और 45 kWh के साथ पेश किया जाता है। इसे हाल ही में 45 kWh बैटरी पैक के साथ अपडेट किया गया है। यह एक इलेक्ट्रिक मोटर के साथ आता है, जो 145 PS की पावर और 215 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसकी बैटरी फुल चार्ज होने के बाद 489 km किमी तक की रेंज देती है।

कीमत और प्रतिद्वंद्वी

Tata Nexon EV को भारतीय बाजार में 12.49 लाख रुपये से 17.19 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में ऑफर किया जाता है। भारत में इसका मुकाबाल महिंद्रा XUV400 और MG विंडसर ईवी से होता है।

टाटा हैरियर के बेस वेरिएंट को है घर लाना, दो लाख रुपये की अग्रिम भुगतान के बाद जाएगी कितनी ईएमआई

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। भारत की प्रमुख वाहन निर्माता Tata Motors की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता मिड साइज एसयूवी के तौर पर Tata Harrier को ऑफर करती है। इसके बेस वेरिएंट को खरीदकर घर लाने का मन बना रहे हैं, तो सिर्फ दो लाख रुपये की Down Payment करने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देकर मिड साइज सेगमेंट की एसयूवी को घर लाया जा सकता है। आइए जानते हैं।

Tata Harrier Price

Tata Motors की ओर से SUV सेगमेंट में Tata Harrier को ऑफर किया जाता है। इसके बेस वेरिएंट को 15 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर खरीदा जा सकता है। इसे दिल्ली में खरीदने पर ऑन रोड कीमत करीब 17.40 लाख रुपये हो जाती है। इस कीमत में 15 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत के अलावा करीब 1.52 लाख रुपये आरटीओ और इंश्योरेंस के करीब 72 हजार रुपये देने होंगे। टीसीएस चार्ज के तौर पर 15 हजार रुपये भी दिए जाएंगे।

दो लाख रुपये Down Payment के बाद कितनी EMI

अगर इस गाड़ी के बेस वेरिएंट को आप खरीदते हैं, तो बैंक की ओर से एक्स शोरूम कीमत पर ही फाइनेंस किया जाएगा। ऐसे में दो लाख रुपये की डाउन पमेंट करने के बाद आपको करीब 15.40 लाख रुपये की राशि को बैंक से फाइनेंस करवाना होगा। बैंक की ओर से अगर आपको नौ फीसदी ब्याज के साथ सात साल के लिए 15.40 लाख रुपये दिए जाते हैं, तो हर महीने सिर्फ

24785 रुपये हर महीने की EMI आपको अगले सात साल के लिए देनी होगी।

कितनी महंगी पड़ेगी कार

अगर आप नौ फीसदी की ब्याज दर के साथ सात साल के लिए 15.40 लाख रुपये का बैंक से Car Loan लेते हैं, तो आपको सात साल तक 24785 रुपये की EMI हर महीने देनी होगी। ऐसे में सात साल में आप Tata Harrier के लिए करीब 5.41 लाख रुपये बतौर ब्याज देंगे। जिसके बाद आप कार की कुल कीमत एक्स शोरूम, ऑन रोड और ब्याज मिलाकर करीब 22.81 लाख रुपये देंगे।

किनसे होगा मुकाबला

Tata Motors ओर से Harier को मिड साइज एसयूवी सेगमेंट में बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। इसका सीधा मुकाबला Tata Safari के अलावा Hyundai Creta, Maruti Grand Vitara, Mahindra Scorpio, Kia Seltos, Honda Elevate जैसी मिड साइज एसयूवी के साथ होता है।

टोयोटा कर रही नई सात सीटों वाली एसयूवी लाने की तैयारी, लॉन च से पहले टेस्टिंग के दौरान देखी गई गाड़ी

परिवहन विशेष न्यूज

जापान की वाहन निर्माता Toyota की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री भारतीय बाजार में की जाती है। निर्माता की ओर से जल द ही नई गाड़ी के तौर पर सात सीटों वाली एसयूवी को लाने की तैयारी की जा रही है। मीडिया रिपोर्ट्स से एसयूवी को लेकर क या जानकारी सामने आई है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। जापानी वाहन निर्माता टोयोटा भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री करती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक टोयोटा की ओर से जल्द ही नई एसयूवी को लॉन्च किया जा सकता है। किस सेगमेंट में किस एसयूवी को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। रिपोर्ट्स से किस तरह की जानकारी सामने आई है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

लॉन्च होगी नई एसयूवी

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक टोयोटा की ओर से जल्द ही नई एसयूवी को लॉन्च किया जा सकता है। लॉन्च से पहले एसयूवी को टेस्ट किया जा रहा है और इसी दौरान इसकी फोटो सामने आई हैं।

क या मिली जानकारी

रिपोर्ट्स के मुताबिक टोयोटा की नई एसयूवी को सात सीटों वाले सेगमेंट में लाया जाएगा। खास बात यह है कि पहली बार है जब टोयोटा की सात सीटों वाली एसयूवी को टेस्टिंग के दौरान देखा गया है। यह एसयूवी ग्रैंड विटारा का सात सीटों वाला वर्जन होगा। एसयूवी को टेस्टिंग के दौरान पूरी तरह से ढका गया है, जिससे इसके फीचर्स और डिजाइन की पूरी जानकारी नहीं मिल पाई, लेकिन रियर में एग्जॉस्ट पाइप दिया गया था, जिससे यह अंदाजा लगाया जा रहा है कि इसे अर्बन क्रूजर हाइराइडर की तरह ही डिजाइन और क्षमता के साथ लाया जा सकता है।

मिल सकते हैं ये फीचर्स

निर्माता की ओर से अपनी नई एसयूवी में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जा सकता है। इसमें ADAS, ज्यादा प्रीमियम इंटीरियर के साथ ही उन फीचर्स के साथ ऑफर किया जा सकता है जिनको फिलहाल अर्बन क्रूजर हाइराइडर में ऑफर किया जाता है।

कब तक होगी लॉन्च

टोयोटा की ओर से अभी इस बारे में किसी भी तरह की जानकारी को औपचारिक तौर पर नहीं दिया गया है। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि सात सीटों वाली एसयूवी को भारत में इस साल के आखिर या अगले साल तक लॉन्च किया जा सकता है।

किनसे होगा मुकाबला

भारतीय बाजार में मिड साइज एसयूवी सेगमेंट में सात सीटों के विकल्प के साथ लाया जाएगा। ऐसे में इस एसयूवी का सीधा मुकाबला JSW MG Hector, Mahindra Scorpio N, Mahindra XUV 700, Tata Safari जैसी सात सीटों वाली एसयूवी के साथ होगा।

टेस्ला साइबरट्रक भारत में हुई स्पॉट, क्या भारत में लॉन्च होगी टेस्ला की ये पॉपुलर कार

परिवहन विशेष न्यूज

हाल ही में Tesla Cybertruck को भारत में स्पॉट किया गया है। इसे एक लॉरी के ऊपर एक जगह से दूसरी जगह पर लेकर जाते हुए देखा गया है। जिसके बाद से अब उम्मीद लगाई जा रही है कि टेस्ला साइबरट्रक भी भारत में लॉन्च होगी। दरअसल इस साल के आखिर तक भारत में टेस्ला की इलेक्ट्रिक कारें लॉन्च होने वाली है।

नई दिल्ली। इलेक्ट्रिक कार निर्माता कंपनी टेस्ला जल्द ही भारत में एंट्री मारने वाली है। वहीं, कंपनी मुंबई के BKC इलाके में अपना पहला शोरूम भी खोलने जा रही है। वहीं, कंपनी की Model Y को भारत में कई बार टेस्टिंग के दौरान स्पॉट भी किया जा चुका है। वहीं, अब कंपनी की पॉपुलर कार Tesla Cybertruck को स्पॉट किया गया है। आइए जानते हैं कि क्या भारत में साइबर ट्रक लॉन्च हो सकती है? क्या कंपनी भारत को इलेक्ट्रिक पिकअप ट्रक लॉन्च करनेके लिए एक अच्छा बाजार मानती है? या फिर कोई और ही बात है। वहीं, भारत में साइबरट्रक का भारत के लिए क्या मतलब हो सकता है?

Tesla Cybertruck हुई स्पॉट

टेस्ला साइबरट्रक को एक लॉरी के ऊपर लोड हुआ देखा गया है, जो उसे कही पर लेकर जा रही है। इससे पहले कि आप भारत में संभावित साइबरट्रक लॉन्च के बारे में अपनी उम्मीदें बढ़ाएं। हम आपको बता देते हैं कि जो इसपर नंबर प्लेट लगा हुआ है, वो बताता है कि यह दुबई में रजिस्टर है और इसका कार्नेट सेवा के माध्यम से भारत में आयात किए जाने की अत्यधिक संभावना है।

पहले भी Carnet सर्विस के जरिए इस तरह के कई गाड़ियों को देश में आयात किया जा चुका है। इसका भारत में लॉन्च होने की संभावना काफी कम है। इसका डिजाइन काफी फ्यूचरिस्टिक है, जो लोगों को अपनी तरफ आकर्षित करते हैं।

क्या भारत में हो सकती है लॉन्च?

Tesla Cybertruck में बड़ा फ्रंट विंडशील्ड, एक पूरी चौड़ाई वाली एलईडी लाइट बार, फ्लेयर्ड व्हील आर्च, एक सिंगल-पीस फ्रंट विंडशील्ड, विशाल एलॉय व्हील, पीछे एक लोड बेड दी गई है। इसमें पावर्ड टोन्यू कवर है। इसमें बुलेट-प्रूफ बाहरी बॉडी पैनल और बहुत कुछ दिया जाता है।

इसके इंटीरियर में बहुत सारे फंक्शनल बटन मिलत हैं, जिसमें से कई तो सेंट्रल टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट स्क्रीन में है। इसमें कोई इंस्ट्रूमेंट स्क्रीन भी नहीं है। इसमें कूल फैक्टर के लिए फ्रेमलेस विंडो और फ्लश डोर हैंडल दिया गया है।

कार की लंबाई 5,681 मिमी, चौड़ाई 2,200 मिमी, ऊंचाई 1,793 मिमी है और इसमें एक्सट्रैक्ट मोड में इसका ग्राउंड क्लीयरेंस 406 मिमी मिलता है। बैटरी की कैपेसिटी 124 kWh तक जाती है और AWD की पीक पावर 600 bhp तक जा सकती है। इसकी बैटरी एक बार चार्ज होने के बाद 563 किमी तक की रेंज दे सकती है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने पुस्तकालय में पुस्तकों से सीखने की हमारी जिज्ञासा को बुरी तरह प्रभावित किया है

विजय गर्ग

सदियों से, दुनिया भर में हमारे पुस्तकालय शिक्षा और वैज्ञानिक अनुसंधान को बढ़ावा देने के साथ-साथ हमारी संस्कृति और इतिहास को भी संरक्षित कर रहे हैं। पुस्तकों, शोध पत्रों और पत्रिकाओं के पुस्तकालय संसाधन बिना किसी भय या पक्षपात के सभी को समान जानकारी प्रदान करते हैं। पुराने समय के कई साहित्यिक दिग्गजों, वैज्ञानिकों और विद्वानों को पुस्तकालयों में नियमित रूप से जाने की आदत से लाभ मिला है, जहां उन्हें पुस्तकों के प्राचीन खजाने के साथ-साथ हर विषय पर समकालीन पुस्तकों का भंडार भी मिलता है।

जिन लोगों के पास पुस्तकें खरीदने के लिए वित्तीय साधन नहीं होते, वे नई पुस्तकें पढ़ने के लिए हमेशा सार्वजनिक पुस्तकालयों पर निर्भर रहते हैं। इस सूचना प्रौद्योगिकी युग में, पुस्तकालयों ने पुस्तकों और अन्य संसाधनों को डिजिटल डेटाबेस में परिवर्तित करना शुरू कर दिया है। कई विकसित देशों में पुस्तकालय भी सर्वोत्तम सामुदायिक केन्द्रों में से एक साबित हुए हैं, जहां लोग सामुदायिक आयोजनों, कार्यशालाओं और कार्यक्रमों के लिए एक साथ आते हैं। बेहतर नागरिक भागीदारी और सामाजिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए पुस्तकालय ऐसी बैठकों में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके बावजूद, विकासशील देशों ने सामाजिक विकास को बढ़ाने के लिए पुस्तकालय संस्थाओं का अभी तक पर्याप्त लाभ नहीं उठाया है।

हमारे पास सार्वजनिक पुस्तकालयों की संख्या भले ही बड़ी हो, लेकिन दुख की बात है कि भारत में हम पुस्तकालय संचालन के मामले में अंतर्राष्ट्रीय मानकों से कई गुना पीछे हैं। वे पाठक-अनुकूल नहीं हैं। पुस्तकालयों के प्रति सरकारों और विश्वविद्यालयों की उदासीनता ने हमारे देश में अध्ययन और बौद्धिक अनुसंधान के लिए पुस्तकालय संसाधनों की उपयोगिता को बेहद कम कर दिया है। पुस्तकों के माध्यम से इन ढहती हुई शिक्षण संस्थाओं को बचाने के लिए कोई गंभीर प्रयास नहीं किए गए हैं।

केवल हमारे छात्र ही नहीं, बल्कि शिक्षक भी हर क्षेत्र में इंटरनेट पर उपलब्ध अप्रमाणिक और अवैध सूचनाओं के हमले का शिकार हो रहे हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने पुस्तकालय में पुस्तकों से सीखने की हमारी जिज्ञासा को बुरी तरह प्रभावित किया है। हमारे पुस्तकालयों में हमें एक ही स्थान और समय पर एक ही विषय पर अनेक पुस्तकें, पत्रिकाएं, शोध पत्र, संदर्भ पुस्तकें मिल जाती हैं। सामान्य पाठक और शोधकर्ता इंटरनेट पर वास्तविक जानकारी से अनभिज्ञ रहते हैं, जबकि पुस्तकालय में उन्हें अध्ययन के विषय पर विविध जानकारी मिल सकती है।

हमारे शिक्षक और छात्र दोनों ने अपनी मौलिक सोच खो दी है, जो एक परिपक्व समाज के लिए हमारे युवा मस्तिष्क के विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। टी.वी. और बेलगाम पक्षपातपूर्ण सोशल मीडिया ने हमारी वह शांति छीन ली है जो हमें पहले अखबार या लाइब्रेरी में किताब पढ़कर मिलती थी। यहां, भले ही हम भारत को पुनः महान बनाने की बात करते हैं, लेकिन हम शायद ही कभी महसूस करते हैं कि भारत में पुस्तकालय और पुस्तक पढ़ने की संस्कृति तेजी से खत्म हो रही है। हमें अपनी पुस्तकालय प्रणाली को सुचारू बनाने तथा एक बार फिर से पढ़ने की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए तत्काल हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

यहां तक कि स्कूलों और कॉलेजों में किताबों की अलमारियाँ भी बंद रहती हैं। चाहे विश्वविद्यालय परिसर हों, कॉलेज और स्कूल हों या नगरपालिका या पंचायत पुस्तकालय हों, सभी में मूल्यवान पुस्तकें हैं। पुस्तकालयों को केन्द्रीय एवं राज्य वित्त पोषण प्राप्त होता है। दुर्भाग्यवश, पुस्तकालय संसाधनों का उपयोग बहुत कम है। किताबें हमेशा उन आत्माओं से बातचीत करने के लिए तरसती हैं जो उन्हें पढ़ते हैं। आइये उन्हें जगाएं। कुछ सुझाए गए हस्तक्षेप जो हमारे पुस्तकालयों और पठन संस्कृति को सुरक्षित रखने में मदद कर सकते हैं, उनमें शामिल हैं:

पहला कारण यह है कि कई पुस्तकालयों में नियमित रूप से प्रशिक्षित पुस्तकालयाध्यक्ष नहीं होते। स्कूलों और कॉलेजों में पुस्तकालय कर्मचारियों की संख्या भी बहुत कम है। उनका वेतन बहुत कम है और शायद ही कोई ऐसा पुस्तकालयाध्यक्ष हो जो हमारे युवाओं में पढ़ने को प्रोत्साहित करने के लिए कोई सकारात्मक हस्तक्षेप करता हो। सभी कॉलेजों में पुस्तकालय विज्ञान को एक विषय के रूप में भी शामिल किया जाना चाहिए ताकि हम पुस्तकालयों के लिए प्रशिक्षित कार्यबल का आधार तैयार कर सकें।

दूसरा, पुस्तकालयों के खुलने और बंद होने का समय अब तक कार्यालय खोलने के लिए नौकरशाही दिशानिर्देशों के अनुरूप रहा है। नगर निगम के पुस्तकालय सुबह 9 बजे खुलते हैं और

शाम 4 से 5 बजे के बीच बंद हो जाते हैं। पुस्तकालय सप्ताहांत पर बंद रहते हैं, जिनमें शनिवार, रविवार और अन्य अवकाश शामिल हैं। सप्ताहांत और छुट्टियों के दिनों में वाचनालय में समाचार पत्र की सुविधा भी उपलब्ध नहीं कराई जाती है। आमतौर पर हमारे स्कूल और कॉलेज के पुस्तकालय भी इसी पैटर्न का पालन करते हैं। विश्वविद्यालय परिसरों में कुछ पुस्तकालयों के खुले रहने के दुर्लभ अपवाद हो सकते हैं, लेकिन यह दृष्टिकोण अपर्याप्त है। सार्वजनिक पुस्तकालय पाठकों को पूरी तरह निराश कर रहे हैं। पुस्तकालयों को सप्ताह में अधिक दिन और अधिक घंटों तक खुला रहना चाहिए।

तीसरा, अब सार्वजनिक एवं नगरीय पुस्तकालयों तथा विश्वविद्यालयों के सीमित विस्तार पुस्तकालयों में पुस्तक सुरक्षा शुल्क के संग्रह में काफी वृद्धि हुई है। इसके साथ ही सदस्यों से वार्षिक शुल्क के रूप में भारी खर्च भी वसूला जाता है, जिस पर 18% जीएसटी भी लगाया जा रहा है। अब ऐसा लगता है कि सरकारें भी किताबें पढ़कर पैसा कमाना चाहती हैं। हमारे पुस्तकालय इंटरनेट उपयोग के लिए भी शुल्क लेते हैं।

चौथा, अधिकांश सार्वजनिक पुस्तकालयों में बैठने की जगह अपर्याप्त है। पढ़ने के लिए उचित मेज और कुर्सियां, पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था, शौचालय, इंटरनेट संसाधन जैसी बुनियादी सुविधाएं बहुत खराब हैं। दुर्लभ पुस्तकों और धर्मग्रंथों में संदर्भ और ज्ञान के इन खजानों को पहुंच से दूर रखा गया है। पुरानी पुस्तकों को कभी भी छांटा या जनता को नहीं बेचा जाता।

पांचवां, पुस्तक सूचीकरण को डिजिटल बनाने के लिए कोई प्रयास नहीं किए गए। डिजिटल कैटलॉग उपयोगकर्ताओं को शीर्षक, लेखक, विषय या प्रमुख शब्दों के आधार पर पुस्तकों की खोज करने में सहायता करते हैं, जिससे रुचिकर पुस्तकें ढूंढना आसान हो जाता है। डिजिटल कैटलॉग किसी भी समय और कहीं भी उपलब्ध हैं। कई भारतीय सार्वजनिक और विश्वविद्यालय पुस्तकालयों ने दुर्लभ पांडुलिपियों और पुस्तकों को हमेशा के लिए संरक्षित करने के लिए उनके डिजिटलीकरण पर अभी तक कोई जोर नहीं दिया है। पश्चिमी विकसित देशों में पाठक कुछ ही क्लिक से पुस्तकों को ब्राउज़, खोज और यहां तक कि आरक्षित भी कर सकते हैं।

छठा, विकलांग पुस्तकालय उपयोगकर्ता पूरी तरह से उपेक्षित समूह हैं। हमारे पुस्तकालयों में उनके लिए कोई विशेष स्थान या पढ़ने की सुविधा नहीं है। अधिकांश भारतीय पुस्तकालयों में ब्रेल लिपि की पुस्तकें भी नहीं हैं।

सातवें, भारत ने अभी तक बच्चों के लिए विशेष पुस्तकालय खोलने या मौजूदा सार्वजनिक पुस्तकालयों में ऐसा स्थान आरक्षित करने के बारे में नहीं सोचा है। वरिष्ठ नागरिकों और शांति क्षेत्रों के लिए कोई अलग स्थान नहीं है। ऐसी अज्ञानता निराशाजनक है। सार्वजनिक पुस्तकालयों में पुस्तकालय समितियां होनी चाहिए। सार्वजनिक पुस्तकालयों के लिए अलग से वित्तीय बजट आवंटित किया जाना चाहिए।

आइये, हम भारत के पुस्तकालयों में कार्यरत अपने विद्वान मित्रों से कुछ सबक सीखें। हमारे नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर ने अपने नोबेल पुरस्कार की राशि का एक बड़ा हिस्सा कलकत्ता के ग्रामीण इलाकों में पुस्तकालय स्थापित करने के लिए दान कर दिया था और 1925 में अखिल बंगाल पुस्तकालय संघ के पहले अध्यक्ष भी चुने गए थे। पुस्तकालय आंदोलन के अग्रदूतों में से एक थे डॉ. एस.आर. यह रंगनाथन ही थे जिनकी पुस्तकालय विज्ञान की अवधारणाओं को टैगोर ने गांव के पुस्तकालयों में व्यावहारिक रूप दिया। दोनों ने भारत में पुस्तकालय आंदोलन के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रंगनाथन, जिन्हें अक्सर ₹भारत में पुस्तकालय विज्ञान का जनक₹ कहा जाता है, अपने पुस्तकालय विज्ञान के पांच सिद्धांतों के लिए जाने जाते हैं, जो पुस्तकालय प्रथाओं के लिए एक दार्शनिक आधार प्रदान करते हैं।

सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और युद्ध संबंधी समस्याओं से भरी दुनिया में पुस्तकालय और पुस्तकें रक्षक साबित हो सकती हैं। मानवीय चिंताओं के समाधान हमारी पुस्तकों में हैं, क्योंकि उनमें सदियों का ज्ञान समाया हुआ है। हालाँकि, वे हमारी अलमारियों में बंद हैं। हमारे पुस्तकालयों की स्थिति में गिरावट रुकनी चाहिए। आइए, हम अपने पुस्तकालयों में सोई हुई पुस्तकों को जगाकर अपने समाज को निरंतर पतन से बचाएं।

संकट में वन्य जीव

विजय गर्ग

वर्ल्ड वाइल्ड फंड एवं लंदन की जूओलॉजिकल सोसायटी की हालिया रिपोर्ट चिंतित करने वाली है कि 2020 तक धरती से दो तिहाई वन्य जीव खत्म हो जाएंगे। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि दुनिया भर में हो रही जंगलों की अंधाधुंध कटाई, बढ़ते प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन के कारण पिछले चार दशकों में वन्य जीवों की संख्या में भारी कमी आई है। रिपोर्ट के मुताबिक 1970 से 2012 तक वन्य जीवों की संख्या में 58 फीसद की कमी आई है। हाथी और गोरिल्ला जैसे लुप्तप्राय जीवों के साथ-साथ गिद्ध और रेंगने वाले जीव तेजी से खत्म हुए हैं। रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि 2020 तक 67 फीसद वन्य जीवों की संख्या में कमी आ सकती है।

गौरतलब है कि खत्म हो रहे जीवों में जंगली जीव ही नहीं बल्कि पहाड़ों, नदियों व महासागरों में रहने वाले जीव भी शामिल हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि 1970 से अब तक इन जीवों की संख्या में तकरीबन 81 फीसद की कमी आई है। जलीय जीवों के अवैध शिकार के कारण तीन सौ प्रजातियां विलुप्त होने के कगार पर पहुंच चुकी हैं। जलीय जीवों के नष्ट होने का एक अन्य कारण फफूंद संक्रमण और औद्योगिक इकाइयों का प्रदूषण भी है। इसके अलावा प्राकृतिक आपदाएं, विभिन्न प्रकार के रोग, जीवों की प्रजनन क्षमता में कमी भी प्रमुख कारण हैं। इन्हीं कारणों की वजह से यूरोप के समुद्र में ह्वेल और डॉल्फिन जैसे भारी-भरकम जीव तेजी से खत्म हो रहे हैं। एक आंकड़े के मुताबिक भीड़-बकरियों जैसे जानवरों के उपचार में दी जा रही खतरनाक दवाओं के कारण भी पिछले बीस सालों में दक्षिण-पूर्व एशिया में गिद्धों की संख्या में कमी आई है। भारत में ही पिछले एक दशक में पर्यावरण को बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले गिद्धों की संख्या में 97 फीसद की गिरावट दर्ज की गई है। गिद्धों की कमी से मृत पशुओं की सफाई, बीजों का प्रकीर्णन और परागण कार्य बुरी तरह प्रभावित हो रहा है और किस्म-किस्म की बीमारियां तेजी से पनप रही हैं। गिद्धों की तरह अन्य प्रजातियां भी तेजी से विलुप्त हो रही हैं।

वैज्ञानिकों का निष्कर्ष है कि पेड़ों की अंधाधुध कटाई और जलवायु में हो रहे बदलाव के कारण कई जीव जातियां धीरे-

धीरे ध्रुवीय दिशा या उच्च पर्वतों की ओर विस्थापित हो सकती हैं। अगर ऐसा हुआ तो फिर विविधता और पारिस्थितिकी अभिक्रियाओं पर उसका नकारात्मक असर पड़ना तय है। यह आशंका इसलिए अकारण नहीं है कि पृथ्वी पर करीब बारह करोड़ वर्षों तक राज करने वाले डायनासोर नामक दैत्याकार जीव के समाप्त होने का कारण मूलतः जलवायु परिवर्तन ही था। अगर जलवायु परिवर्तन को गंभीरता से नहीं लिया गया तो आने वाले वर्षों में धरती से जीवों का अस्तित्व मिटना तय है।

धरती के साथ मानव का निष्ठुर व्यवहार बढ़ता जा रहा है जो कि जीवों के अस्तित्व के प्रतिकूल है। वैज्ञानिकों का कहना है कि बारह हजार वर्ष पहले हिमयुग के खत्म होने के बाद होलोसीन युग शुरू हुआ था। इस युग में धरती पर मानव सभ्यता ने जन्म लिया। इसमें मौसम चक्र स्थिर था, इसलिए स्थलीय और जलीय जीव पनप सके। लेकिन बीसवीं सदी के मध्य से जिस तरह परमाणु ऊर्जा के प्रयोग का दौर शुरू हुआ है और बड़े पैमाने पर जंगलों की कटाई हो रही है उससे होलोसीन युग की समाप्ति का अंदेशा बढ़ गया है। उसी का असर है कि आज वन्य जीव अस्तित्व के संकट से गुजर रहे है।

वन्य जीवों के वैश्विक परिदृश्य पर नजर डालें तो पृथ्वी के समस्त जीवधारियों में से ज्ञात तथा वर्णित जातियों की संख्या लगभग अठारह लाख है। लेकिन यह संख्या वास्तविक संख्या के तकरीबन पंद्रह फीसद से कम है। उसका कारण लाखों जीवों के बारे में जानकारी उपलब्ध न होना है। ऐसा माना जाता है कि पृथ्वी पर विद्यमान कुल जातियों की संख्या पचास लाख से पांच करोड़ के बीच है। इनमें अधिकांश का वर्णन व नामकरण अब भी नहीं हो सका है। जबकि जीव जातियों की पहचान व इनके नामकरण का क्रमबद्ध कार्य पिछले ढाई सौ वर्षों से जारी है।

जहां तक भारत का सवाल है, तो यहां विभिन्न प्रकार के जीव बड़ी संख्या में पाए जाते हैं। जीवों की लगभग पचहत्तर हजार प्रजातियां यहां पाई जाती हैं। इनमें तकरीबन 350 स्तरनधारी, 1250 पक्षी, 150 उभयचर, 2100 मछलियां, 60 हजार कीट व चार हजार से अधिक मोलस्क व रीढ़ वाले जीव हैं। भारत में जीवों के संरक्षण के लिए कानून बने हैं। इसके बावजूद जीवों का संहार जारी है। जैव विविधता को बचाने के लिए आवश्यक है कि जीवों को बचाया जाए। जैव विविधता एक ऐसा प्राकृतिक संसाधन है जो यदि एक बार समाप्त हो गया तो उसे दोबारा नहीं बनाया जा सकता। अर्थात इसका विलुप्तिकरण सदैव के लिए हो जाता है।

गौर करें तो जीवों पर बढ़ते संकट का मुख्य कारण वायुमंडल के तापमान का बढ़ना, प्रदूषण का बढ़ता स्तर, जंगलों तथा भूमि का व्यापक कटाव, मनुष्यों की अदूरदर्शिता, क्लोनिंग व जैव तकनीक का बढ़ता प्रयोग तथा उच्च स्तरीय और कीट-प्रतिरोधी बीजों का विकास आदि हैं। अस्तिव के संकट में फंसे जीवों को बचाने के लिए जरूरी है कि धरती के बढ़ते तापमान और प्रदूषण की रोकथाम की ठोस पहल हो। जिस गति से धरती का तापमान बढ़ रहा है उससे आने वाले दिनों में वन्य जीवों का संकट गहरा सकता है। लिहाजा, उनके संरक्षण के लिए विशिष्ट परियोजनाएं बनाई जाएं तथा वनों की अंधाधुंध कटाई पर रोक लगे। इसके अलावा, वन क्षेत्र को कम करके कृषि विस्तार की योजनाओं पर भी रोक लगनी चाहिए। 'स्थानांतरण खेती' को नियंत्रित किया जाए तथा यदि संभव हो तो उसे समाप्त ही कर दिया जाए। नगरों के विकास के लिए भी वनों की कटाई पर रोक लगनी चाहिए।

लेकिन त्रासदी है कि संपूर्ण विश्व में बड़े पैमाने पर वनों की कटाई जारी है। इस तरह हम देखते हैं कि जलवायु बदलाव के संकट के मूल में विकास का प्रचलित मॉडल है जो संसाधनों के अंधाधुंध दोहन पर आश्रित है। 'ग्लोबल फॉरेस्ट रिसोर्स एसेसमेंट' (जीएफआरए) की ताजा रिपोर्ट बताती है कि 1990 से 2015 के बीच कुल वन क्षेत्र तीन फीसद घटा है और 102,000 लाख एकड़ से अधिक का क्षेत्र 98,810 लाख एकड़ तक सिमट ढाई सौ वर्षों से चल रहा है। यानी 3,190 लाख एकड़ वनक्षेत्र में कमी आई है। गौर करें तो यह क्षेत्र दक्षिण अफ्रीका के आकार के बराबर है। रिपोर्ट में कहा गया है कि प्राकृतिक वनक्षेत्र में छह फीसद की कमी आई है। उष्ण कटिबंधीय वन क्षेत्रों की स्थिति और भी दयनीय है। यहां सबसे अधिक दस फीसद की दर से वन क्षेत्र का नुकसान हुआ है। ये हालात तब हैं जब एक दशक से पर्यावरणीय सुरक्षा को लेकर सतत प्रयास जारी है।

एक अनुमान के मुताबिक वैश्विक समुदाय विकास के नाम पर प्रत्येक वर्ष सात करोड़ हेक्टेयर वनक्षेत्र का विनाश कर रहा है। वैज्ञानिकों का कहना है कि वनों के विनाश से वातावरण जहरीला होता जा रहा है और प्रतिवर्ष दो अरब टन अतिरिक्त कार्बन-डाइआक्साइड वायुमंडल में घुल-मिल रहा है। इससे जीवन का सुरक्षा कवच मानी जाने वाली ओजोन परत को नुकसान पहुंच रहा है। 'नेचर जिओसाइंस' का कहना है कि ओजोन परत को होने वाले नुकसान से कुछ खास किस्म के अत्यंत अल्पजीवी तत्त्वों (वीएसएलएस) की संख्या में वृद्धि हुई है जो वन्य जीवों व मानव जाति के अस्तित्व के लिए बेहद खतरनाक है। वैज्ञानिकों का कहना है कि इन खास किस्म के अत्यंत अल्पजीवी तत्त्वों (वीएसएलएस) की ओजोन को नुकसान पहुंचाने में भागीदारी नब्बे फीसद है। विडंबना यह कि एक ओर प्राकृतिक आपदाओं से जीव-जंतुओं की प्रजातियां नष्ट हो रही हैं, वहीं रही-सही कसर इंसानी लालच और उसका शिकार का शौक पूरा कर दे रहा है। अभी पिछले दिनों ही इंटरनेशनल फंड फॉर एनिमल वेलफयर ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि पिछले एक दशक में प्रतीक के लिए दुनिया भर में सत्रह लाख वन्य जीवों का शिकार (ट्राफी हंटिंग) किया गया। इनमें दो लाख विलुप्तप्राय जीव हैं।

दरअसल, इन वन्य जीवों के शिकारी जीवों के अंगों को महंगी कीमतों पर बेचते हैं। अंतरराष्ट्रीय बाजार में इनकी मुंहमांगी कीमत मिलती है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में एक हाथी मारने की कीमत पच्चीस से साठ हजार डॉलर है। इसी तरह एक बाघ साढ़े आठ हजार से पचास हजार और तेंदुआ पंद्रह से पैंतीस हजार डॉलर तक है। दुर्भाग्यपूर्ण यह कि शौक के लिए शिकार यानी ट्राफी हंटिंग को अमेरिका समेत दुनिया के कई देशों ने मान्यता दे रखी है। ट्राफी हंटिंग में अमेरिकी शिकारी सबसे आगे हैं। एक आंकड़े के मुताबिक पिछले एक दशक में दुनिया भर में ग्यारह हजार बाघों का शिकार किया गया जिनमें पचास फीसद बाघों को अमेरिकी शिकारियों ने मारा है। आश्चर्य की बात यह है कि इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन यह तर्क दे रहा है कि अगर कानूनी दायरे में ट्राफी हंटिंग हो तो वन्य जीवों के संरक्षण में मदद मिलेगी और जीवों की आबादी नियंत्रित होगी। साथ ही स्थानीय लोगों को आर्थिक फायदा भी पहुंचेगा। लेकिन यह दलील सही नहीं है। सच यह है कि इससे वन्य जीवों की संख्या में कमी आएगी और पहले से ही लुप्त हो रहे जीवों का अस्तित्व मिट जाएगा।

कक्षा 10 वीं के बाद आईएएस अधिकारी (युपीएसई) कैसे बनें

विजय गर्ग

भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) अधिकारी बनने का सपना देखना भारत में कई युवा दिमागों के लिए एक आम आकांक्षा है। जल्दी शुरू करने से आप अपनी तैयारी में एक महत्वपूर्ण सिर शुरू कर सकते हैं और सिविल सेवाओं में एक सफल कैरियर का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। इस व्यापक गाइड में, हम आपको कक्षा 10 वीं के बाद आईएएस अधिकारी बनने के अपने सपने को आगे बढ़ाने के लिए कदम, रणनीतियों और विचारों के माध्यम से चलेंगे।

परिचय भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) अधिकारी बनना भारत में कई लोगों के लिए एक सपना है। यह एक प्रतिष्ठित स्थिति है जो राष्ट्र की सेवा करने और समाज पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालने का मौका देती है। जबकि सामान्य पथ में स्नातक की डिग्री पूरी करना शामिल है, यह एकमात्र तरीका नहीं है। इस गाइड में, हम यह पता लगाएंगे कि कक्षा 10 वीं के बाद आईएएस अधिकारी बनने की यात्रा कैसे शुरू कर सकती है।

आईएएस परीक्षा प्रक्रिया कक्षा 10 वीं के बाद आईएएस अधिकारी बनने की दिशा में पहला कदम परीक्षा प्रक्रिया को समझ रहा है। संघ लोक सेवा आयोग सिविल सेवा परीक्षा आयोजित करता है, जिसमें आईएएस परीक्षा शामिल है। परीक्षा में तीन चरण होते हैं: प्रारंभिक परीक्षा, मुख्य परीक्षा और व्यक्तित्व परीक्षण (साक्षात्कार)। आगे जाने से पहले हमें यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के पैटर्न को यूपीएससी परीक्षा के बारे में एक तस्वीर देने के लिए अवलोकन के रूप में समझना चाहिए। युपीएसई आईएएस परीक्षा में तीन चरण होते हैं: प्रारंभिक, मेन्स और साक्षात्कार।

प्रारंभिक परीक्षा, जिसे आमतौर पर प्रीलिम्स के रूप में जाना जाता है, सीएसई का पहला चरण है। इसमें दो वस्तुनिष्ठ प्रकार के पेपर होते हैं: सामान्य अध्ययन पेपर- I और सामान्य अध्ययन पेपर- II (सिविल सेवा एप्टीट्यूड टेस्ट या सी-सैट)। प्रीलिम्स एक स्क्रीनिंग टेस्ट के रूप में काम करते हैं, और केवल जो अर्हता प्राप्त करते हैं वे मुख्य परीक्षा के लिए उपस्थित होने के पात्र हैं।

मुख्य परीक्षा सीएसई का दूसरा चरण है और इसमें एक लिखित परीक्षा होती है जिसके बाद एक व्यक्तित्व परीक्षण (साक्षात्कार) होता है। मुख्य परीक्षा में नौ व्यक्तिपरक पेपर शामिल हैं, जिनमें चार सामान्य अध्ययन पत्र, दो वैकल्पिक पेपर (उम्मीदवार द्वारा चयनित), एक निबंध पेपर और दो भाषा के पेपर (एक योग्यता और एक रैंकिंग के लिए नहीं गिना जाता है) शामिल हैं। मुख्य परीक्षा एक उम्मीदवार के गहन ज्ञान और विभिन्न विषयों की समझ का आकलन करती है।

सीएसई का अंतिम चरण व्यक्तित्व परीक्षण है, जिसे आमतौर पर साक्षात्कार के रूप में जाना जाता है। यह यूपीएससी बोर्ड द्वारा उम्मीदवार के व्यक्तित्व लक्षण, संचार कौशल और सिविल सेवाओं के लिए उपयुक्तता का आकलन करने के लिए आयोजित किया जाता है। साक्षात्कार उन विशेषज्ञों के एक पैनल द्वारा आयोजित किया जाता है जो उम्मीदवार के समग्र व्यवहार, दृष्टिकोण और चुनौतीपूर्ण स्थितियों को संभालने की क्षमता का मूल्यांकन करते हैं। प्रतिष्ठित सिविल सेवा पदों के लिए उम्मीदवारों के अंतिम चयन को निर्धारित करने में साक्षात्कार का दौर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

कक्षा 10 से शुरू होने और एक मजबूत फाउंडेशन स्थापित करने के लाभ आईएएस परीक्षा युपीएसई सिविल सेवा परीक्षा के तहत आयोजित की जाती है। यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा की आधिकारिक अधिसूचना के अनुसार जो आईएएस अधिकारी बनने का एकमात्र तरीका है, इस परीक्षा में बैठने के लिए न्यूनतम योग्यता के रूप में स्नातक की आवश्यकता होती है। कक्षा 10 वीं से तैयारी करने से निम्नलिखित लाभ मिलते हैं:

पर्याप्त समयः कक्षा 10 वीं से तैयारी शुरू करने से छात्रों को आईएएस परीक्षा की नींव बनाने और विषयों को समझने के लिए अतिरिक्त समय मिलता है। स्ट्रांग फाउंडेशनः कक्षा 10 के बाद से इतिहास, भूगोल, राजनीति और अर्थशास्त्र जैसे मुख्य विषयों में एक मजबूत नींव का निर्माण लंबे समय में मदद करता है। आदत निर्माणः अच्छी अध्ययन की आदतों और समय प्रबंधन कौशल को जल्दी विकसित करने से परीक्षा की तैयारी की प्रक्रिया को संभालना आसान हो जाता है। संकल्पना स्पष्टताः इन विषयों के प्रारंभिक संपर्क यूपीएससी परीक्षा में परीक्षण की गई अवधारणाओं की गहरी समझ के लिए अनुमति देता है। विभिन्न विकल्प- जैसा कि हमने देखा है कि प्रीलिम्स और मेन्स परीक्षा में सामान्य अध्ययन और वैकल्पिक विषय दोनों होते हैं, इसलिए उम्मीदवारों के पास विभिन्न विषयों की कोशिश करने और एक आरामदायक विषय के साथ आने के लिए पर्याप्त समय होता है। स्ट्रीम चयन लचीलापन- 10 वीं कक्षा से तैयारी शुरू करने वाले उम्मीदवार 11 वीं कक्षा से अपनी स्ट्रीम का चयन कर सकते हैं और इसे स्नातक स्तर की पढ़ाई तक ले जा सकते हैं, जो आगामी यूपीएससी मुख्य परीक्षा के दौरान, उन्हें एक अतिरिक्त धक्का दे सकते हैं।

कक्षा 10 के बाद आईएएस का पीछा करने का रास्ता हालांकि उम्मीदवार कक्षा 10 वीं के बाद आईएएस परीक्षा के लिए अपनी तैयारी शुरू कर सकते हैं, लेकिन उन्हें अपनी कक्षा 12 वीं की शिक्षा पूरी करने की आवश्यकता है। परीक्षा में शामिल विविध विषयों को समझने और महत्वपूर्ण सोच और विश्लेषणात्मक कौशल विकसित करने के लिए एक मजबूत शैक्षिक नींव आवश्यक है।

समाशोधन कक्षा 10 वीं की परीक्षाः उम्मीदवार की पहली प्राथमिकता अपनी कक्षा 10 वीं पूरी करनी चाहिए। 10 वीं पूरी करने के बाद छात्रों को कक्षा 11 वीं के लिए एक स्ट्रीम या विषय चुनने की आवश्यकता होती है। स्ट्रीम चुननाः अपनी कक्षा 11 वीं में स्ट्रीम चुनने से पहले उम्मीदवार को आईएएस परीक्षा के पाठ्यक्रम और मानदंडों की सावधानीपूर्वक समीक्षा करनी चाहिए। उदाहरण के लिए यदि उसकी रुचि इतिहास, भूगोल और राजनीति में है तो उसे मानविकी के साथ जाना चाहिए यदि उसकी रुचि गणित में है तो उसे विज्ञान स्ट्रीम के साथ जाना चाहिए। उम्मीदवार के हित के अनुसार एक स्ट्रीम चुनना 10 वीं कक्षा के बाद का प्रारंभिक चरण है। समाशोधन कक्षा 12 वीं: जब कोई उम्मीदवार कक्षा 12 वीं की परीक्षा को सफलतापूर्वक उत्तीर्ण करता है, तो उम्मीदवार को भारत में किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय, कॉलेज या संस्थान से स्नातक (किसी भी स्ट्रीम में) करना आवश्यक होता है। ग्रेजुएशन के दौरान तैयारीः अपनी स्कूली शिक्षा या स्नातक के दौरान, आईएएस परीक्षा के लिए कुछ मूलभूत पाठ्यक्रम लेने पर विचार करें, जिससे आपके चुने हुए विषयों और आपकी आईएएस तैयारी दोनों को लाभ होगा। अपने स्नातक स्तर की पढ़ाई के बाद, आमतौर पर 3-4 वर्षों के बाद, आप एक वर्ष के लिए पूर्णकालिक आईएएस कोचिंग का विकल्प चुन सकते हैं यदि आपको लगता है कि यह फायदेमंद होगा, या आप आत्म-अध्ययन शुरू कर सकते हैं। युपीएसई सीएसई परीक्षा प्रक्रियाः कोचिंग अवधि के बाद या पर्याप्त तैयारी के बाद उम्मीदवार युपीएसई सीएसई परीक्षा के लिए आवेदन कर सकते हैं, जिसमें प्रीलिम्स और मेन शामिल हैं। यदि कोई उम्मीदवार सीएसई मुख्य परीक्षा में सफलतापूर्वक उत्तीर्ण होता है, तो उसे दिल्ली में एक साक्षात्कार के लिए निमंत्रण मिलेगा। यूपीएससी की अंतिम मेरिट सूची मुख्य परीक्षा और साक्षात्कार स्कोर दोनों पर आधारित होगी। कक्षा 10 वीं के बाद आकांक्षी I आईएएस अधिकारियों के लिए सर्वश्रेष्ठ वैकल्पिक विषय का चयन करना IAS अधिकारियों को मुख्य परीक्षा के लिए एक वैकल्पिक विषय चुनने की आवश्यकता है। चुनने के लिए विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला है। एक विषय चुनें जिसके बारे में आप भावुक हैं और अच्छी तरह से समझते हैं। गहरी समझ हासिल करने के लिए कक्षा 12 वीं के अध्ययन के साथ वैकल्पिक विषय की तैयारी शुरू करना उचित है।

10 वीं कक्षा के बाद भविष्य के आईएएस उम्मीदवारों के लिए कैरियर मार्ग आम तौर पर भारतीय शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में उम्मीदवारों को 10 वीं कक्षा के बाद इन तीन मुख्य धाराओं में विकल्प बनाना होता है:

विज्ञान स्ट्रीम यह मुख्य रूप से भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान और गणित जैसे विज्ञान और गणित विषयों पर केंद्रित है।

यह इन विषयों के लिए एक योग्यता और इंजीनियरिंग, चिकित्सा, अनुसंधान और प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में रुचि रखने वाले छात्रों के लिए अच्छी तरह से अनुकूल है।

वाणिज्य स्ट्रीम यह स्ट्रीम व्यवसाय और वाणिज्य से संबंधित विषयों पर जोर देती है, जैसे कि अकाउंटेंसी, अर्थशास्त्र, बिजनेस स्टडीज और गणित।

यह एक विश्लेषणात्मक दिमाग वाले छात्रों के लिए अनुकूल है और व्यवसाय, वित्त, प्रबंधन और लेखांकन में करियर बनाने में रुचि रखता है।

कला / मानविकी स्ट्रीम यह धारा इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान, मनोविज्ञान, साहित्य और भाषाओं जैसे विषयों में तल्लीन हो जाती है।

यह मजबूत संचार और रचनात्मक क्षमताओं वाले छात्रों के लिए अनुकूल है, जो कानून, साहित्य, डिजाइन, सामाजिक विज्ञान, शिक्षा और मीडिया जैसे क्षेत्रों में रुचि रखते हैं।

यूपीएससी परीक्षा की तैयारी के लिए सही शैक्षिक मार्ग चुनना आपके हितों, शक्तियों और कैरियर के लक्ष्यों पर निर्भर करता है। आम तौर पर, राजनीति विज्ञान, इतिहास, लोक प्रशासन, समाजशास्त्र, भूगोल, नृविज्ञान, अर्थशास्त्र, हिंदी साहित्य (हिंदी राज्य में) जैसे विषय यूपीएससी उम्मीदवारों के बीच लोकप्रिय विकल्प हैं।

हालांकि, परीक्षा के लिए कोई विशिष्ट डिग्री की आवश्यकता नहीं है। यह विभिन्न विषयों की एक मजबूत समझ विकसित करने और महत्वपूर्ण सोच, विश्लेषणात्मक और लेखन कौशल का सम्मान करने के बारे में अधिक है। इसलिए, एक ऐसा क्षेत्र चुनें जिसका आप आनंद लेते हैं और जहां आप अकादमिक रूप से उत्कृष्टता प्राप्त कर सकते हैं, जबकि यूपीएससी परीक्षा की प्रभावी ढंग से तैयारी करने के लिए समय समर्पित कर सकते हैं।

कक्षा 10 वीं के बाद से प्रारंभिक आईएएस तैयारी युक्तियाँ आईएएस परीक्षा को क्रैक करने के लिए, प्रारंभिक तैयारी महत्वपूर्ण है। इतिहास, भूगोल, राजनीति, अर्थशास्त्र और करंट अफेयर्स जैसे विषयों में एक मजबूत नींव विकसित करके कक्षा 10 वीं से अपनी तैयारी शुरू करें। अपने ज्ञान और समझ को बढ़ाने के लिए प्रासंगिक विषयों पर नियमित रूप से समाचार पत्र, पत्रिकाएं और गुणवत्ता की किताबें पढ़ें।

कक्षा 10 वीं के बाद कोचिंग संस्थानों में शामिल होने के लाभ जबकि स्व-अध्ययन महत्वपूर्ण है, प्रतिष्ठित कोचिंग संस्थानों में शामिल होना परीक्षा की तैयारी के लिए मूल्यवान मार्गदर्शन और संसाधन प्रदान कर सकता है। कई कोचिंग संस्थान आईएएस परीक्षा की तैयारी करने वाले उम्मीदवारों के लिए विशेष कार्यक्रम प्रदान करते हैं। वे संरचित अध्ययन सामग्री, मॉक टेस्ट और विशेषज्ञ मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, जो तैयारी को बहुत बढ़ा सकते हैं।

कक्षा 10 वीं के बाद आईएएस अधिकारी बनने के लिए करंट अफेयर्स का महत्व आईएएस परीक्षा में, विशेष रूप से प्रारंभिक और मुख्य परीक्षाओं में करंट अफेयर्स महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समाचार, सरकारी नीतियों और सामाजिक-आर्थिक विकास के साथ अपडेट रहने की आदत बनाएं। नियमित रूप से समाचार पत्र पढ़ें, समाचार चैनल देखें, और वर्तमान मामलों के संक्षिप्त रहने के लिए विश्वसनीय ऑनलाइन स्रोतों का पालन करें।

कक्षा 10 वीं के बाद आईएएस की तैयारी के लिए लेखन और संचार कौशल बढ़ाएं मुख्य परीक्षा और व्यक्तित्व परीक्षण में सफलता के लिए प्रभावी संचार कौशल आवश्यक हैं। नियमित रूप से निबंध लेखन, उत्तर लेखन और सटीक लेखन का अभ्यास करके मजबूत लेखन कौशल विकसित करने पर ध्यान दें। इसके अतिरिक्त, संचार कौशल में सुधार के लिए समूह चर्चा, बहस और सार्वजनिक बोलने की घटनाओं में भाग लें।

कक्षा 10 वीं के बाद आईएएस परीक्षा की तैयारी के लिए समय प्रबंधन युक्तियाँ आईएएस परीक्षा के दौरान समय प्रबंधन महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से मुख्य परीक्षा में, जिसमें कई दिनों में आयोजित नौ पेपर होते हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए समय प्रबंधन तकनीकों का अभ्यास करें कि आप आवंटित समय के भीतर परीक्षा पूरी कर सकते हैं। समय प्रबंधन कौशल में सुधार के लिए परीक्षा जैसी शर्तों के तहत पिछले वर्षों के प्रश्न पत्र और मॉक टेस्ट को हल करें।

कक्षा 10 वीं के बाद आईएएस अधिकारी के पथ पर दृढ़ता और प्रेरणा आईएएस अधिकारी बनने की यात्रा लंबी और चुनौतीपूर्ण होती है, जिसमें अपार समर्पण और दृढ़ता की आवश्यकता होती है। आपको रास्ते में असफलताओं और चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन प्रेरित रहना और अंतिम लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करना महत्वपूर्ण है। एक सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखें, साथियों और आकाओं से समर्थन की तलाश करें, और लगातार बने रहने के लिए विफलताओं से सीखें।

निष्कर्ष कक्षा 10 वीं के बाद एक आईएएस अधिकारी बनना वास्तव में एक कठिन काम है, लेकिन सही दृष्टिकोण, समर्पण और कड़ी मेहनत के साथ, यह प्राप्त करने योग्य है। परीक्षा पैटर्न को समझने, जल्दी तैयारी शुरू करने, करंट अफेयर्स के साथ अपडेट रहने और आवश्यक कौशल का सम्मान करने से, उम्मीदवार अपनी सफलता की संभावना बढ़ा सकते हैं। याद रखें, आईएएस अधिकारी बनने की यात्रा न केवल एक प्रतिष्ठित पद प्राप्त करने के बारे में है, बल्कि निष्ठा और समर्पण के साथ राष्ट्र की सेवा करने के बारे में भी है। इसलिए, आकांक्षी रहें, सीखते रहें, और अपने सपनों को कभी न छोड़ें!

वैश्विक मंच पर भारत की आलोचनाः क्या यह उचित नेतृत्व का संकेत है?

क्या राहुल गांधी देश की छवि को दांव पर लगा रहे हैं?

जब कोई विदेशी मंच से भारत के लोकतंत्र की आत्मा पर सवाल उठाए, तो वह सिर्फ शब्दों का खेल नहीं, बल्कि देश की अस्मिता पर सीधा हमला है। अमेरिका के बोस्टन में राहुल गांधी ने जो बयान दिया, वह कोई मामूली राजनीतिक टिप्पणी नहीं थी—यह भारत की चुनावी प्रणाली, उसकी विश्वसनीयता और दशकों की मेहनत से बने गौरव को चुनौती देने की कोशिश थी। उन्होंने दावा किया कि भारत का चुनाव आयोग सरकार के इशारे पर काम कर रहा है और महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में वयस्क मतदाताओं से ज्यादा वोट पड़े। ये आरोप न केवल हैरान करने वाले हैं, बल्कि उस भरोसे को चकनाचूर करने वाले हैं, जो भारत को दुनिया का सबसे जीवंत लोकतंत्र बनाता है। सवाल यह उठता है—क्या यह भारत की वैश्विक छवि को धूमिल करने की सुनियोजित साजिश है, या फिर अंतरराष्ट्रीय मंच पर सियासी सहानुभूति बटोरने का हथकंडा? यह सवाल हर भारतीय के दिल में कुलबुला रहा है।

राहुल गांधी का यह बयान एक साथ कई निशाने साधने की कोशिश करता दिखता है। उन्होंने महाराष्ट्र चुनाव का हवाला देते हुए कहा कि शाम 5:30 से 7:30 बजे के बीच 65 लाख वोट पड़े, जो तकनीकी और सांख्यिकीय रूप से असंभव है। उनका यह भी दावा था कि एक मतदाता को वोट डालने में औसतन तीन मिनट लगते हैं, तो फिर इतने कम समय में इतनी भारी संख्या में मतदान कैसे हो सकता है? यह सवाल सुनने में जितना वजनदार लगता है, उतना ही कमजोर भी, क्योंकि इसके पीछे कोई ठोस सबूत नजर नहीं आता। एक जिम्मेदार नेता से अपेक्षा होती है कि वह अपने दावों को तथ्यों और प्रमाणों के साथ मजबूती से पेश करे, न कि केवल सनसनी फैलाकर लोगों के मन में संदेह का बीज बोए। लेकिन राहुल गांधी ने ऐसा क्यों चुना? क्या यह उनकी अपनी सियासी जमीन को मजबूत करने की कोशिश थी, या फिर वैश्विक मंच पर भारत की छवि को कमजोर करने का सुनियोजित कदम?

लोकतंत्र में आलोचना और असहमति का स्थान सर्वोपरि है। यह असहमति ही सत्ता को जवाबदेह बनाती है और व्यवस्था को सुधारने की राह दिखाती है। लेकिन जब यही असहमति राष्ट्रीय संस्थाओं की गरिमा को ठेस पहुंचाने लगे, तो वह रचनात्मक आलोचना नहीं, बल्कि एक खतरनाक सियासी दांव बन जाती है। राहुल गांधी का यह बयान ऐसे समय में आया है, जब भारत का चुनावी तंत्र दुनिया भर में एक मिसाल के रूप में स्थापित है। ऐसे में विदेशी मंच पर इस तरह की बातें करना न केवल गैर-जिम्मेदाराना है, बल्कि यह भारत की संप्रभुता और स्वाभिमान पर सवाल उठाता है। अगर उन्हें वाकई चुनावी प्रक्रिया में खामियां दिखती हैं, तो भारत में संसद, अदालतें और तमाम लोकतांत्रिक मंच मौजूद हैं। फिर विदेश में जाकर इस तरह की बातें कहने की क्या जरूरत थी? यह कदम न केवल उनकी अपनी विश्वसनीयता को कमजोर करता है, बल्कि यह भी बताता है कि वह घरेलू मंचों पर अपनी बात को प्रभावी ढंग से रखने में असफल रहे हैं।

चुनाव आयोग भारत के लोकतंत्र का एक अटल स्तंभ है। इसकी निष्पक्षता और पारदर्शिता पर सवाल उठाना कोई छोटी बात नहीं। लेकिन इसके लिए पुख्ता सबूतों की जरूरत होती है, न कि केवल अनुमानों और हवा-हवाई दावों की। राहुल गांधी ने जो आंकड़े पेश किए—शाम 5:30 से 7:30 बजे के बीच 65 लाख वोट—वह तकनीकी रूप से संदिग्ध लगते हैं। लेकिन क्या इन आंकड़ों की सत्यता की जांच की गई? क्या उनके पास इस बात का कोई ठोस प्रमाण है? अगर नहीं, तो यह एक गंभीर भूल है। बिना सबूत के इस तरह के दावे करना न केवल गैर-जिम्मेदाराना है, बल्कि यह जनता को भ्रमित करने और अविश्वास को हवा देने का काम करता है। एक नेता के रूप में उनकी जिम्मेदारी है कि वह अपनी बात को तथ्यों के साथ पेश करें, न कि केवल संदेह का माहौल बनाएं।

यह बयान एक गहरे सवाल को जन्म देता है—क्या हमारी राजनीति अब तथ्यों और सत्य से ज्यादा प्रचार और धारणाओं पर टिकने लगी है? यह बयान एक सुनियोजित नैरेटिव का हिस्सा प्रतीत होता है, जिसका उद्देश्य आगामी चुनावों से पहले एक खास तरह का भावनात्मक माहौल तैयार करना है। लेकिन ऐसी राजनीति का सबसे बड़ा नुकसान यह है कि यह जनता के बीच अविश्वास को जन्म देती है। जब लोग अपनी संस्थाओं पर भरोसा खो देते हैं, तो वे या तो व्यवस्था से कट जाते हैं, या फिर गलत सूचनाओं का शिकार हो जाते हैं। दोनों ही स्थितियां लोकतंत्र के लिए घातक हैं। भारत का लोकतंत्र दुनिया के सबसे मजबूत लोकतंत्रों में शुमार है, और इसकी ताकत इसकी निष्पक्ष और पारदर्शी संस्थाओं में निहित है। लेकिन जब इस तरह के बयान दिए जाते हैं, तो यह न केवल इन संस्थाओं की साख को चोट पहुंचाता है, बल्कि उस विश्वास को भी तोड़ता है, जो इस लोकतंत्र की रीढ़ है।

इस पूरे प्रकरण में एक और आयाम विचारणीय है। राहुल गांधी पहले भी कई बार विदेशी मंचों से भारत की नीतियों और व्यवस्थाओं की आलोचना कर चुके हैं। लेकिन क्या यह उचित तरीका है? भारत एक जीवंत लोकतंत्र है, जहां हर नागरिक को अपनी बात रखने का पूरा हक है। हमारे पास संसद से लेकर सड़क तक अनगिनत मंच हैं, जहां इस तरह की चिंताओं को उठाया जा सकता है। फिर विदेश में जाकर इस तरह की बातें करने की क्या मजबूरी थी? यह कदम न केवल भारत की वैश्विक छवि को प्रभावित करता है, बल्कि यह सवाल भी खड़ा करता है कि क्या यह अंतरराष्ट्रीय सहानुभूति हासिल करने की कोशिश है। अगर ऐसा है, तो यह एक खतरनाक प्रवृत्ति है, जो देश के हितों को गहरी चोट पहुंचा सकती है। एक नेता के रूप में उनकी जिम्मेदारी है कि वह देश की एकता और गौरव को बढ़ावा दें, न कि उसे कमजोर करने वाले बयान दें।

इस बयान ने राजनीति में नैतिकता के सवाल को भी तेजी से उजागर किया है। एक जिम्मेदार सांसद और पूर्व पार्टी अध्यक्ष से यह अपेक्षा की जाती है कि वह देश की संस्थाओं को मजबूत करने की दिशा में काम करें, न कि उनकी विश्वसनीयता को वैश्विक मंच पर कमजोर करें। अगर वह वाकई चुनावी प्रक्रिया में सुधार चाहते हैं, तो उन्हें भारत में रहकर संसद, अदालतों और जनता के बीच इस मुद्दे को उठाना चाहिए। विदेश में जाकर इस तरह की बातें करना न केवल गैर-जिम्मेदाराना है, बल्कि यह देश की संप्रभुता पर भी सवाल खड़ा करता है। यह बयान उनकी अपनी विश्वसनीयता को कमजोर करता है और यह भी दर्शाता है कि वह घरेलू मंचों पर अपनी बात को प्रभावी ढंग से रखने में असमर्थ रहे हैं।

आज भारत न केवल आर्थिक और सामरिक दृष्टि से एक उभरती शक्ति है, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों के मामले में भी दुनिया के लिए प्रेरणा है। ऐसे में इस तरह के बयान भारत की छवि को नुकसान पहुंचाने के साथ-साथ उन ताकतों को बल देते हैं, जो भारत की प्रगति को बाधित करना चाहती हैं। राहुल गांधी के इस कदम ने उनकी पार्टी की विश्वसनीयता को भी ठेस पहुंचाई है और यह सवाल उठाया है कि क्या वह वाकई भारत के हितों को सर्वोपरि मानते हैं।

राहुल गांधी का यह बयान न केवल गैर-जिम्मेदाराना है, बल्कि यह देश की लोकतांत्रिक प्रक्रिया को कमजोर करने वाला भी है। एक नेता के रूप में उनकी जिम्मेदारी है कि वह रचनात्मक आलोचना करें और ऐसी बातों से बचें, जो देश की साख को नुकसान पहुंचाएं। भारत का लोकतंत्र दुनिया के सबसे मजबूत लोकतंत्रों में से एक है, और इसे और मजबूत करने की जिम्मेदारी हर नेता और नागरिक की है। हमें उम्मीद करनी चाहिए कि भविष्य में हमारे नेता ऐसी गलतियों से सबक लेंगे और देश की एकता, अखंडता और वैश्विक गौरव को बढ़ाने की दिशा में काम करेंगे। यह समय है कि हम अपनी लोकतांत्रिक संस्थाओं पर अटूट भरोसा बनाए रखें और ऐसी सियासत से दूर रहें, जो केवल संदेह और अविश्वास को जन्म दे।

-प्रो. आरके जैन "अरिजीत', बड़वानी (मप्र)

चिनगारी का खेल बुरा होता है ! (पहलगाम हमले पर विशेष आलेख)

हाल ही में पहलगाम आतंकी हमले में विदेशी नागरिकों समेत 26 की मौत हो गई, और मरने वालों में अधिकांश पुरुष हैं। वास्तव में यह बहुत ही दुखद व अति निंदनीय घटना है ।यह हमला ऐसे समय हुआ है, जब करीब सवा दो महीने बाद अमरनाथ यात्रा होनी है ।कहना ग़लत नहीं होगा कि इससे आतंक का घिनौना चेहरा दुनिया के सामने आया है। यह 2019 के पुलवामा हमले के बाद घाटी में सबसे घातक व बड़ा हमला है ।हमले के बाद क्षेत्र में ऑपरेशन तेजी से चलाया जा रहा है और पर्यटकों को कश्मीर से जल्द से जल्द निकालने की कोशिश की जा रही है। सहायता के लिए इमरजेंसी नंबर भी जारी किए गए हैं ।कितनी बड़ी बात है कि आतंकियों ने टूरिस्ट्स को निशाना बनाया और गोलीबारी की। आतंकी घटना के बाद गृहमंत्री अमित शाह श्रीनगर पहुंचे, और सऊदी दौरा बीच में ही छोड़कर स्वयं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी दिल्ली पहुंच चुके हैं और दिल्ली पहुंचते ही उन्होंने एयरपोर्ट पर ही पहलगाम टेरर अटैक पर बैठक की है। बताया जा रहा है कि कैबिनेट कमेटी ऑन सिक्योरिटी की बैठक भी बुलाई गई है। इससे पहले गृहमंत्री अमित शाह ने आईबी चीफ, जम्मू-कश्मीर के डीजी और सेना व सीआरपीएफ के आला अधिकारियों के साथ एक हाई-लेवल मीटिंग भी की और पीएम मोदी इस मीटिंग में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से उपलब्ध रहे। जम्मू-कश्मीर के सीएम उमर अब्दुल्ला भी इस घटना को लेकर काफी गंभीर हैं ।बताया जा रहा है कि कुल चार आतंकियों ने इस आतंकी वारदात को अंजाम दिया, जिसमें से तीन पाकिस्तानी और एक लोकल कश्मीरी हैं। मीडिया में आई रिपोर्ट्स के मुताबिक जब दोपहर को यह वारदात हुई तब सैलानी वहां घुड़सवारी कर रहे थे ।तभी आतंकी वहां पहुंचे और उन्होंने पंजाबी में टूरिस्ट से उनका मजहब पूछा और पहचान स्थापित होने के बाद लोगों को मौत के घाट उतारा गया। दरअसल,आतंकी हमले के बाद सामने आए वीडियो में इस बात की पुष्टि हुई है कि हथियारबंद हमलावरों ने नाम पूछकर गोली मारी ।जानकारी के अनुसार इस दौरान आतंकियों द्वारा करीब 50 राउड फायरिंग की गई। गौरतलब है कि आतंकी सेना और पुलिस जैसी वर्दी में थे और सभी के पास एके-47 और दूसरे हथियार थे ।बहरहाल, यहां यह कहना ग़लत नहीं होगा कि इसे कश्मीर घाटी में 'जिहादी आतंक' का अत्यंत घिनौना बर्बर चेहरा ही कहा जा सकता है। वास्तव में,आतंकियों ने पहलगाम में निर्दोष-निहत्थे पर्यटकों की जिस तरह पहचान पता करके(नाम व मजहब पूछकर) गोलियां बरसाईं, उससे तो यही पता चलता है कि वे केवल कश्मीर घाटी में खौफ ही नहीं पैदा करना चाहते थे, बल्कि बड़ी संख्या में लोगों का खून बहाकर दुनिया का ध्यान भी खींचना चाहते थे। आतंकी धर्म पूछकर गोली मार रहे हैं और यह बात कही जाती है कि आतंकवाद और आतंकियों का कोई धर्म नहीं होता ? आतंकियों ने ऐसे समय में पर्यटकों को निशाना बनाया, जब अमेरिकी उपराष्ट्रपति भारत में हैं और भारतीय प्रधानमंत्री सऊदी अरब में। वास्तव में यह हमला मानव हीनता की पराकाष्ठा ही कहा जा सकता है, क्यों कि आतंकियों ने उन पर्यटकों को निशाना बनाया, जो कश्मीरियों को पर्यटन के रूप में किसी न किसी रूप में सहारा देने कश्मीर गये थे। निश्चित ही इस आतंकी हमले का असर वहां के पर्यटन व दैनिक जीवन पर पड़ेगा, क्यों कि हमले के बाद घाटी में डर व खौफ का माहौल पैदा हो गया है। कहना ग़लत नहीं होगा कि हमले के बाद पूरे देश में आक्रोश की बड़ी लहर है। वास्तव में, अनुच्छेद 370 हटाए जाने के बाद पहली बार कश्मीर में इतना बड़ा आतंकी हमला हुआ है। कहना ग़लत नहीं होगा कि आतंकवाद और आतंकियों को करारा जवाब दिया जाना आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य हो गया है। जिन आतंकियों ने हमले को अंजाम दिया है, उनमें से तीन पाकिस्तानी बताये जा रहे हैं, ऐसे में आज जरूरत इस बात की है कि भारत पाकिस्तान को इस हमले का मुंहतोड़ व करारा जवाब दे। आज पाकिस्तान आर्थिक रूप से बदहाली झेल रहा है और उस पर बहुत पहले से आतंकवाद और आतंकियों का ठप्पा लग चुका है। पाकिस्तान की यह आदत रही है कि वह भारत के खिलाफ छद्म युद्ध का खेल खेलता रहता है। एक तरफ़ तो वह भारत से शांति, सौहार्द और भाईचारे की बात करता नज़र आता है तो दूसरी तरफ आतंकवाद का घिनौना खेल खेलता रहता है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि कुछ समय पहले ही पाकिस्तान

की राजधानी इस्लामाबाद में ओवरसीज पाकिस्तानियों के पहले सालाना सम्मेलन में पाकिस्तान के आर्मी चीफ जनरल असीम मुनीर ने भारत, हिंदू धर्म, दो-राष्ट्र सिद्धांत, कश्मीर और गाजा जैसे मामलों पर बयान दिए थे और मुनीर के ये बयान न केवल विवादित थे, बल्कि विभाजनकारी और नफरत फैलाने वाले भी थे। गौरतलब है कि पाकिस्तान के सेना प्रमुख जनरल असीम मुनीर ने कुछ समय पहले ही कश्मीर मुद्दे को हवा देते हुए इसे अपने देश की 'गले की नस' बताया था और यह बात कही थी कि इस्लामाबाद 'इसे नहीं भूलेगा।' उल्लेखनीय है कि पिछले साल यानी कि फरवरी 2024 में भी जनरल मुनीर ने सेना की एक बैठक को संबोधित करते हुए यह कहा था कि 'भारत द्वारा अंतरराष्ट्रीय कानूनों का खुलेआम उल्लंघन किया जा रहा है और उसका असली चेहरा दुनिया के सामने आना चाहिए।'पाठकों को यहां यह भी जानकारी देना चाहूंगा कि मई 2024 में भी भारत को अपना 'कट्टर-प्रतिद्वंद्वी' बताते हुए, पाकिस्तान के सेना प्रमुख जनरल सैयद असीम मुनीर ने कश्मीर को इस्लामाबाद के 'नैतिक, राजनीतिक और कूटनीतिक समर्थन' जारी रखने का वादा किया था। कहना ग़लत नहीं होगा कि कट्टरपंथियों को जनरल मुनीर की बातों से कहीं न कहीं ताकत मिली होगी ।सच तो यह है कि जनरल मुनीर के बयानों से आतंकियों का दुस्साहस निश्चित रूप से बढ़ा है, और इसका जीता-जागता प्रमाण कश्मीर में हुआ आतंकी हमला है। यहां यह भी कहना चाहूंगा कि बांग्लादेश में तख्तापलट और वहां भारत विरोधी भावनाओं के उभार के बाद पाकिस्तान के मंसूबे और अधिक बढ़ गये हैं कि वह भारत में आतंकवाद फैलाए और आतंकियों और आतंकवाद के ज़रिए अपना उल्लू सीधा करे। पाकिस्तान को यह उम्मीद है कि अब उसे बांग्लादेश का साथ भी मिल जाएगा। गौरतलब है कि अमेरिका, पाकिस्तान से नाराज़ है और इसका पता हमें इस बात से चलता है कि कुछ समय पहले ही अमेरिका ने आतंकी खतरों के कारण अपने नागरिकों को पाकिस्तान की यात्रा न करने के लिए एक एडवायजरी जारी की थी। दरअसल, यह चेतावनी/एडवायजरी अमेरिकी विदेश विभाग द्वारा जारी की गई थी, जिसमें बलूचिस्तान और खैबर पख्तूनख्वा जैसे क्षेत्रों में सुरक्षा चिंताओं को उजागर किया गया था, जहां चरमपंथी समूह सक्रिय हैं और लगातार हमलों को अंज़ाम दे रहे हैं ।अब चीन के साथ संबंध मजबूत करके पाकिस्तान अमरीका की कमी को पूरी करने में लगा हुआ है। दरअसल, पाकिस्तान के मंसूबे ठीक नहीं है और वह कश्मीर घाटी में आतंकवाद फैलाकर कश्मीर हथियाने का सपना देखता रहा है, लेकिन पाकिस्तान का यह सपना कभी भी पूरा नहीं होने वाला है ।पाकिस्तान वर्ष 1971 का बदला भी भारत से लेना चाहता है और वह भारत में रह-रहकर अशांति फैलाने की नए सिरे से कोशिश करता रहता है। अब पहलगाम हमले के बाद यह पूरी तरह से साफ हो गया है कि पाकिस्तान, भारत में आतंकी हमलों के साथ धार्मिक अलगाव की भावना भी पैदा करना चाहता है। भारत को यह चाहिए कि वह पाकिस्तान की नापाक व कुटिल हरकतों को समझे और अमन-चैन को प्राथमिकता दें। देश के आम नागरिकों को भी ऐसे समय में शांति,संयम से काम लेना होगा और इस बात के प्रयास करने होंगे कि समाज और देश का माहौल न बिगड़ने पाए। निश्चित रूप से सरकार आतंकवाद और आतंकियों के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई करेगी, इसमें कोई दोराय नहीं है क्यों कि आतंकवाद और आतंकियों के खिलाफ हमारे देश की नीति 'जीरो टोलरेंस'(शून्य सहनशीलता) की रही है। आज हमारे देश की विभिन्न सुरक्षा एजेंसियां चौकस व सजग हैं और आतंकियों/आतंकवाद को मुंहतोड़ जवाब देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हाल फिलहाल, हमारे देश के गृहमंत्री अमित शाह पूरी स्थिति पर निगाह रखे हुए है और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी फुल एक्शन पर हैं ।प्रधानमंत्री मोदी ने यह संकल्प जताया है कि हमले के दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा। वास्तव में, इस संवेदनशील मौके पर सभी राजनीतिक दलों को एकजुटता दिखाने की जरूरत है। हमें यह चाहिए कि हम पाकिस्तान के मंसूबों को विफल करने और उसे कड़ा जवाब देने की रणनीति की दिशा में एकजुटता से काम करें। वास्तव में हमें आतंकवाद और आतंकियों से लड़ने का संकल्प लेने के साथ ही उसे पूरा करने की ठोस रणनीतियां बनानी होंगी और इस पर पूरी तन्मयता और ईमानदारी से काम करना होगा। आज पाकिस्तान सुलगते बलूचिस्तान से पूरी दुनिया का ध्यान हटाना चाहता है और उसे यह बिलकुल भी रास नहीं आ रहा है कि कश्मीर में 370 हटाये जाने के बाद स्थितियां तेजी से सामान्य होती चलीं जा रही हैं। कहना ग़लत नहीं कि पाकिस्तान भरोसे के लायक देश नहीं है और उसका मकसद भारत में आतंकवाद फैलाना है। अंत में अटल बिहारी वाजपेई जी के शब्दों में यही कहना चाहूंगा कि -'एक नहीं दो नहीं करो बीसों समझौते, पर स्वतन्त्र भारत का मस्तक नहीं झुकेगा ।अगणित बलिदानों से अर्जित यह स्वतन्त्रता, अंश्रु स्वेद शोणित से सिंचित यह स्वतन्त्रता ।त्याग तेज तपबल से रक्षित यह स्वतन्त्रता, दुःखी मनुजता के हित अर्पित यह स्वतन्त्रता। इसे मिटाने की साजिश करने वालों से कह दो, चिनगारी का खेल बुरा होता है औरों के घर आग लगाने का जो सपना, वो अपने ही घर में सदा खरा होता है।'

-सुनील कुमार महला

पहलगाम की गोलियाँः धर्म पर नहीं, मानवता पर चली थींः प्रियंका सौरभ

कश्मीर के पहलगाम में हाल ही में हुआ आतंकी हमला सिर्फ एक गोलीबारी नहीं थी—यह एक ऐसा खौफनाक संदेश था जिसमें गोलियों ने धर्म की पहचान पूछकर चलना शुरू किया। प्रत्यक्षदर्शियों की मानें तो आतंकियों ने पहले पर्यटकों से उनका धर्म पूछा, फिर उन्हें जबरन कलमा पढ़ने के लिए कहा, और इंकार करने पर गोली मार दी। यह न केवल एक घृणित धार्मिक कट्टरता का प्रदर्शन था, बल्कि एक सुनियोजित राजनीतिक षड्यंत्र भी था, जिसका उद्देश्य कश्मीर में पुनः स्थापित होती शांति और विश्वास को तार-तार करना था।

धर्म के नाम पर किया गया अमानवीय अपराध

जब किसी को गोली मारने से पहले उसका धर्म पूछा जाता है, तो यह न केवल उस व्यक्ति की जान का अपमान है, बल्कि उस पूरे समाज का अपमान है जो 'सर्व धर्म समभाव' की बात करता है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि आतंकियों ने पहले 'हिंदू' पहचान की पुष्टि की, फिर 'गोली' को धर्म की रेखा पर खड़ा कर दिया। इससे बड़ा पाखंड क्या होगा कि किसी भी धर्म की आड़ में आतंक फैलाया जाए, जबकि हर धर्म की जड़ में 'मानवता' बसती है।

इस हमले ने यह साबित कर दिया कि आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता, लेकिन आतंकवादी अक्सर धर्म को ढाल बनाकर उसे इस्तेमाल करते हैं। जबरन किसी से कलमा पढ़वाना और न मानने पर जान ले लेना, यह इस्लाम के मूल सिद्धांतों के भी खिलाफ है। पैग़ंबर मोहम्मद ने तो मक्का में भी अपने दुश्मनों को माफ किया था—यहाँ तो बेगुनाह पर्यटकों पर गोली चलाई गई।

साजिश सिर्फ जान लेने की नहीं, छवि बिगाड़ने की भी

यह हमला न केवल मानवता पर था, बल्कि भारत की अंतरराष्ट्रीय छवि पर भी हमला था। पहलगाम, जो 'मिनी स्विटजरलैंड' के नाम से जाना जाता है, वहाँ इस तरह की घटना का होना वैश्विक स्तर पर कश्मीर को फिर एक बार 'संवेदनशील और अस्थिर' क्षेत्र के रूप में प्रस्तुत करता है। पिछले कुछ वर्षों में कश्मीर में पर्यटन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई थी—लोगों ने धीरे-धीरे डर के माहौल से बाहर निकलना शुरू किया था। लेकिन यह हमला उस विश्वास को तोड़ने की कोशिश है।

पर्यटकों की वापसी का मतलब था स्थानीय लोगों की आजीविका का पुनर्जन्म। कश्मीरी दुकानदार, टैक्सी चालक, होटल कर्मचारी—सभी इस बढ़ते पर्यटन पर निर्भर थे। लेकिन अब, एक बार फिर सैकड़ों पर्यटक कश्मीर छोड़ने लगे हैं। कई बुकिंग्स रद्द हो रही हैं, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान होगा।

राजनीति की परछाईः इस हमले के असली मकसद

'द रेजिस्टेंस फ्रंट' (TRF), जो कि लश्कर-ए-तैयबा से जुड़ा संगठन माना जाता है, ने इस हमले की जिम्मेदारी ली है। सूत्रों का कहना है कि यह हमला पाकिस्तान से संचालित हो सकता है। यदि यह सच है, तो यह स्पष्ट संकेत है कि यह केवल एक धार्मिक हिंसा नहीं थी, बल्कि भारत की आंतरिक शांति को अस्थिर करने की अंतरराष्ट्रीय साजिश भी थी।

यह हमला ऐसे समय में हुआ है जब भारत चुनावों की तैयारी में जुटा है। क्या यह हमला लोकतंत्र में भय और अविश्वास फैलाने की रणनीति नहीं हो सकती? क्या यह आतंकी ताकतों का एक संकेत नहीं है कि वे अब भी धार्मिक भावनाओं को भड़काकर भारत को अस्थिर कर सकते हैं?

पीड़िता की आँखों से देखें—राजनीति नहीं, पीड़ा दिखती है

इस हमले में मारे गए पर्यटक की पत्नी के बयान ने पूरे देश को हिला दिया—"मैंने उसे मरते देखा, लेकिन कुछ नहीं कर सकी।" यह वाक्य किसी भी भाषण या नारे से कहीं ज्यादा असरदार है। एक महिला की चीख, एक बच्चे का रोना, एक पर्यटक का डर—ये किसी चुनावी भाषण या न्यूज़ चैनल की बहस से नहीं मिटते।

यह हमला न केवल गोली से मारे गए व्यक्ति का अंत था, बल्कि एक पूरे परिवार की स्थिरता का अंत था। यह उस महिला की नींद का अंत था, जो अब शायद जिंदगीभर अपने पति की लाश की छवि नहीं भूल पाएगी। और यह उस भरोसे का अंत था, जो उसने भारत की सुरक्षा पर किया था।

क्या भारत सरकार ने पर्याप्त कदम उठाए?

सरकार की ओर से इस हमले की निंदा की गई और सुरक्षा बलों को सतर्क किया गया। परंतु सवाल यह उठता है कि क्या निंदा पर्याप्त है? क्या हम उस स्तर पर इंटेलिजेंस नेटवर्क खड़ा कर पाए हैं कि ऐसे हमलों को रोका जा सके? कश्मीर में बार-बार 'अस्थिरता के बाद स्थिरता और फिर आतंक' का यह चक्र कब टूटेगा?

कश्मीरी मुसलमानों की भी चुप्पी नहीं, चिंता दिखी

यह ध्यान देने योग्य है कि कश्मीरी समाज के कई मुसलमानों ने इस घटना की खुलकर निंदा की। कुछ स्थानीय व्यापारियों ने पर्यटकों को सुरक्षित बाहर निकलने में मदद की। इससे स्पष्ट होता है कि आतंकवाद को समर्थन स्थानीय नहीं, बाहरी है। कट्टरता कश्मीर की मिट्टी से नहीं, बाहर से आयात होती है।

अब आगे क्या?

हम सबको सोचना होगा कि ऐसे मामलों में केवल गुस्सा जाहिर करना काफी नहीं है। हमें नीतियों में बदलाव चाहिए। कश्मीर में स्थायी शांति तभी संभव है जबः

धार्मिक शिक्षा में सहिष्णुता को प्राथमिकता दी जाए।

स्थानीय युवाओं को रोजगार और भविष्य का भरोसा मिले।

कट्टरता के प्रचार पर तकनीकी सेंसरशिप लगे।

आतंकी नेटवर्क को सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक रूप से अलग-थलग किया जाए।

निष्कर्षः यह लड़ाई 'धर्म' की नहीं, 'मानवता' की है

इस लेख के माध्यम से मैं एक सवाल छोड़ना चाहती हूँ—क्या हम इतने असहाय हो गए हैं कि किसी का धर्म पूछकर उसे मारने वालों को केवल 'आतंकी' कहकर छोड़ दें? यह समय है जब हमें मिलकर कहना होगा कि जो धर्म के नाम पर जान ले, वह किसी धर्म का अनुयायी हो ही नहीं सकता।

यह हमला केवल एक पर्यटक की हत्या नहीं है, यह हमारी आत्मा पर हमला है। हमें इस चुप्पी को तोड़ना होगा। हमें न केवल आतंकी संगठन TRF से सवाल करना चाहिए, बल्कि उन शक्तियों से भी जो इन्हें पनाह देती हैं, और उन राजनीतिक दलों से भी जो इस दुख का इस्तेमाल अपने एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए करते हैं।

पहलगाम की घाटियों में बहती नदियों का पानी अब पहले जैसा नहीं रहा—वहाँ अब एक सवाल तैरता हैः "कब तक धर्म की पहचान मौत का पैमाना बनी रहेगी?"

अभी तो मेंहदी सूखी भी न थीः पहलगाँव की घाटी में इंसानियत की हत्या

जम्मू-कश्मीर के पहलगाँव में हुए आतंकी हमले में जहाँ एक नवविवाहित हिंदू पर्यटक को उसका नाम पूछकर सिर में गोली मार दी गई। ये हमला सिर्फ एक हत्या नहीं, बल्कि धार्मिक पहचान के आधार पर की गई घृणा और आतंक का प्रतीक है। मृतक की पत्नी की स्तब्ध तस्वीर को राष्ट्र की आत्मा का जख्मी चेहरा माना गया है। यह भारत की एकता, नागरिक सुरक्षा, और धार्मिक सहिष्णुता पर चोट बताकर चेतावनी देता है कि यदि अब भी ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो अगला शिकार कोई और होगा। यह केवल शोक प्रकट करने के बजाय जवाबदेही, निर्णायक कार्रवाई और सामाजिक चेतना की मांग करता है, ताकि आतंक के आगे इंसानियत बार-बार न मरे।

– डॉ सत्यवान सौरभ

22 अप्रैल 2025, सुबह के कुछ शांत लम्हे। जम्मू-कश्मीर के पहलगाँव में बर्फीली वादियाँ पर्यटकों का स्वागत कर रही थीं। नवविवाहित जोड़े, बच्चे, बुजुर्ग – सबको उम्मीद थी कि कश्मीर की हवा में सुकून मिलेगा, तनाव से कुछ राहत मिलेगी। लेकिन तभी आतंक की आहट हुई। बंदूकें गरजीं। और उस वादी में जहाँ बर्फ गिरती है, अब खून बहा।

राजस्थान से आया एक नवविवाहित दंपत्ति भी उन्हीं पर्यटकों में था। दोनों ने अभी पांच दिन पहले ही शादी की थी। वो अपने हनीमून के लिए कश्मीर आए थे। लेकिन शायद किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। आतंकियों ने गाड़ी रोकी, नाम पूछा, पहचान की और फिर गोली मार दी। युवक हिन्दू था। बस यही उसके मरने की वजह बन गई। सिर में गोली लगी। मौके पर ही दम तोड़ दिया। उसकी पत्नी, जिसके हाथों की मेंहदी अभी भी गीली थी, स्तब्ध खड़ी थी। शोक से ज़्यादा वो एक अनकहे डर में जमी हुई थी – जैसे समय वहीं थम गया हो।

ये हत्या नहीं, धार्मिक घृणा है

यह सिर्फ एक आतंकी हमला नहीं था। यह योजनाबद्ध हत्या थी – एक सोच के तहत, एक धर्म के आधार पर। आज आतंकवाद महज़ क्षेत्रीय या वैचारिक लड़ाई नहीं रह गया है। यह अब धार्मिक पहचान को मिटाने का एक उपकरण बन चुका है। यह हत्या बताती है कि कुछ तत्व अब यह तय कर चुके हैं कि कौन जिएगा, कौन मरेगा – और यह फ़ैसला नाम पूछकर किया जाएगा।

क्या यही इंसानियत है? क्या यही 'कश्मीरियत' है, जिसके नाम पर हम वर्षों से शांति की दुहाई दे रहे हैं?

जब शहीद की पत्नी की चीखें खामोश हो गईं

सोशल मीडिया पर उस पत्नी की तस्वीर वायरल हुई, जो अपने पति के शव को निहार रही थी। न चीख, न रोना, न प्रतिरोध। बस एक स्थिर मौन – जो पूरी व्यवस्था पर सबसे कठोर आरोप बन गया। उस मौन में एक सवाल छुपा हैः "हमने क्या ग़लत किया?" क्या एक जोड़े का कश्मीर आना, उसकी सुंदरता देखना, उसकी वादियों से प्यार करना अब गुनाह बन चुका है?

हमें समझना होगा कि इस तस्वीर में केवल एक महिला नहीं थी, बल्कि उस पूरे राष्ट्र की आत्मा थी – ज़ख़्मी, असहाय और शर्मसार।

सुरक्षा की विफलता और प्रशासन की संवेदनहीनता

हर हमले के बाद सरकार की ओर से एक तैयार स्क्रिप्ट आती है – निंदा, मुआवज़ा, जाँच। लेकिन जवाबदेही कहीं नहीं होती। क्या यह सवाल नहीं पूछा जाना चाहिए कि घाटी में आतंकियों को खुलेआम चलने-फिरने की छूट कैसे मिलती है? वे नाम पूछकर कैसे किसी को गोली मार सकते हैं और फिर बच निकलते हैं?

क्या पर्यटन सीजन में अतिरिक्त सुरक्षा बलों की तैनाती नहीं होनी चाहिए? क्या जम्मू-कश्मीर प्रशासन को यह नहीं पता कि ऐसे हमले पर्यटन, अर्थव्यवस्था और भारत की एकता – तीनों पर हमला करते हैं?

मानवाधिकार या आतंक के अधिकार?

जब भी भारत आतंक के ख़िलाफ़ सख़्ती दिखाता है, तो मानवाधिकार की दुकानें खुल जाती हैं। दिल्ली, लंदन, न्यूयॉर्क – हर जगह के तथाकथित बुद्धिजीवी अचानक 'संवेदना' से भर जाते हैं। लेकिन जब किसी हिंदू नागरिक को सिर्फ उसके नाम के कारण सिर में गोली मारी जाती है, तब यही आवाज़ें खामोश हो जाती हैं।

क्यों? क्या एक विशेष समुदाय के पीड़ितों के लिए ही संवेदना है? क्या हिन्दू होना अब मानवाधिकार के चश्मे से अदृश्य हो जाना है?

यह हमला पूरे भारत पर है

पहलगाँव हमला केवल एक व्यक्ति की हत्या नहीं है – यह भारत की आत्मा पर हमला है। यह संदेश देने की कोशिश है कि "यहाँ तुम्हारी जगह नहीं है"। यह भारत की एकता, समरसता और धर्मनिरपेक्षता को चुनौती है। और यदि हमने इस चुनौती को केवल ट्वीट और मोमबत्तियों से उत्तर दिया, तो अगला निशाना कोई और शहर, कोई और नाम, कोई और नवविवाहित होगा।

पाकिस्तान का रोल और वैश्विक चुप्पी

हमेशा की तरह, इस हमले के पीछे जिस आतंकी संगठन का नाम आया – 'द रेजिस्टेंस फ्रंट' – वह लश्कर-ए-तैयबा का ही नया अवतार है। और इसकी जड़ें पाकिस्तान में हैं। लेकिन अंतरराष्ट्रीय मंच पर पाकिस्तान अभी भी 'आतंकवाद का शिकार देश' बना बैठा है।

संयुक्त राष्ट्र, अमेरिका, यूरोप – सभी को यह साफ-साफ कहना चाहिए कि धार्मिक आधार पर नागरिकों की हत्या केवल एक देश का नहीं, बल्कि वैश्विक मानवता का संकट है।

अब निर्णय का समय है

भारत को अब दो टूक निर्णय लेने की ज़रूरत है। कश्मीर में आतंक का सामना केवल पुलिस नहीं कर सकती, इसके लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति चाहिए। अलगाववाद की नर्म परतों को उखाड़ फेंकना होगा। धार्मिक पहचान के नाम पर फैलाई जा रही नफ़रत को सामाजिक स्तर पर भी चुनौती देनी होगी।

इसके साथ-साथ, हमें यह तय करना होगा कि कश्मीर में पर्यटन केवल "स्वर्ग" दिखाने का सौदा नहीं, बल्कि राष्ट्रीय एकता का सेतु है – और इस सेतु की रक्षा हम सबकी जिम्मेदारी है।

अंतिम पंक्तियाँः एक और शहीद, एक और सुहाग उजड़ा

हर आतंकी हमले के बाद हम कुछ दिन दुखी होते हैं, फिर भूल जाते हैं। लेकिन उस स्त्री के लिए, जिसने अपने पति को खोया, जो लहूलुहान सपनों के साथ अकेली रह गई, यह घटना एक जीवन भर का घाव है।

उसके लिए यह कोई न्यूज़ नहीं, यह उसका टूटता संसार है।

हमारी संवेदना केवल सोशल मीडिया पोस्ट तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। हमें पूछना चाहिए – "कब तक?"

कब तक हम अपने नागरिकों की रक्षा नहीं कर पाएँगे?

कब तक हम आतंकी हमलों पर केवल मोमबत्तियाँ जलाते रहेंगे?

शब्द नहीं, कार्रवाई चाहिए। शोक नहीं, उत्तरदायित्व चाहिए। क्योंकि इस बार सवाल सिर्फ नाम का नहीं है, यह इंसानियत का प्रश्न है।

जम्मू कश्मीर पहलगाम टूरिस्टों पर आतंकी हमला- पूरी दुनियाँ ने भारत के समर्थन में आतंकवाद के खिलाफ़ उठाई आवाज़

पहलगाम टूरिस्टों पर आतंकी हमला-27 मृत,अनेकों घायल- अमेरिका रूस सहित पूरा विश्व संकट की घड़ी में भारत के साथ खड़ा हुआ। भारत में नक्सलवाद मावोवाद समाप्ति की डेड लाइन 31 मार्च 2026 की तरह, जम्मू कश्मीर में भी आतंकवाद समाप्ति की डेडलाइन पर सटीक निर्णय लेना समय की मांग-एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर हर देश के लिए आतंकवाद एक नासूर बन गया है, जिसका दंश अनेक बार अनेकों देश झेल चुके हैं और झेल भी रहे हैं, जिसका अधिक भुक्तभोगी भारत भी रहा है। आज हम फिर आतंकवाद पर चर्चा इसलिए कर रहे हैं, क्योंकि दिनांक 22 अप्रैल 2024 को शाम अनंतनाग जिले के पहलगाम की घाटियों में, जहां एक घासभरा मैदान है, वहां कुछ दूर पैदल जाकर ही पहुंचा जा सकता है,जहां रेस्टोरेंट वगैरा भी है अचानक कुछ आतंकवादियों का एक गुट आया और टूरिस्ट से उनका नाम जाति पूछ पूछ कर अंधाधुंध गोलियां दागी जिसमें निर्दोष लोग करीब 27 से अधिक टूरिस्टों की मौत होने व अनेकों घायल होने की जानकारी 22 अप्रैल शाम से डिजिटल तथा इलेक्ट्रॉनिक व सोशल मीडिया पर लगातार चल रही है जो 23 अप्रैल 2025 तक अर्ली मॉर्निंग तक मैं खुद करीब 18 घंटों तक इलेक्ट्रॉनिक व डिजिटल संसाधनों से जुड़ा रहा। सभी चैनलों पर डिबेट, एक्सपर्ट की राय, व एनालिसिस को सुनकर, मैंने उसका विश्लेषण कर यह आर्टिकल तैयार किया हूं। बता दें पूरे विश्व में इस घटना को सीरियस एंगल से लिया गया है तथा तीव्र निषेध किया हैं।जहां एकओर हमारे गृहमंत्री तुरंत घटनास्थलपर रवाना होकर कश्मीर में एक हाई लेवल मीटिंग रात करीब 12-1 बजे तक लिए, जिसमें हमारे पीएम भी ऑनलाइन उपस्थित थे और फिर गृह मंत्री पहलगाम के लिए रवाना हुए, तो वही हमारे माननीय पीएम जो सऊदी अरब की यात्रा पर थे, यह घटना सुनकर आमंत्रित रात्रि भोज में भी ना जाकर, सऊदी अरब दौरा बीच में छोड़कर व रात्रि कश्मीर में हुई,हाई प्रोफाइल मीटिंग में भी ऑनलाइन जुड़े रहे तथा अर्ली मॉर्निंग वापस आकर बुधवार दिनांक 23 अप्रैल 2025 को सुबह केबिनेट कमिटी ऑन सिक्योरिटी (सीसीएस) में भी मौजूद रहे व अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से भी वार्तालाप करने की जानकारी आई है। बता दें इस घटना की निंदा अमेरिका रूस इसराइल सऊदी अरब यूक्रेन ब्राज़ील सहित अनेक देशों ने ट्वीट करके की है, तथा मुश्किल की घड़ी में भारत के साथ होने की बात कही है।भारतीय पीएम दौरे पर सऊदी अरब हुए हैं। भारत में चार दिवसीय दौरे पर मौजूद अमेरिका के उपराष्ट्रपति ने भी घटना की कड़े शब्दों में निंदा की है। मेरा मानना है कि अब समय आ गया है कि नक्सलवाद मावोवाद को जिस तरह समाप्त करने की डेडलाइन 31 मार्च 2026 तक की गई है, अब इस तरह कश्मीर घाटी में आतंकवाद समाप्त करने की भी डेड लाइन घोषित करने की जरूरत है ताकि एक रणनीति के अनुसार आतंकवादियों को आत्मसमर्पण के लिए प्रेरित करना या फिर उन्हें कड़ी सजाका सामना करना पड़े।यानें आरोप लगने पर या पकड़े जाने पर उनकी सुनवाई, अन्य राज्यों में न्यायालयों मैं की जानी चाहिए तथा इसके पीछे स्लीपिंग आतंकी चेहरे या गुट उजगार करना आर्थिक, कमर तोड़ना,पोषण कराने वाले पड़ोसीमुल्क पर आर्थिक सामाजिक, नैतिक, अंतरराष्ट्रीय व जरूरत पड़ने पर हथियारों करना समय की मांग है, ताकि यह संदेश जाए कि अब भारत पहले वाली स्थिति में नहीं रहा, जब कि अब ईट का जवाब पत्थर से व तिल का जवाब पहाड़ से देने की स्थिति रखता है। कुल मिलाकर मुझे ऐसा महसूस होता है कि आतंकवाद की उल्टी गिनती शुरू होने की संभावना बढ़ गई है, क्योंकि अब अति सख्त रणनीति बनाई जा सकती है। उधर आतंकवादी नरसंहार के विरोध में कश्मीर के बार काउंसिल, डोडा काउंसिल डोडा शिक्षा विभाग, अनेक लोकल संगठनों व संस्थाओं ने 23 अप्रैल 2025 को बंद का आह्वान किया है,क्योंकि नागरिक बहुत रोष में है, जहां जगह-जगह कैंडल मार्च में शांति मोर्चा निकाला जा रहा है, अभी अमरनाथ यात्रा जो कुछ दिनों में शुरू होने वाली है उसमें दहशत का माहौल बनाया जा रहा है, इसलिए अब इस घटना का जवाब देना जरूरी हो गया है।चूँकि पहलगाम टूरिस्टों पर आतंकी हमला, 27 से अधिक मृत,अनेकों घायल, अमेरिका रूस सहित पूरा विश्व संकट की घड़ी में, भारत के साथ खड़ा है पूरी दुनिया ने भारत के समर्थन में आतंकवाद के खिलाफ आवाज उठाई है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध

जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, भारत में नक्सलवाद माओवाद समाप्ति की डेड लाइन 31 मार्च 2026 की तरह जम्मू कश्मीर में भी आतंकवाद समाप्त होने की डेडलाइन पर सटीक निर्णय लेना समय की गंभीर मांग है।

साथियों बात अगर हम जम्मू कश्मीर के अनंतनाग जिले के पहलगाम में 22 अप्रैल 2025 को शाम टूरिस्टों पर अंधाधुंद गोली चलाकर आतंकवादी हमले की करें तो, कश्मीर के पहलगाम में मंगलवार दोपहर करीब तीन बजे आतंकियों द्वारा की गई गोलीबारी में करीब 27 लोगों की मौत हो गयी। आतंकी हमले में मारे गये लोगों में ज्यादातर पर्यटक थे। यह हमला 2019 के पुलवामा हमले के बाद घाटी में सबसे घातक हमला बताया जा रहा है। लोगों ने बताया कि आतंकी पुलिस की वर्दी में वहां पहुंचे थे। यह आतंकी हमला पहलगाम से करीब छह किलोमीटर दूर बैसरन में घने देवदार के जंगलों और पहाड़ों से घिरा एक विशाल घास का मैदान में अंजाम दिया गया। यह मैदान पर्यटकों और ट्रेकर्स का पसंदीदा स्थान है। पाकिस्तान में स्थित प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन लश्कर-ए-तैयबा के छद्म संगठन 'द रेजिस्टेंस फ्रंट' (टीआरएफ) ने हमले की जिम्मेदारी ली है। अधिकारियों ने कहा कि यह संभव है कि आतंकवादी जम्मू के किश्तवाड़ से दक्षिण कश्मीर के कोकेरनाग के रास्ते बैसरन तक पहुंचा हो। जहां आतंकियों ने अंधाधुंध गोलीबारी की।इस घटना ने कश्मीर घाटी में पर्यटन और सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं, खासकर तब जब अमरनाथ यात्रा शुरू होने वाली है।कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के दौरान नागपुर का एक परिवार मौके पर मौजूद थागोलियों की आवाज सुनकर वे घबराकर पहाड़ से कूद गए, इस दौरान पैर फिसलने से सिमरन रुपचंदानी घायल हो गईं और उनके पैर में फ्रैक्चर हो गया है। तिलक और गर्व रुपचंदानी भी उनके साथ थे। तीनों सुरक्षित हैं।

उनसे संपर्क कर लिया गया है और उन्हें सभी जरूरी सहायता मुहैया कराई जा रही है।

साथियों बात अगर हम पीएम द्वारा अपना सऊदी अरब का दौरा बीच में छोड़कर अर्ली मॉर्निंग आने की करें तो, जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में टूरिस्ट पर हुए आतंकी हमले में 27 से ज्यादा लोगों की मौत की खबर सामने आ रही है।पीएम इतनी बड़ी घटना के बाद अपना सउदी अरब का दौरा बीच में ही छोड़कर आधी रात को वापस भारत लौट आए हैं। कल सुबह वो कैबिनेट कमेटी ऑन सिक्योरिटी की बैठक की अध्यक्षता करेंगे? उधर वित्त मंत्रालय ने एक्स पर एक पोस्ट में घोषणा की कि केंद्रीय वित्त और कॉर्पोरेट मामलों की मंत्री संयुक्त राज्य अमेरिका और पेरू की अपनी आधिकारिक यात्रा को कम कर रही हैं। वह इस मुश्किल और दुखद समय में अपने लोगों के साथ रहने के लिए भारत के लिए जल्द से जल्द उड़ान ले रही हैं। अबतक औपचारिक तौर पर जम्मू-कश्मीर प्रशासन की तरफ से केवल 16 टूरिस्ट के मारे जाने की जानकारी दी गईहै10 घायलों की जानकारी भी जम्मू-कश्मीर प्रशासन की तरफ से दी गई है।मरने वालों में नेपाल और यूएई के नागरिक भी शामिल हैं।मरने वालों में एक आईबी ऑफिसर और एक नेवी के लेफ्टिनेंट विनय नरवाल भी शामिल हैं। गृहमंत्री श्रीनगर पहुंच चुके हैं,उन्होंने एलजी मनोज सिन्हा और सीएम उमर अब्दुल्ला के साथ बैठक की।बताया जा रहा है कि कुल चार आतंकियों ने इस वारदात को अंजाम दिया, जिसमें से तीन पाकिस्तानी और एक लोकल कश्मीरी है। कांग्रेस पार्टी ने सरकार से कहा कि वो उनके साथ हैं। आतंकियों पर कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाए।जब दोपहर को यह वारदात हुई तब सैलानी वहां घुड़सवारी कर रहे थे, तभी आतंकी वहां पहुंचे और उन्होंने पंजाबी में टूरिस्ट से उनका मजहब पूछा, पहचान स्थापित होने के बाद लोगों को मौत के घाट उतारा गया, इस दौरान करीब 50 राउड फायरिंग की गई। सूत्रों के मुताबिक मरने वालों में अधिकांश पुरुष हैं। खुफिया सुरक्षा एजेंसी के मुताबिक आतंकी टूरिस्ट के बड़े ग्रुप को टारगेट करने की फिराक में थे, वारदात को अंजाम देने के बाद सभी आतंकी फरार हो गए। सुनियोजित तरीके से टूरिस्ट को निशाना बनाया गया। गर्मियों के इस सीजन में घाटी में टूरिस्ट की संख्या काफी ज्यादा बढ़ जाती है. टूरिस्ट को निशाना बनाकर आतंकी जम्मू-कश्मीर में सैलानियों के प्रवेश को रोकना चाहते हैं। दरअसल जेडी वेंस ने पीएम के ट्वीट को रीट्वीट करते हुए बयान दिया है। इस हमले के बाद पीएम ने सोशल मीडिया साइट पर लिखा,मैं पहलगाम, जम्मू और कश्मीर में हुए आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा करता हूं। अपने प्रियजनों को खोने वालों के प्रति संवेदनाएं। मैं प्रार्थना करता हूं कि घायल लोग जल्द से जल्द ठीक हो जाएं। प्रभावित लोगों को हर संभव सहायता प्रदान की जा रही है। इस जघन्य कृत्य के पीछे जो लोग हैं, उन्हें न्याय के कटघरे में लाया जाएगा, उन्हें बख्शा नहीं जाएगा! उनका नापाक एजेंडा कभी सफल नहीं होगा।

आतंकवाद से लड़ने का हमारा संकल्प अडिग है और यह और भी मजबूत होगा।

साथियों बात अगर हम पहलगाम हमले पर अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रियाओं की करें तो, पहलगाम हमले पर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने लिखा कि कश्मीर से बहुत परेशान करने वाली खबर आई है। आतंकवाद के खिलाफ भारत के साथ अमेरिका मजबूती से खड़ा है। हम मारे गए लोगों की आत्मा की शांति और घायलों के स्वस्थ होने की प्रार्थना करते हैं। अमेरिकी उपराष्ट्रपति ने भी जताया शोकभारत दौरे पर आए अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने लिखा,उषा और मैं भारत के पहलगाम में हुए विनाशकारी आतंकवादी हमले के पीड़ितों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते हैं। पिछले कुछ दिनों में, हम इस देश और इसके लोगों की खूबसूरती से अभिभूत हो गए हैं। इस भयानक हमले में हमारे विचार और प्रार्थनाएं उनके साथ हैं।भारत में इजरायली राजदूत गिदोन सार ने एक्स पर लिखा,जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में पर्यटकों पर हुए जघन्य आतंकी हमले से हम बेहद दुखी हैं। हमारी संवेदनाएं पीड़ितों और उनके परिवारों के साथ हैं। आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में इजरायल भारत के साथ एकजुट है।उधर पुतिन ने क्या कहा रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने अपने शोक संदेश में कहा,पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले पर कृपया संवेदना स्वीकार करें, जिसके शिकार विभिन्न देशों के नागरिक हैं। इस क्रूर अपराध का कोई औचित्य नहीं है। हम उम्मीद करते हैं कि इसके आयोजकों और अपराधियों को उचित सजा मिलेगी। मैं आतंकवाद के सभी रूपों और अभिव्यक्तियों से लड़ने में भारतीय भागीदारों के साथ सहयोग बढ़ाने के लिए अपनी प्रतिबद्धता को दोहराना चाहूंगा।अमेरिकी उपराष्ट्रपति ने भी जताया शोकभारत दौरे पर आए अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने लिखा, उषा और मैं भारत के पहलगाम में हुए विनाशकारी आतंकवादी हमले के पीड़ितों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते हैं। पिछले कुछ दिनों में, हम इस देश और इसके लोगों की खूबसूरती से अभिभूत हो गए हैं। इस भयानक हमले में हमारे विचार और प्रार्थनाएं उनके साथ हैं।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन करें इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि जम्मू कश्मीर पहलगाम टूरिस्टों पर आतंकी हमला- पूरी दुनियाँ नेभारत के समर्थन में आतंकवाद के खिलाफ़ उठाई आवाज़।पहलगाम टूरिस्टों पर आतंकी हमला-27 मृत, अनेकों घायल-अमेरिका रूस सहित पूरा विश्व संकट की घड़ी में भारत के साथ खड़ा हुआ।भारत में नक्सलवाद मावोवाद समाप्ति की डेड लाइन 31 मार्च 2026 की तरह, जम्मू कश्मीर में भी आतंकवाद समाप्ति की डेडलाइन पर सटीक निर्णय लेना समय की मांग।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी, भविष्य की दिशा

परिवहन विशेष न्यूज

विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने हमारे जीवन को पूरी तरह से बदल दिया है। आज के समय में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति ने हमें नए अवसर प्रदान किए हैं और हमारे जीवन को आसान बनाया है।

विज्ञान की प्रगति।

विज्ञान की प्रगति ने हमें कई नए क्षेत्रों में अनुसंधान करने का अवसर प्रदान किया है। आज के समय में विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान के लिए कई नए अवसर हैं, जैसे कि।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस,आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने मशीनों को मानव जैसी बुद्धिमत्ता प्रदान करने का अवसर प्रदान किया है।

बायोटेक्नोलॉजी,बायोटेक्नोलॉजी ने हमें नए तरीके से बीमारियों का इलाज करने और नए उत्पादों को विकसित करने का अवसर प्रदान किया है।

स्पेस एक्सप्लोरेशन,स्पेस एक्सप्लोरेशन ने हमें अंतरिक्ष के बारे में नए तथ्यों को जानने का अवसर प्रदान किया है।

प्रौद्योगिकी की प्रगति,

प्रौद्योगिकी की प्रगति ने हमें कई नए उपकरणों और सेवाओं का उपयोग करने का अवसर प्रदान किया है। आज के समय में प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कई नए अवसर हैं, जैसे कि।

इंटरनेट ऑफ थिंग्स,इंटरनेट ऑफ थिंग्स ने हमें उपकरणों को आपस में जोड़ने और उन्हें नियंत्रित करने का अवसर प्रदान

किया है।

5जी नेटवर्क ने हमें उच्च गति वाले इंटरनेट का उपयोग करने का अवसर प्रदान किया है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति ने हमें नए अवसर प्रदान किए हैं और हमारे जीवन को आसान बनाया है। भविष्य में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति और भी नए अवसर प्रदान करेगी और हमारे जीवन को और भी आसान बनाएगी।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति के लिए हमें नए अनुसंधान और विकास की आवश्यकता होगी। हमें नए अवसरों का उपयोग करने और नए चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहना होगा।

राजस्थान जन मंच ने यूडीएच मंत्री झाबर सिंह खर्रा को सौंपा ज्ञापन

यूआईटी में गुम हुई फ़ाइल को लेकर की चर्चा

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

भीलवाड़ा आगमन पर यूडीएच मंत्री झाबर सिंह खर्रा को राजस्थान जन मंच अध्यक्ष कैलाश सोनी ने सर्किट हाउस में यूआईटी में गुम हुई फाइलों के बारे में अवगत कराया और भीलवाड़ा शहर में समुचित विकास कार्यों के बारे में ज्ञापन सौंपा ,इसे झाबर सिंह खर्रा ने गंभीरता से लिया। राजस्थान जन मंच अध्यक्ष कैलाश सोनी ने यूडीएच मंत्री झाबर सिंह खर्रा का मेवाड़ी पगड़ी दुपट्टा पहनाकर स्वागत अभिनंदन किया इस दौरान अभिषेक लोहिया, शिव प्रकाश चन्नाल, जगदीश सेन,रामचंद्र मूंदड़ा सहित कार्यकर्ता मौजूद थे

देश के दिल दिल्ली से राष्ट्र को संस्कृतमय करने की पहल

दिल्ली के 1008 स्थानों पर आज से संस्कृत संभाषण के शिविरों की शुरुआत

सुशील कुमार 'नवीन'

दिल्ली देश का दिल है। यहां पर हुई कोई भी हलचल या गतिविधि अंतरराष्ट्रीय पटल पर अपनी पहचान स्थापित करती है। देवभाषा संस्कृत के प्रचार और प्रसार में पिछले 44 वर्षों से समर्पित अंतरराष्ट्रीय संगठन संस्कृत भारती दिल्ली से ही 23 अप्रैल से संस्कृत संभाषण का विशेष महाभियान शुरू करने जा रहा है। इसके तहत दिल्ली के विभिन्न 1008 स्थानों पर संस्कृत संभाषण शिविरों के माध्यम से दस हजार से भी अधिक परिवारों को अपने साथ प्रत्यक्ष रूप से जोड़ा जाएगा। दस दिनों तक चलने वाले इन संभाषण शिविरों के माध्यम से प्रशिक्षित कार्यकर्ता शिक्षक का दायित्व निर्वहन कर 50 हजार से अधिक लोगों को संस्कृत संभाषण में दक्ष करने का कार्य करेंगे। इसका समापन 4 मई को एक बड़े आयोजन के साथ होगा।

संस्कृत भारती के अनुसार किसी भी राष्ट्र की अखण्डता के लिए सांस्कृतिक भाषा एक आवश्यक वैचारिक आधार है। संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं की जननी होने के कारण सभी देशवासियों को एकत्र करने की भूमिका बहुत प्रभावी ढंग से निभा सकती है। दर्शन, साहित्य, विज्ञान,ज्योतिष, वास्तुकला, आयुर्वेद, योग, गणित, संगीत आदि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के ज्ञानकोष की कुञ्जी संस्कृत है। संस्कृतभाषा को जन-जन की व्यवहार भाषा बनाने के लिए 1981 में संस्कृतभारती संगठन की शुरुआत हुई जो आज एक वटवृक्ष का रूप धारण कर चुका है। संस्कृत के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित शिक्षकों, संयोजकों, विद्वान् मार्गदर्शकों के साथ-साथ समाज में अनेक प्रकार से सहयोगीजनों का राष्ट्रव्यापी मंच देकर संस्कृतभारती ने कार्य को और गति प्रदान की है।

संस्कृत भारती विविध कार्यक्रमों के माध्यम से संस्कृत को समाज तक ले जाती है। संस्कृत सम्भाषण शिविरों के माध्यम से संस्कृत भारती द्वारा दस दिन तक प्रतिदिन दो घंटे संस्कृत बोलने का प्रशिक्षण अत्यन्त रोचक विधि से अन्य भाषा के प्रयोग के बिना शब्द, वाक्य, कथा, अभिनय प्रदर्शन, गीत आदि के माध्यम से परस्पर वार्तालाप से दिया जाता है। देशभर में अब तक इस तरह के एक लाख से अधिक शिविरों का आयोजन किया जा चुका है। सम्भाषण शिवरों के माध्यम से संस्कृतभारती ने अभी तक विश्वभर में दो

करोड़ लोगों को संस्कृत सम्भाषण में सक्षम करने का कीर्तिमान स्थापित किया है। डेढ़ लाख से अधिक कार्यकर्ताओं को संस्कृत में शिक्षण के लिए प्रशिक्षित किया जा चुका है। विश्व के 26 देशों में 45 सौ से अधिक केंद्र संचालित किए जा रहे हैं।

संस्कृत भारत की सबसे प्राचीन भाषा है। इसे देश के जन जन तक पहुंचाने के लिए लगातार कार्यक्रम आयोजित किए जाते रहते हैं। संस्कृत भारती दिल्ली द्वारा यहां से एक बड़े आयोजन की कार्य योजना बनाई गई। इसके तहत दिल्ली में एक साथ 1008 संस्कृत संभाषण शिविरों के संचालन पर सहमति बनी। इसके लिए 1000 से अधिक कार्यकर्ताओं को पहले विभिन्न स्थानों पर शिविर लगाकर प्रशिक्षित किया गया। इसी के तहत बुधवार 23 अप्रैल से शिविरों का महाभियान शुरू हो रहा है।

संस्कृत के प्रचार प्रसार के लिए संस्कृत भारती का यह कोई एक मात्र कार्यक्रम नहीं है। साप्ताहिक मेलन सम्भाषण शिविर का ही अनुवर्ती कार्यक्रम है। इसके तहत सप्ताह में एक दिन दो घण्टे के लिए एकत्र आकर संस्कृतवातावरण में रहकर पुनः संस्कृत सम्भाषण का अभ्यास करते हैं। नए लोगों का भी संस्कृत से परिचय कराने में भी यह लाभदायक साबित होता है। इसी क्रम में दस दिवसीय आवासीय प्रबोधन वर्ग का आयोजन किया जाता है। इसके तहत अखण्ड संस्कृत वातावरण में रहते हुए संस्कृत में ही चिन्तन मनन के लिए प्रेरित कर सहज भाव से संस्कृत को व्यवहार में लाने का सामर्थ्य पैदा किया जाता है। इसी कड़ी में प्रशिक्षणवर्ग संस्कृत सम्भाषण शिविर शिक्षकों के निर्माण के लिए विशेष वर्ग है। इसमें भाग लेने वाले प्रतिभागी समाज में जाकर सम्भाषण शिविर चलाते हैं। संस्कृत को संस्कृत माध्यम से पढ़ाने का प्रशिक्षण भी इसी वर्ग में प्राप्त होता है।

साहित्य प्रकाशन के माध्यम से संस्कृत भारती द्वारा सरल और रुचिकर पद्धति से व्याकरण, उपन्यास, कथा, बाल गीत, नाटक भगवद् गीता, सुभाषित, यात्रावृत्तान्त, वैचारिक लेख, भाषाभ्यास इत्यादि विषयों पर लगभग 300 पुस्तकों का प्रकाशन किया जा चुका है। मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष एकादशी तिथि को गीता जयन्ती के उपलक्ष्य में सम्पूर्ण प्रदेश में अखण्ड गीता पाठ, गीता शोभायात्रा एवं गीता प्रतियोगिताओं का अनेक स्थानों पर आयोजन किया जाता है। प्रतिवर्ष रक्षा बन्धन के।

पहलगाम में आतंकियों द्वारा 26 हत्याओं से मोदी का आज कानपुर दौरा भी रद्द

- सऊदी अरब से लौट के बाद पीएम को आज कानपुर में करना था मेट्रो स्टेशन, पावर प्लांट का उद्घाटन और करोड़ों की परियोजनाओं का भी लोकार्पण

- पहलगाम आतंकी हमले में कानपुर के शुभम द्विवेदी ने भी गवाई है जान ,दो माह पहले ही हुई थी शिवम की शादी ,परिवार में मातम

सुनील बाजपेई

कानपुर। जम्मू कश्मीर में पहलगाम के आतंकी हमले में 26 लोगों की जान गवाने की घटना के बाद सऊदी अरब दौरा रद्द करके स्वदेश लौटे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज 24 अप्रैल को अपना कानपुर का दौरा भी रद्द कर दिया है। उन्हें आज ही कानपुर में मेट्रो के नए अंडरग्राउंड स्टेशनों नेवली और पनकी पावर प्लांट के उद्घाटन के साथ ही अरबों की योजनाओं का भी लोकार्पण करना था। साथ ही प्रधानमंत्री को यहां के सीएसए के विशाल मैदान में जनसभा को भी संबोधित करना था ,जिसके लिए सारी आवश्यक तैयारी को भी पुलिस प्रशासन द्वारा अंतिम रूप दिया जा चुका था। इसके लिए आसपास के कई जिलों का फोर्स भी कानपुर पहुंच चुका था, जिसकी अब वापसी भी सुनिश्चित की जा रही है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का कानपुर दौरा रदद होने की पुष्टि आतंकी हमले में मारे गए शुभम द्विवेदी के परिजनों को सांत्वना देने पहुंचे उत्तर प्रदेश विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने भी की है।

याद रहे की पहलगाम की आतंकी हमले में यहां महाराजपुर थाना क्षेत्र में रहने वाले शुभम द्विवेदी भी हत्या का शिकार हुए हैं ,जिससे उनके परिजनों का रो रो का बुरा हाल है। वह पहलगाम से शिवम के शव को अपने घर कानपुर लाने के लिए भी जम्मू कश्मीर गये हैं। वहीं सैकड़ों लोग परिवार को सांत्वना देने के लिए भी उनके घर पहुंच रहे हैं। सीमेंट का कारोबार करने वाले व्यवसाय शुभम द्विवेदी अपनी पत्नी के साथ छुट्टियां मनाने पहलगाम गए थे ,जहां हुए आतंकी हमले में मारे गए 26 लोगों में कानपुर के सीमेंट व्यवसाई महाराजपुर थाना क्षेत्र के हाथी गांव निवासी 31 साल के शिवम द्विवेदी का भी नाम शामिल है। उनकी शादी 2 मां पहले ही हुई थी और वह अपनी पत्नी और परिवार के 11 सदस्यों के साथ कश्मीर ट्रिप पर गए थे। आतंकवादियों ने पत्नी के सामने ही उनकी गोली मार कर हत्या कर दी।

इस घटना से कानपुर में भी जबरदस्त रोष है। और लोग इस घटना को अंजाम देने वाले आतंकियों का समूल नाश करने की मांग भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से की है।

झारखंड में खुशी की ट्वीट ! सर्वोच्च न्यायालय के जज,वकील दिवंगत के लिए मौन

पाकिस्तान जिंदाबाद , लस्करे तोयबा जिन्दाबाद...,रबोकारो का मो0मुस्ताक गया जेल

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची , कोयलांचल बोकारो जिले के बालीडीह थाना क्षेत्र के मिल्लतनगर मखदुमपुर से "पाकिस्तान जिंदाबाद, लस्करे तोरवा जीन्दा बाद, उसने किसी राजनीतिक पार्टी, संगठन समेट मिडिया को भी ट्वीट से टार्गेट किया है। पहलगांव कश्मीर की कुत्सित मानसिकता की घटना के बाद जैसे ही इस देश विरोधी ट्वीट तुल पकड़ा उधर ट्वीट करने वाले युवक को बोकारो पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया गया है. बालीडीह पुलिस इंस्पेक्टर नवीन कुमार सिंह ने बुधवार की सुबह उक्त युवक मो नौशाद को उसके घर से अरेस्ट किया. आज इस बाबत देश का सर्वोच्च न्यायालय भी मौन रख श्रद्धांजलि दी है ।

जम्मू कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हुई आतंकी हमले के बाद मो नौशाद खुशियां मना रहा था. मो

नौशाद ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म 'एक्स' पर ट्वीट कर लिखा था, " Thank you Pakistan , thak you . Loskore toyba , May Allah bless you always , Amin ,Amin .We will be more happy if के आगे किसी राजनीतिक दल , संगठन समेत मिडिया पर को भी टारगेट शब्द लिख कर अपनी खुशी का इजहार किया था बोकारो का मो० मुस्ताक।

मो मुस्ताक ने उर्दू और अंग्रेजी भाषाओं में ट्वीट किया था. इस ट्वीट के बाद बालीडीह थाना की पुलिस ने त्वरित एक्शन लेते हुए इंस्पेक्टर नवीन कुमार सिंह ने युवक को गिरफ्तार किया , हालांकि कौन सी धारा का प्रयोग किया गया पता नहीं चला है वैसे सर्वोच्च न्यायालय ने भी आज उक्त आतंकी घटना पर मृतकों को श्रद्धांजलि देते हुए कर दो मिनट का सभी मौन रखें।

जिसमें इस हृदय विदारक घटना पर दिल्ली में सुप्रीम कोर्ट ने जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले में मारे गए निर्दोष लोगों के लिए मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित कर राष्ट्र विरोधी आतंकी गतिविधियों का एक तरह विरोध भी जताया है . इसके साथ ही आतंकी हमले की कड़ी निंदा की।

आतंकी घटना में मारे गए निर्दोष लोगों की आत्मा की शांति के लिए सुप्रीम कोर्ट परिसर में करीब 2 बजे सभी अदालतों में मौन रखा गया. इस दौरान दोपहर 1.59 बजे सायरन बजने के बाद से लेकर दोपहर 2 बजे तक दिवंगत आत्माओं के लिए जजों, वकीलों और वादियों ने मौन रखकर श्रद्धांजलि दी. एक प्रेस रिलीज भी सर्वोच्च न्यायालय के हवाले से पत्रकारों को दी गयी है ।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095 . newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी . एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023